

## मुशायरो-शायरी-कविता-भाग-२

वक्त अच्छा ज़रूर आता है; मगर वक्त पर ही आता है!

कागज अपनी किस्मत से उड़ता है; लेकिन पतंग अपनी काबिलियत से!  
इसलिए किस्मत साथ दे या न दे; काबिलियत जरूर साथ देती है!

दो अक्षर का होता है लक; ढाई अक्षर का होता है भाग्य;  
तीन अक्षर का होता है नसीब; साढ़े तीन अक्षर की होती है किस्मत;

पर ये चारों के चारों चार अक्षर, मेहनत से छोटे होते हैं!.....  
जिंदगी में दो लोगों का खयाल रखना बहुत जरूरी है!

पिता: जिसने तुम्हारी जीत के लिए सब कुछ हारा हो!  
माँ: जिसको तुमने हर दुःख में पुकारा हो!

काम करो ऐसा कि पहचान बन जाये; हर कदम चलो ऐसे कि निशान बन जायें;  
यह जिंदगी तो सब काट लेते हैं; जिंदगी ऐसे जियो कि मिसाल बन जाये!

भगवान की भक्ति करने से शायद हमें माँ न मिले;  
लेकिन माँ की भक्ति करने से भगवान् अवश्य मिलेंगे!

अहंकार में तीन गए; धन, वैभव और वंश!  
ना मानो तो देख लो; रावन, कौरव और कंस!

बेटी एक बहुमूल्य अमानत है!  
बेटी बनकर आठ हूँ मा-बाप के ज़ुवनमें, बसेरा होगा कल मेरा किसी और के आंगणमें,  
क्यूँ ये रीत भगवानने बनाए होगी ? कहते है आज नहीं तो कल तू पराए होगी,

ढेके जनम पाल पोषकर जिसने हडे ढडा क्रिया, और वकत आया तो उन्ही हाथोने हडे विडा क्रिया, तूटके बिभर जाति है हमारी जिंदगी वही, पर डीर ली उस बंधनमें प्यार मिले जरूरी तो नहीं !  
क्यू रीश्ता हमारा छतना अजुब होता है, क्या बस यही बेटीयो का नसीब होता है ?

एक एक कर इतनी कमियां निकाली लोगों ने 'मुझमें';  
कि अब बस 'खुबियां' ही रह गई हैं मुझमें।

## क्या खुब लिखा है किसी ने ...

"बकश देता है 'खुदा' उनको, जिनकी 'किस्मत' खराब होती है!  
वो हरगिज नहीं 'बकशे' जाते है, जिनकी 'नियत' खराब होती है!"  
न मेरा 'एक' होगा, न तेरा 'लाख' होगा, न 'तारिफ' तेरी होगी, न 'मजाक' मेरा होगा!  
गुरु न कर "शाह-ए-शरीर" का, मेरा भी 'खाक' होगा, तेरा भी 'खाक' होगा!  
जिन्दगी भर 'ब्रांडेड-ब्रांडेड' करने वालों, याद रखना 'कफ़न' का कोई ब्रांड नहीं होता!  
कोई रो कर 'दिल बहलाता' है, और कोई हँस कर 'दर्द' छुपाता है!  
क्या करामात है 'कुदरत' की,  
ज़िंदा इंसान' पानी में डूब जाता है और 'मुर्दा' तैर के दिखाता है!  
'मौत' को देखा तो नहीं, पर शायद 'वो' बहुत "खूबसूरत" होगी,  
"कम्बख़त" जो भी 'उस' से मिलता है, "जीना छोड़ देता है"!  
'गज़ब' की 'एकता' देखी "लोगों की ज़माने में, 'ज़िन्दों' को "गिराने में" और 'मुर्दों' को "उठाने में"!  
'ज़िन्दगी' में ना ज़ाने कौनसी बात "आख़री" होगी, ना ज़ाने कौनसी रात "आख़री" होगी!  
मिलते, जुलते, बातें करते रहो यार एक दूसरे से ना जाने कौनसी "मुलाक़ात" "आख़री होगी" ... !

खवाहिश नहीं मुझे मशहूर होने की।  
आप मुझे पहचानते हो बस इतना ही काफी है।  
अच्छे ने अच्छा और बुरे ने बुरा जाना मुझे।  
क्यों की जीसकी जीतनी जरूरत थी उसने उतना ही पहचाना मुझे।  
ज़िन्दगी का फ़लसफ़ा भी कितना अजीब है,  
शामें कटती नहीं, और साल गुज़रते चले जा रहे हैं.....!!

एक अजीब सी दौड़ है ये ज़िन्दगी,  
जीत जाओ तो कई अपने पीछे छूट जाते हैं,  
और हार जाओ तो अपने ही पीछे छोड़ जाते हैं।

यहाँ सब कुछ बिकता है , दोस्तों रहना जरा संभाल के !!!  
बेचने वाले हवा भी बेच देते हैं , गुब्बारों में डाल के !!!  
सच बिकता है , झूट बिकता है, बिकती है हर कहानी !!!  
तीन लोक में फेला है , फिर भी बिकता है बोतल में पानी!!!  
कभी फूलों की तरह मत जीना,  
जिस दिन खिलोगे... टूट कर बिखर जाओगे ।  
जीना है तो पत्थर की तरह जियो;  
जिस दिन तराशे गए... "खुदा" बन जाओगे ॥ --हरिवंशराय

कोई रो कर दिल बहलाता है, और कोई हँस कर दर्द छुपाता है.  
क्या करामात है कुदरत की, ज़िंदा इंसान पानी में डूब जाता है  
और मुर्दा तैर के दिखाता है...

मौत को देखा तो नहीं, पर शायद वो बहुत खूबसूरत होगी,  
कम्बखत जो भी उस से मिलता है, जीना छोड़ देता है..

ग़ज़ब की एकता देखी, लोगों की ज़माने में,  
ज़िन्दों को गिराने में और मुर्दों को उठाने में!

घड़ी की फितरत भी अजीब है, हमेशा टिक -टिक कहती है.....!!  
मगर ना खुद टिकती है और ना ही दूसरों को टिकने देती है.....!!!

माएसने जरां पोतरो, ने भजानो नीकणे, सायवीने संघरेलो, अेक जमानो नीकणे .  
भणे कशे आभी जिंदगी जुवती दटायेली, थाय बेठी, अस अेक जए पोतानो नीकणे .  
जउरी नथी के सीधां देभातां ज सारां होय, कदी कोँ अडीयल पए, भजानो नीकणे .  
रभे मानशो, हैवानियत हैवानो ज करे, कदी, सज्जनमांथीय घरां, शैतानो नीकणे .

धा, બધે જ મળે છે, ચાહે ગમે તેને ખોતરો, કદી બહાર, કદી અંદર, નિશાનો નીકળે .  
કંઈ જ નક્કી નહીં, આ તો માણસ કહેવાય, બહારથી પોતાનો, અંદર બીજાનો નીકળે.

વક્ત્ર કા પતા નહીં ચલતા અપનોં કલ સાથ.....

પર અપનોં કા પતા ચલતા હૈ, વક્ત્ર કલ સાથ...

વક્ત્ર નહીં બદલતા અપનોં કલ સાથ,

પર અપને જરૂર બદલ જાતે હૈ વક્ત્ર કલ સાથ...!!!

જિન્દગી પલ-પલ ઢલતી હૈ, જૈસે રેત મુઢી સે ફિસલતી હૈ...

શિકવે કિતને ભી હો હર પલ, ફિર ભી હૈસતે રહના...ક્યોંકિ યે

જિન્દગી જૈસી ભી હૈ, બસ ઁક હી બાર મિલતી હૈ।

ઁક પથ્થર સિફ ઁક બાર મંદિર જાતા હૈ ઁર ભગવાન બન જાતા હૈ ..

ઁસાન હર રોજ મંદિર જાતે હૈ ફિર ભી પથ્થર હી રહતે હૈ ...!!

ઁક ઁરત બેટે કો જન્મ દેને કલ લિયે અપની સુન્દરતા ત્યાગ દેતી હૈ.....

ઁર વહી બેટા ઁક સુન્દર બીવી કલ લિઁ અપની માં કો ત્યાગ દેતા હૈ

જીવન મં હર જગહ હમ "જીત" ઁાહતે હૈ...

સિફ ફૂલવાલે કી દૂકાન ઁસી હૈ, જહાં હમ કહતે હૈ કિ "હાર" ઁાહિઁ।

ક્યોંકિ હમ ભગવાન સે "જીત", નહીં સકતે।

હમ ઁર હમારે ઁશ્વર, દોનોં ઁક જૈસે હૈ।

જો રોજ ભૂલ જાતે હૈ, વો હમારી ગલતિયોં કો,

ઁર હમ ઁસકી મેહરબાનિયોં કો।

કુઁ મં ઁતરને વાલી બાલ્ટી યદિ ઁકતી હૈ, તો ભરકર બાહર ઁતી હૈ...

જીવન કા ભી યહી ગણિત હૈ, જો ઁકતા હૈ વહ પ્રાપ્ત કરતા હૈ...

जीवन में किसी का भला करोगे, तो लाभ होगा... क्योंकि भला का उल्टा लाभ होता है ।  
और जीवन में किसी पर दया करोगे, तो वो याद करेगा... क्योंकि दया का उल्टा याद होता है।

भरी जेब ने ' दुनिया ' की पहचान करवाई और खाली जेब ने ' इन्सानो ' की.

माचिस की ज़रूरत यहाँ नहीं पड़ती, यहाँ आदमी आदमी से जलता है..

अगर जींदगी मे कुछ पाना हो तो तरीके बदलो, ईरादे नही..  
ग़ालिब ने खूब कहा है...: ऐ चाँद तू किस मजहब का है, ईद भी तेरी और करवाचौथ भी तेरा..

जब पांच सेकंड की मुस्कान से फोटो अच्छी आ सकती है तो  
हमेशा मुस्कुराने से जिन्दगी अच्छी क्यों नही हो सकती !!!!!

जिंदगी का फलसफ़ा बस इतना है यारों,  
"अपनों से बचो, गैरो से तो निपट लेंगे"

दिन की रोशनी खवाबों को बनाने मे गुजर गई,  
रात नींद को मनाने मे गुजर गई।  
जिस घर मे मेरे नाम की तखती भी नहीं,  
सारी उमर उस घर को सजाने मे गुजर गई.

कोई क्या जानेगा कभी अपना भी जमाना था, सारा शहर कभी अपना भी दीवाना था...  
लोग तो करते है सिर्फ दोस्तों से दोस्ती, अपना तो दुश्मनों से भी याराना था...

हमें ना ही हुकुम का ईका ना रानी का बादशाह बनना है....  
हम तो जोकर ही अच्छे हैं, जिस की बाड़ी में आएंगे, बाड़ी पलट देंगे....

करो सोने के सौ टुकडे तो क्रीमत कम नहीं होती.  
बुजुर्गी की दुआ लेने से इज्जत कभी कम नहीं होती.

जरूरतमंद को कभी देहलीज से खाली ना लौटाओ,  
भगवन के नाम पर देने से दौलत कम नहीं होती..

पकाई जाती है रोटी जो मेहनत के कमाई से,  
हो जाए गर बासी तो भी लज्जत कम नहीं होती,  
याद करते है अपनी हर मुसीबत में जिन्हें हम..  
गुरु और प्रभु के सामने झुकने से  
गर्दन नीचे नहीं होती....!!!

डिल नी लागेटो में हूं कउं?  
टाप बो लागे टो में हूं कउं?  
टु मांगटे टो चांढ-टारा तोरी लावटे,  
पन टु बप्पोरे मांगेटो में हूं कउं?—हुरती शायरनी शायरी

हथेलीमां वाण नही, गघेडाने गाण नही  
उदरने उयाणो नही, मिदडीने माणो नही  
कुवाराने साणो नही अने कयाय हंस काणो नही  
संसारीने लेभ नही, मरणमां केक नही  
साछकलमां जेक नही अने वांढाने बरेक नही  
कडी उपर ताणु नही, लाडु उपर वाणु नही  
कोट उपर शाल नही, बभतर उपर ढाल नही  
केरडामां पान नही अने घर जमायने मान नही  
कुतरानी पूछडी सीधी नही अने कज्यामां विधि नही  
रूंगरा नरम नही, गुलफ़ि गरम नही  
पापीने घरम नही ,अने टिगंबरने शरम नही  
इण कुलमां कयाय हांघो नही अने हवे उंघमां तमे ताणी पाडो तो वांघो नही.

"बकश देता है 'खुदा' उनको,  
जिनकी 'किस्मत' खराब होती है...

वो हरगिज नहीं 'बक्शे' जाते है,  
जिनकी नियत खराब होती है..."  
न मेरा एक होगा, न तेरा लाख होगा,  
न तारिफ तेरी होगी, न मजाक मेरा होगा.  
गुरुर न कर "शाह-ए-शरीर" का,.....  
मेरा भी खाक होगा, तेरा भी खाक होगा !!!

"रग रग ने रोम रोमथी तूटी जवाय छे  
तो पण मजानी वात के जूवी जवाय छे  
भाली गजल जो होय तो इटकारी काहीये  
आ तो हृदयनी वात छे हांड़ी जवाय छे"

दुनियामे जुनेकी चाहत ना होती, अगर भुदने महोबत बनाई न होती  
लोग मरने की आरजु ना करते, अगर महोबत में बेवझाई ना होती  
यादोमे हमारी वो ली भोये होंगे, भुली आंभोसे वो ली कली सोये होंगे  
माना हसना है अदा गम छुपानेकी, पर हस्ते हस्ते वो ली कली रोये होंगे

नयी सदी से मिल रही, दर्द भरी सौगात!  
बेटा कहता बाप से, तेरी क्या औकात!!  
अब तो अपना खून भी, करने लगा कमाल!  
बोझ समझ माँ-बाप को, घर से रहा निकाल!!  
पानी आँखों का मरा, मरी शर्म औ लाज!  
कहे बहू अब सास से, घर में मेरा राज!!  
भाई भी करता नहीं, भाई पर विश्वास!  
बहन पराई हो गयी, साली खासमखास!!  
मंदिर में पूजा करें, घर में करें कलेश!  
बापू तो बोझा लगे, पत्थर लगे गणेश!!  
बचे कहाँ अब शेष हैं, दया, धरम, ईमान!  
पत्थर के भगवान हैं, पत्थर दिल इंसान!!  
पत्थर के भगवान को, लगते छप्पन भोग!  
मर जाते फुटपाथ पर, भूखे, प्यासे लोग!!

फैला है पाखंड का, अन्धकार सब ओर!  
पापी करते जागरण, मचा-मचा कर शोर!  
पहन मुखौटा धरम का, करते दिन भर पाप!  
भंडारे करते फिरें, घर में भूखा बाप!!

मैनेदिल कै दरवाजे पर लिखा  
अन्दर आना सख्त मनाहै.  
मौहब्बतहंसती हुई आई  
और आकर बड़ैप्यार से बोली  
माफ करना मै तो अन्धी हुं.

नींद और मौत में क्या फर्क है...?  
किसी ने क्या खूबसूरत जवाब दिया है....  
"नींद आधी मौत है" और "मौत मुकम्मल नींद है"  
जिंदगी तो अपने ही तरीके से चलती है....  
औरों के सहारे तो जनाजे उठा करते हैं।  
सुबहे होती है , शाम होती है, उम्र यू ही तमाम होती है ।  
कोई रो कर दिल बहलाता है और कोई हँस कर दर्द छुपाता है.  
क्या करामात है कुदरत की, जिंदा इंसान पानी में डूब जाता है और मुर्दा तैर के दिखाता है...  
बस के कंडक्टर सी हो गयी है जिंदगी ।  
सफ़र भी रोज़ का है और जाना भी कही नहीं।.....

भूली जवानी वातो भूली शक्यां नही, अक्कस रहीने उभरया ठूकी शक्यां नही  
बेसी रखां अहमने पंपाणी बारणे, घरमां रहीने घरमां डूबी शक्यां नही  
येवी ते केवी गुंय उकेल्यामां पडया के ? बाणकने स्मित साथे यूमी शक्या नही  
छेवट सुधी स्वयंमां येवा ते रत रखां, छेवट सुधी स्वयंथी छूटी शक्यां नही

गजबका हौंसला दिया है खुदाने हम इंसानोको



वाकिफ हम अगले पलके नहीं, और वादा जन्मो जन्मका करते है!

हज़ारों ऐब ढूँढ़ते है हम दूसरों में इस तरह,  
अपने किरदारों में हम लोग, फरिश्तें हो जैसे....!!!!

ये दुनिया वाले भी बड़े अजीब है, कभी हमसे दूर तो कभी करीब है,  
दर्द ना बताये तो कायर कहते है, औ दर्द बताये तो शायर कहते है.

कतरा अब अहतजाज करे भी तो क्या मीले ,  
दरिया जो लग रहे थे समंदर से जा मिले ,  
हर सखश दोडता हे यहा भीड की तरफ ,  
फीर ये भी चाहता हे उसे रास्ता मिले.

रब ने नवाजा हमें जिंदगी देकर;और हम शौहरत मांगते रह गये;  
जिंदगी गुजार दी शौहरत के पीछे;फिर जीने की मौहलत मांगते रह गये।

सीढिया उन्हे मुबारक हो, जिन्हे छत तक जाना है.....  
मेरी मन्जिल तो आसमान है, रास्ता मुझे खुद बनाना है..

जिंदगी तो अपने ही तरीके से चलती है....  
औरों के सहारे तो जनाज़े उठा करते हैं।

मित्रो, सुगंधनो मोह नथी गयो, नहीं तो कागलना झूलो तो जिंदगीभरनो साथ आपवा तैयार  
हत्त!!

मांगो तो अपने रब से मांगो; जो दे तो रहमत और न दे तो किस्मत;

लेकिन दुनिया से हरगिज़ मत माँगना; क्योंकि दे तो एहसान और न दे तो शर्मिंदगी।

कभी भी 'कामयाबी' को दिमाग और 'नकामी' को दिल में जगह नहीं देनी चाहिए।  
क्योंकि, कामयाबी दिमाग में घमंड और नकामीदिल में मायूसी पैदा करती है।

उसे गजब का शौक है हरियाली का, ...!! रोज आकर जख्मों को हरा कर जाती है...!!!!

गुनाह करके सज़ा से डरते हैं, जहर पी के दवा से डरते हैं,  
दुश्मनों के सितम का खौफ नहीं, हम तो दोस्तों की वफ़ा से डरते हैं....

पैर की मोच और छोटी सोच, हमें आगे बढ़ने नहीं देती ।  
टुटी कलम और औरो से जलन, खुद का भाग्य लिखने नहीं देती ।  
काम का आलस और पैसो का लालच, हमें महान बनने नहीं देता ।  
अपना मजहब उंचा और गैरो का ओछा, ये सोच हमें इन्सान बनने नहीं देती ।  
खाने में कोई जहर घोल दे, तो उसका इलाज है, लेकिन,  
कान में कोई जहर घोल दे, तो उसका कोई इलाज नहीं है...!!

जीवन की भाग-दौड़ में -क्यूँ वक़्त के साथ रंगत खो जाती है?  
हँसती-खेलती ज़िन्दगी भी आम हो जाती है। एक सवेरा था जब हँस कर उठते थे हम  
और आज कई बार बिना मुस्कुराये ही शाम हो जाती है!!

मुश्किलें जरूर है, मगर ठहरा नहीं हूँ मैं.  
मंज़िल से जरा कह दो, अभी पहुंचा नहीं हूँ मैं.  
कदमो को बाँध न पाएंगी, मुसीबत कि जंजीरें,  
रास्तों से जरा कह दो, अभी भटका नहीं हूँ मैं.  
सब्र का बाँध टूटेगा, तो फ़ना कर के रख दूंगा,  
दुश्मन से जरा कह दो, अभी गरजा नहीं हूँ मैं.  
दिल में छुपा के रखी है, लड़कपन कि चाहतें,  
मोहब्बत से जरा कह दो, अभी बदला नहीं हूँ मैं.

" साथ चलता है, दुआओ का काफिला,  
किस्मत से जरा कह दो, अभी तनहा नहीं हूँ मैं.

वक्त आंसुओ को पीना शीमा देता है, जमाना हकीकत को आचना दीमा देता है,  
जाने कयो लोग दई को बुरा कहेते है, ये दई है जो छन्सान को ज़ुना शीमा देता है!

झीझओ के बदलने का छन्तेआर नहीं करते, आंधीयो के रुकने का छन्तेआर नहीं करती,  
याद कर लेते है हम अपनो को, उनके याद करनेका छन्तेआर नहीं करते!

## दिल मे आने का रास्ता है, जाने का नहीं

"दिल मे आने का रास्ता तो होता है! लेकिन जाने का नहीं होता,  
इसलिए इंसान दिल से जब भी जाता है! दिल तोड़कर ही जाता है!  
पानी से तस्वीर कहा बनती है, खवाबों से तकदीर कहा बनती है,  
किसी भी रिश्ते को सच्चे दिल से निभाओ, ये जिंदगी फिर वापस कहा मिलती है  
कौन किस से चाहकर दूर होता है, हर कोई अपने हालातों से मजबूर होता है,  
हम तो बस इतना जानते है, हर रिश्ता "मोती" और हर दोस्त "कोहिनूर" होता है!.....

## शीमवाडजे प्रभु.

सङ्गता नहि आपे तो यालशे, निष्ङ्गताने धीरजथी हेन्डल करता शीमवाडजे प्रभु.  
धन दोलत नहि आपे तो यालशे, कोई गरीबने प्रेमथी गणे मणता शीमवाडजे प्रभु.  
बहु प्रसिद्धि नहि आपे तो यालशे, कोई अज्ञास्थाने पोतानो गणता शीमवाडजे प्रभु.  
वधारे आयुष्य नहि आपे तो यालशे, सुंदर रीते ज़ुवी, सुंदर रीते मरता शीमवाडजे प्रभु.  
सारी वाङ्छटा नहि आपे तो यालशे, कई भराब बोलता पहेला डरता शीमवाडजे प्रभु.  
सांठु शरीर शौष्ठव नहि आपे तो यालशे, भारोभार अन्याय सामे लडता शीमवाडजे प्रभु.  
बहु बुद्धि नहि आपे तो यालशे, जेटली छे ये सारी रीते वापरता शीमवाडजे प्रभु.  
उडवा माटे पांभो नहि आपे तो यालशे, कोईना दिलमां भूब ठंडा उतरता शीमवाडजे प्रभु  
- अश्विन.

ચાલ એક આંટો બહાર મારી આવીએ,  
બંધનોથી મુક્ત હવાને માણી આવીએ.  
આમ તો સ્થળ ક્યાં કોઈ પણ બાકી હવે ?  
કોઈના દિલ સુધી લટાર મારી આવીએ.  
વદીને દશકા બધું છોડીને સંસારમાં,  
આપણું ગણિત ખોટું પાડીને આવીએ.

આપવાની મઝા શું હોય છે એ જાણવા,  
વૃક્ષ કે પછી વાદળને મળી આવીએ.  
પ્રાર્થનામાં આજે હવે માંગવું કશું નથી,  
બસ, ખાલી એકવાર હાંક મારી આવીએ.  
શબ્દની સાધનામાં જિંદગી ઓછી પડે,  
હોય એ તો, નાની મોટી ભૂલ કરી આવીએ.  
હસ્તરેખાઓ સુકાઈ જાય એ સારું નહિં,  
કો'કના આંસુ લૂછી એને પલાળી આવીએ - અધિન દેસાઈ.

**વક્ત અચ્છા જરૂર આતા है; मगर वक्त पर ही आता है!**

**कागज अपनी किस्मत से उड़ता है; लेकिन पतंग अपनी काबिलियत से!  
इसलिए किस्मत साथ दे या न दे; काबिलियत जरूर साथ देती है!**

दो अक्षर का होता है लक; ढाई अक्षर का होता है भाग्य;  
तीन अक्षर का होता है नसीब; साढ़े तीन अक्षर की होती है किस्मत;  
पर ये चारों के चारों चार अक्षर, मेहनत से छोटे होते हैं!.....

**काम करो ऐसा कि पहचान बन जाये; हर कदम चलो ऐसे कि निशान बन जायें;  
यह जिंदगी तो सब काट लेते हैं; जिंदगी ऐसे जियो कि मिसाल बन जाये!**

भगवान की भक्ति करने से शायद हमें माँ न मिले;  
लेकिन माँ की भक्ति करने से भगवान् अवश्य मिलेंगे!

अहंकार में तीन गए; धन, वैभव और वंश!  
ना मानो तो देख लो; रावन, कौरव और कंस!

'इंसान' एक दुकान है, और 'जुबान' उसका ताला;  
जब ताला खुलता है, तभी मालुम पड़ता है;  
कि दूकान 'सोने' कि है, या 'कोयले' की!

आपको कौन मिलता है, यह समय तय करता है!  
आप उनमें से किसका साथ चाहते हैं, यह आप तय करते हैं!  
और उनमें से कौन आपके साथ रहता है, यह आपका व्यवहार तय करता है!

मीठे बोल बोलिये क्योंकि अल्फाजों में जान होती है;  
इन्हीं से आरती, अरदास और इन्हीं से अज्ञान होती है;  
यह समुंदर के वह मोती हैं; जिनसे इंसानों की पहचान होती है!"

"माचिस की ज़रूरत यहाँ नहीं पड़ती...  
यहाँ आदमी आदमी से जलता है...!!"

कहते हैं कि पत्थर दिल रोया नहीं करते  
तो फिर, पहाड़ों से ही झरने क्यों बहा करते हैं ?

मौत से बचने का सबसे शानदार तरीका है,  
दूसरो के दिलों में जिन्दा रहना सीख लो.....!!  
ये कफन, ये जनाज़े, ये कब्र, सिर्फ बातें हैं मेरे दोस्त,

वरना मर तो इंसान तभी जाता है,  
जब याद करने वाला कोई ना हो!

"दीदार की 'तलब' हो तो नज़रे जमाये रखना 'ग़ालिब'  
क्युकी, 'नकाब' हो या 'नसीब'.....सरकता जरूर है."

रफ़्तार कुछ इस कदर तेज है जिन्दगी की..  
की सुबह का दर्द शाम को, पुराना हो जाता है..

जरूरी नहीं रौशनी चिरागो से ही हो.  
बेटियां भी घर में उजाला करती हैं.. !!

मुझे कुछ अफ़सोस नहीं के मेरे पास सब कुछ होना चाहिए था ।  
मैं उस वक़्त भी मुस्कुराता था जब मुझे रोना चाहिए था ।

अभी सूरज नहीं डूबा ज़रा सी शाम होने दो"  
मैं खुद लौट जाऊंगा मुझे नाकाम होने दो"  
मुझे बदनाम करने का बहाना ढूँढते हो क्यों"  
मैं खुद हो जाऊंगा बदनाम पहले नाम होने दो..

प्यार मैं कोइ तो दील तोड देता है।  
दोस्ती में कोइ तो भरोसा तोड देता है।  
जीन्दगी जीना तो कोइ गुलाब से सीखे।  
जो खुद टुट कर दो दीलो को जोड देता है

पानी दरिया में हो या आँखोंमें,  
गहराई और राज़ दोनोंमें होते हैं!!

बुलंदियों पर पहुँच कर गुरुर ना करना,

सफ़र की ढलान अभी बाकी है ....!

खोजा बहुत खुदा को, पर कहीं मिला नहीं,  
ना मंदिर में, ना मस्जिद में, ना चर्च में, ना गुरुद्वारे में,  
तब किसी फकीर ने कहा, खुदा "खोजने" से नहीं  
खुद को "खो-देने" से मिलता है

खोजा बहुत जहाँ में, पर पाया तेरा पता नहीं !  
और पता मिला जब तेरा, तो मेरा पता नहीं ।।

मेरे बारे में कोई राय मत बनाना गालिब,  
मेरा वक्त भी बदलेगा, और तेरी राय भी ।

तू छोड़ दे कोशिशें, इन्सानों को पहचानने की...!  
यहाँ जरूरतों के हिसाब से, सब नकाब बदलते हैं...!

सच बोलता हूँ तो टूट जाते हैं रिश्ते,  
झूठ कहता हूँ तो खुद टूट जाता हूँ....

तेरी इस दुनियां में ऐसा मंजर क्यों है ?  
कही जखम तो कहीं पीठ पर खंजर क्यों है?  
सुना है कि तू हर जर्-जरे में रहता है..  
तो फिर जमी पर कहीं मस्जिद और मन्दिर क्यों है?  
जब रहने वाले इस दुनियां के हैं तेरे ही बन्दे..  
तो फिर कोई किसी का दोस्त और कोई दुश्मन क्यों है?  
तू ही लिखता है जब सवका मुकद्दर...  
तो कोई बदनसीब और कोई मुकद्दर का सिकंदर क्यों है?

"घांव इतना गहरा है बयां क्या करे  
हम खुद निशाना बन गये अब वार क्या करे

जान निकल गयी मगर खुली रही आंखें  
अब इससे ज्यादा उनका इंतज़ार क्या करे"

बहुत देखा जीवन में समझदार बन कर,  
पर खुशी हमेशा पागल बनने पर ही मिली है .....

पलकों में आँसु और दिल में दर्द सोया है,  
हँसने वालो को क्या पता, रone वाला किस कदर रोया है,

ये तो बस वही जान सकता है मेरी तनहाई का आलम,  
जिसने जिन्दगी में किसी को पाने से पहले खोया है..!!

चुपके से धड़कन में उतर जायेंगे, राहें उल्फत में हद से गुजर जायेंगे,

आप जो हमें इतना चाहेंगे....., हम तो आपकी साँसों में पिघल जायेंगे.

नींद आए या ना आए, चिराग बुझा दिया करो,  
यूँ रात भर किसी का जलना, हमसे देखा नहीं जाता....!!!!

दिल भी आज मुझे ये कह कर डरा रहा है..



करो याद उसे वरना, मैं भी धडकना छोड़ दूंगा

कल रात मैंने अपने सारे ग़म कमरे की दीवारों पे लिख डाले,  
बस हम सोते रहे और दीवारें रोती रहीं ...

इस दुनिया के लोग भी कितने अजीब हैं ना ...  
सारे खिलौने छोड़ कर जज़्बातों से खेलते हैं

जींदगी गुज़र गई सारी  
कांटो की कगार पर,  
और फुलो ने मचाई है भीड़  
हमारी मज़ार पर.....

ટયલી આંગલડીનો નખ  
લટમાં પરોવી હું તો બેઠી, સજન !  
મુંને એકવાર કાગળ તો લખ  
કૂંપળ ગોતું ને જડે ઝાકળનું ઝૂમખું,  
વ્હાલમજી બોલ, એવા અંજળનું નામ શું ?  
ચૂમી ચૂમીને કરી એઠી, સજન !  
હવે લૂછી દે પાંપણનાં દખ  
છાતીમાં સૂનમૂન પાબ્યાં રે પારેવડાં,  
પાતળિયા પૂછ, એના પડછાયા કેવડા ?  
છાલક ના જાય જરી વેઠી, સજન !  
હવે ઘોળી દે ધૂધવતાં વખ - અજ્ઞાત

सर झुकाने से नमाज़ें अदा नहीं होती...!!!

दिल झुकाना पड़ता है इबादत के लिए...!!!  
पहले मैं होशियार था,  
इसलिए दुनिया बदलने चला था,  
आज मैं समझदार हूँ,  
इसलिए खुद को बदल रहा हूँ।।  
बैठ जाता हूँ मिट्टी पे अक्सर...  
क्योंकि मुझे अपनी औकात अच्छी लगती है..  
मैंने समंदर से सीखा है जीने का सलीका,  
चुपचाप से बहना और अपनी मौज में रहना ।।  
ऐसा नहीं है कि मुझमें कोई ऐब नहीं है पर सच  
कहता हूँ मुझमें कोई फरेब नहीं है  
जल जाते हैं मेरे अंदाज़ से मेरे दुश्मन क्योंकि एक  
मुद्दत से मैंने  
न मोहब्बत बदली और न दोस्त बदले .!..

अपने गमकी नुमाईश ना कर, अपने नसीबकी अजमाईस ना कर,  
जो तेरा है तेरे पास भुल आयेगा, हररोज उसे पानेकी ज्वाईश ना कर  
तकदीर बदल जायेगी अपने आप ही ये दीस्त, मुश्कराना शीघ्र ले, वजह की तलाश न कर

मश्जुद नां द्वार पासे उला रही येक बंदो बुलंद अवाजे आंभ मीचीने कहे छे.  
या भुदा तेरे दिलके द्वार भोल दे ! या भुदा तेरे दिलके द्वार भोल दे!  
या भुदा तेरे दिलके द्वार भोल दे ! त्यां रहेल बीजा बंदा ये कहुं  
द्वार तो भुले है बस तु तेरी आंभ भोलदे!

जे घरमां मा दुःभी छे ते घरमांथी क्लेश जतो नथी....  
जे घरमां वहुं दुःभी छे ते घरमांथी गरीबी जती नथी...  
जे घरमां टिकरी दुःभी छे ते घरमांथी बिमारी जती नथी...

સાચો યા ખોટો જોઈએ, ઈશ્વરનો ફોટો જોઈએ !  
આખો સમુદ્ર શું કરું ?, અડધો જ લોટો જોઈએ  
કેવી રીતે અરીસામાં- પીઠનો લિસોટો જોઈએ ?  
ચાલે પ્રભુનું સ્વર્ગમાં, અહિયાં તો નોટો જોઈએ  
ફૂલોને સ્પર્શવા નહિ, ધાસોથી બોટો, જોઈએ  
જૂનો સબંધ તોડવા, ઝગડોય મોટો જોઈએ - - મેહુલ પટેલ 'ઈશ'

બાકી શરીર કેં નથી ચહેરો છે દોસ્તો, ઓળખ, અટક ને નામનો પહેરો છે દોસ્તો  
માણસ સુધી તો કઈ રીતે પહોંચી શકે કોઈ, દેખાય તેથી પણ વધુ ગહેરો છે દોસ્તો - નયન દેસાઈ

ईश्वर का दिया कभी अल्प नहीं होता; जो टूट जाये वो संकल्प नहीं होता;  
हार को लक्ष्य से दूर ही रखना; क्योंकि जीत का कोई विकल्प नहीं होता।

जिंदगी में दो चीज़ें हमेशा टूटने के लिए ही होती हैं: "सांस और साथ"  
सांस टूटने से तो इंसान एकही बार मरता है; पर किसी का साथ टूटने से इंसान पल-पल मरता है।

जीवन का सबसे बड़ा अपराध - किसी की आँख में आंसू आपकी वजह से होना।  
और जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि - किसी की आँख में आंसू आपके लिए होना।

जिंदगी जीना आसान नहीं होता; बिना संघर्ष कोई महान नहीं होता;  
जब तक न पड़े हथोड़े की चोट; पत्थर भी भगवान नहीं होता।

जरूरत के मुताबिक जिंदगी जिओ - ख्वाहिशों के मुताबिक नहीं।  
क्योंकि जरूरत तो फकीरों की भी पूरी हो जाती है; और ख्वाहिशें बादशाहों की भी अधूरी रह जाती है।

मांगो तो अपने रब से मांगो;

जो दे तो रहमत और न दे तो किस्मत;  
लेकिन दुनिया से हरगिज़ मत माँगना;  
क्योंकि दे तो एहसान और न दे तो शर्मिंदगी।

कभी भी 'कामयाबी' को दिमाग और 'नकामी' को दिल में जगह नहीं देनी चाहिए।  
क्योंकि, कामयाबी दिमाग में घमंड और नकामीदिल में मायूसी पैदा करती है।

कौन देता है उम्र भर का सहारा। लोग तो जनाज़े में भी कंधे बदलते रहते हैं।

## मेरी तरह देश से कभी इश्क करके देख लेना

कभी ठंड में ठिठुर के देख लेना  
कभी तपती धूप में जल के देख लेना  
कैसे होती है हिफाज़त मुल्क की  
कभी सरहद पर चल के देख लेना  
कभी दिल को पत्थर करके देख लेना  
कभी अपने जज्बातों को मार के देख लेना  
कैसे याद करते हैं मुझे मेरे अपने  
कभी अपनों से दूर रहकर देख लेना  
कभी वतन के लिए सोच के देख लेना  
कभी माँ के चरण चूम के देख लेना  
कितना मज़ा आता है मरने में यारो  
कभी मुल्क के लिए मरके देख लेना  
कभी सनम को छोड़ के देख लेना  
कभी शहीदों को याद करके देख लेना  
कोई महबूब नहीं है वतन जैसा यारो  
मेरी तरह देश से कभी इश्क करके देख लेना

## एक शराबी की सोच -

वैसे तो हम ज्यादा पीते नहीं ...

थोड़ी सी ज्यादा हो भी जाए,  
तो हमें नशा होता नहीं ...  
और नशा हो भी जाए,  
तो हम नाले में गिरते नहीं ...  
अगर नाले में गिर भी जाएँ,  
तो कुत्ते हमें चाटते नहीं ...  
और अगर कुत्ते चाट भी लें,  
तो हमें कौनसा पता लग जाता है यार !!! **Ranjeeta Nath Ghai**

कभी कभी मेरे दिलमे खयाल आता है,  
अगर जिंदगी तेरी जुल्फोकी छावमे गुजर जाती तो  
"होमलोन" लेनेकी जरूरत नहीं पड़ती

गालिबन यह कहकर तोड़ दी माला, गिनकर क्यों नाम लू जो बेहिसाब देता है !

ग़ालिब से एक दोस्तने कहा  
जो शराब पीते है उनकी दुवा कबूल नहीं होती  
गालिबने जवाब दिया  
जिन्हे शराब मिल गई उन्हें, दुवाकी जरूरत नहीं होती

याहतमां એકબીજાની ફિકર હોવી જોઇએ,  
આ વાતની તને ય ખબર હોવી જોઇએ.  
એક રોશની રહે છે સતત મારા પંથમાં,  
મારા ઉપર તમારી નજર હોવી જોઇએ.  
લાગે છે ઠોકરો ને છતાં દુઃખ થતું નથી,  
બસ આ જ તારી રાહગુજર હોવી જોઇએ.  
નિષ્ફળ પ્રણયનો દોષ તો દઉં હું તને મગર,  
મારી ય લાગણીમાં કસર હોવી જોઇએ.  
ચાલું છું એમ થાઉં છું મંઝિલથી દૂર હું,

ઊલટી દિશાની મારી સફર હોવી જોઈએ.  
હટવા દો અંધકાર, એ દેખાઈ આવશે,  
આ રાતમાં જ ક્યાંક સહર હોવી જોઈએ.  
આ બહારનું જગત તો જૂઠાણાંનો ખેલ છે,  
દુનિયા ખરી તો દિલની ભીતર હોવી જોઈએ.  
'બેફામ' જ્યાં ચણાયો હશે એમનો મહેલ,  
એની જ નીચે મારી કબર હોવી જોઈએ. - બરકત વિરાણી 'બેફામ'

તરવું કદી ન ફાવ્યું મને, તળ સુધી ગયો  
અમૃતની ઝંખનામાં હળાહળ સુધી ગયો  
હું દિવ્યતાની શોધમાં દેવળ સુધી ગયો  
પ્રત્યેક બંધ દ્વારની સાંકળ સુધી ગયો  
મંદિર કે મસ્જીદો સુધી અટકી ગયા સહુ  
જિજ્ઞાસાવશ જરાક હું આગળ સુધી ગયો  
મારી તરસના સાચા સ્વરૂપને પિછાણવા  
હરિયાળી ભોમ છોડી મરૂસ્થળ સુધી ગયો  
ભાલાનો તીરકામઠાંનો વારસો હતો  
માણસ છતાંય એક દિવસ હળ સુધી ગયો  
લોહીનો રંગ લાલ નહીં, કાળો હોય છે  
એવી પ્રતીતિ થઈ અને કાગળ સુધી ગયો  
આખા જીવનમાં દુઃખની મળી એક પળ 'રઈશ'  
એનો જ પ્રત્યાઘાત પળેપળ સુધી ગયો - - રઈશ મનીઆર

## જિંદગી

જિંદગીને જન્ન સમજીને માણી લો...  
અર્ધો જામ ભલે ખાલી દેખાતો  
અર્ધો ભરેલો છે એ જામ એ જાણી લો..  
ન મળ્યું જે એનો ગમ ન કરો

જે મલ્યું છે તમને એને ભરપૂર માણી લો.....  
મારી છત્રીમાં કાણાં હતાં પણ  
એમાંથી આવતી બુંદો એ પલળવાની મજા સમજાવી..  
મારા સ્વેટરમાં કંઈક કાણા હતાં,  
શીતળ પવનની લહેરખીઓ રુંવાડા ઉભા કરતી હતી....  
મારી ચંપલના તળિયાનાં કાણાએ મને  
તપ્ત ધરતીનાં ક્રોધનો અનુભવ કરાવ્યો ગ્રીષ્મમાં.....  
મેં હવે જાણી લીધું છે..  
જિંદગી તો હંમેશ મજાની જ છે...  
બસ આપણા ચશ્મા ઉતારવાની જરૂર છે...  
એને પ્રાકૃતિક રૂપે માણવી  
એ જ એક માત્ર સચ્ચાઈ છે.....કથા ગજજર  
અથ મારા દોસ્ત ..  
એ માત્ર દુઃખોનો દરિયો નથી,  
એ ઉમંગોનો ઉછળતો મહાસાગર પણ છે...

ફૂલો સે ભી ક્યાં દોસ્તી કરની, જો કુછ પલ બાદ મૂરઝા જાતે હૈ  
દોસ્તી કરો તો કાંટો સે કરો, જો ચુભને કે બાદ ભી યાદ આતે હૈ!

गलतियों से जुदा तू भी नहीं, मैं भी नहीं,  
दोनों इंसान हैं, खुदा तू भी नहीं, मैं भी नहीं ... !  
" तू मुझे ओर मैं तुझे इल्ज़ाम देते हैं मगर,  
अपने अंदर झाँकता तू भी नहीं, मैं भी नहीं " ... !!  
" गलत फ़हमियों ने कर दी दोनों में पैदा दूरियाँ,  
वरना फितरत का बुरा तू भी नहीं, मैं भी नहीं...!!

## WORLD'S BEST MESSAGE for FRIENDS

I Love you  
But i am not your Lover.  
i Hug you  
But i am not ur Life Partner.  
I Care for you  
But i am not from your Family.  
I am ready to share your pain  
But i am not in your Blood Relation.  
They are... Friends !  
A True Friend scolds like a Dad !  
Cares like a Mom !  
Irritates like a Sister !  
Teases like a Brother !  
And finally  
Loves you more than a Lover

## શબ્દો શાપ પણ છે, તો આશીર્વાદ પણ છે

બેધ્યાન રીતે બોલેલા કે લખેલા શબ્દો ઝગડા કરાવી શકે છે  
શબ્દો તમારી આંખમાં આંસું લાવી શકે છે, ફૂર શબ્દો જિંદગી બરબાદ કરી શકે છે  
કડવા શબ્દો ધિક્કાર ઉપજાવી શકે છે, શબ્દો ખુન અને યુધ્ધો પણ કરાવી શકે છે  
દ્રૌપદીના “આંધળાના આંધળા” શબ્દોએ, કેવું મહાભારત રચ્યું હતું !  
ભલાઈના શબ્દો જીવન પથને સરળ બનાવે છે,  
હર્ષ , આનંદ અને પ્રશંસાના શબ્દો તમારો દિવસ સુધારે છે  
વખતસર બોલેલા શબ્દો તમારો તણાવ ઘટાડે છે , સ્નેહ અને પ્રેમના શબ્દો જુના ધા રુઝાવે છે  
શબ્દો તમારા માટે કાતર બની શકે છે, શબ્દો તમારે માટે સોય પણ બની શકે છે

જિંદગી મારી પણ હતી, સુરતી માંજા જેવી.

સ્વાર્થી લોકો મળતા ગયા અને ગાંઠો વધતી ગઈ!

कन्न की आगोश में जब थक कर सो जाती है मां,



તબ કહીં જાકર થોડા શકુન પાતી હૈ માં.  
ફિક્ર મેં બચ્ચોં કી કુછ ઁસે ધુલ જાતી હૈ માં,  
નોં જવાં હોતે હુઁ ઁમી બૂઢી નજર આતી હૈ માં.  
રૂહ કે રિશ્તોં કી ઁ ગહરાઈયાં તો દેખિયે,  
ચોટ લગતી હૈ હમેં ઁર રોતી હૈ માં.  
ઘર સે જબ પરદેશ જાતા હૈ કોઈ નૂરે નજર,  
હાથોં મેં 'કુરાન' લેકર દર પે આ જાતી હૈ માં.  
જબ પરેશની મેં ઘિર જાતે હૈં હમ પરદેશ મેં,  
આંસુઓં કો પોંછને ઁવાબોં મેં આ જાતી હૈ માં.  
ચાહે હમ ઁશિયોં મેં માં કો ભૂલ જાઁં દોસ્તોં,  
જબ મુસીબત સર પે આ જાઁ તો ઁાદ આતી હૈ માં.  
શુક્રિયા હો નહીં સકતા કમી ઁસકા અદા,  
મરતે-મરતે ઁમી દુઆ દે જાતી હૈ માં.  
લોટ કર સફર સે જબ ઁમી ઘર આતે હૈમ હમ,  
ડાલ કર બાહેં ગલે મેં સર કો સહલાતી હૈ માં.  
પ્યાર કહતે હૈં કિસે ઁર મમતા કયા ઁીજ હૈ,  
ઁ ઁન બચ્ચોં સે પૂછો જિનકી મર જાતિ હૈ માં.  
-મોહમ્મદ ઁર્શિદ ઁલ-હક-સૌજન્યઃ શબ્દ સૃષ્ટી..ભારતીય ગઝલ વિશેષાંકઃ

### દીકરી:

લીલુડા પાંદડા ની ઉઘરતી વેલ હવે કંકુ ના પગલાં લઈ ચાલી.  
રાખડીના તાંતણે બાંધેલું ડળિયું હવે લાગે છે સાવ ખાલી ખાલી,  
દીકરીનો માંડવો જો સુરજને ઘેર હોત તો જાણત અંધારુ શી ઁીજ છે?  
કૂળ ના આંબામાં જે પાંદડા જુલે ઁની ભીતર કઈ મમતા નું બીજ છે?  
ધીમા પગલાંથી તું ઉંબરો ઁળગતી આંસુ ની આંગળી ઁલી  
દીકરી વળાવતા ઁવો રીવાજ છે કે પાણી સુધી વળવા જાવું  
ઉઘલતી જન ટાણે આંખ્યું તો નદીયું બની કહે પાણી સુધી વળવા આવું??  
જાગરણની રાતે તું રમતી જે રસ ઁની ખોવાઈ ગઈ રે ક્યાંક તાલી..

लीलुडा पांडा नी उछरती वेल हवे कंकु ना पगलां लई चाली।  
राभडीना तांतणे बांधेलुं इणियुं हवे लागे छे साव भाली भाली,  
अनील जोशी

तु इस कदर इंसान को बेबस ना बना ए मेरे खुदा,  
की तेरा बंदा तुझसे पहले किसी और के आगे झुक जाये.

जिन्हें सपने देखना अच्छा लगता है, उन्हें रात छोटी लगती है  
जिन्हें सपने पूरे करना अच्छा लगता है उन्हें दिन छोटा लगता है.

ना पीवानो शोभ हतो के ना पीवडाववानो शोभ हतो. मने तो भाली नजर मिलाववानो शोभ  
हतो. पण शुं कडुं, में नजर ज येवा साथे मिलावी के जेने नजरथी पीवडाववानो शोभ हतो

दुनिया में कोई भी चीज़ अपने आपके लिए नहीं बनी है। जैसे:  
दरिया - खुद अपना पानी नहीं पीता।  
पेड़ - खुद अपना फल नहीं खाते।  
सूरज - अपने लिए हररात नहीं देता।  
फूल - अपनी खुशबु अपने लिए नहीं बिखेरते।  
मालूम है क्यों?  
क्योंकि दूसरों के लिए ही जीना ही असली जिंदगी है।

क्यों बेवजह मरते हो, बेवफा सनम के लिये  
मरनेपर दो गज जर्मोन मिलेगी कफ़न के लिये  
मरना ही हे तो मरो, मिट्टी और वतन के लिये  
हसीनाए भी उतार देगी, दुपट्टा कफ़न के लिये

ऐ मुल्क तेरी बर्बादी के, आसार नज़र आते हैं...

चोरों के ही साथ खड़े, पहरेदार नज़र आते हैं...  
ये अंधेरा कैसे मिटे, तू ही बता ऐ आसमाँ...  
रोशनी के दुश्मन, चौकीदार नज़र आते हैं...  
हर गली में, हर सड़क पे, मौन पड़ी है ज़िंदगी ...  
हर जगह मरघट से बदतर हालात नज़र आते हैं...  
सुनता है आज कौन यहाँ, द्रौपदी की चीख को...  
हर जगह 'दुस्सासन' ही, सिपहसालार नज़र आते हैं...  
सत्ता से समझौता कर के, बिक गयी है लेखनी...  
खबरों को तो केवल अब, बाज़ार नज़र आते हैं...  
सच का साथ देना भी, बन गया है जुर्म अब...  
सच बोलने वाले ही, गुनाहगार नज़र आते हैं...  
मुल्क की हिफाज़त सौंपी है, जनता ने जिनके हाथों में...  
वे ही हुकुमशाह आज हमें, गद्दार नज़र आते हैं...  
खंड खंड मे खंडित भारत, रो रहा है ज़ोरों से...  
हर गली में जाति धर्म के, ठेकेदार नज़र आते हैं...

જાય તો શું થાય?

આયનામાં કોઈ ડૂબી જાય તો -  
કાયનું આકાશ તૂટી જાય તો -  
રાહમાં તો આવવાનાં જંગલો,  
ક્યાંક લીલો વાંસ ફૂટી જાય તો...  
તો ખજૂરી સાવ લીલી થૈ જશે,  
ઝાંઝવાં ભ્રમણાનાં એ પી જાય તો.  
નામ તારું ભીંત પર હું કોતરું,  
પણ સમયનો હાથ ભૂંસી જાય તો...  
બસ, હવે બેસીએ લીલા ઘાસમાં,  
માર્ગ વચ્ચે ધાસ ખૂટી જાય તો...  
શોધતાં અસ્તિત્વ મારું ત્યાં જડે,  
શબ્દના પોલાણે ફૂજી જાય તો !  
- હેલ્પર કિસ્ટી

ઉમ્મીદ એસી હો, જો મંઝીલ તક લે જાયે  
મંઝીલ એસી હો, જો જીના શીખલાયે  
જીના એસા હો જો, જો રીશ્તોકી કદર કરે  
રિશ્તે એસે હો, જો યાદ કરનેકો મજબુર કરે!

ના જાને કૌનસી રાત આખરી હોગી,  
ના જાને કૌનસી મુલાકાત આખરી હોગી,  
અભી વક્ત હૈ કરલો જી ભરકે હમસે બાંતે  
ક્યાં પતા કૌનસી સાંસ આખરી હોગી!

એક દીન જબ હુવા ઈશ્કકા અહેસાસ ઉન્હેં, વો હમારે પાસ આકાર સારા દીન રોતે રહે  
ઔર હમભી ઇતને ખુદગરજ નિકલે યારો કી, આંખે બંદ કર કર કફનમેં સોતે રહે

રાંઝા તેરી દુનિયામે પૈસા સબકા પીર, નોટોકી ખાતીર ફીર રહે હે બનકે ફકીર,  
ભૂલ ગયે રિશ્તેનાતે ઔર ભૂલ ગયે ઝમીર,  
રાંઝા માંગે પલ્સર ઔર એક્ટીવા માંગે હીર!

આજે ફરી તેને મલવાનુ મન થાય છે,  
પાસે બેસી વાત કરવાનુ મન થાય છે,  
એટલો લાજવાબ હતો તેનો આંસુ લુછવાનો અંદાજ,  
કે આજે ફરી રડવાનું મન થાય છે....

बेटा बाप से इंटेलिजेंट हो रहा है !  
अमीरों का काम अर्जेंट हो रहा है;  
गरीब बेचारा साइलेंट हो रहा है !  
रिश्वत से कार्य हैण्ड टू हैण्ड हो रहा है;  
ईमानदार बेचारा सस्पेण्ड हो रहा है !  
प्रदूषण आज हण्ड्रेड परसेण्ट हो रहा है;  
चोरी-डकैती परमानेण्ट हो रहा है !  
“फिर भी ‘देश में डेवलपमेण्ट’ हो रहा है..!”

### धણुं साऱुं:

कोकवार आवता ने ज़ता मणो छो ऐम, मणता रहे तो धणु साऱु  
होठ ना भुले तो हवे आंभोथी हैयानी वातो करो तो धणु साऱु  
पुनमनो यांए ज़्या उगे आकाशमां त्यां उछणे छे सागरना नीर  
माऱु ऐ उर हवे उछणवा याहे ऐवु बन्यु छे आज तो अधीर  
सागरने तीर तमे आवोने यांए सा भीली रहे तो धणु साऱु  
होठ ना भुले तो हवे आंभोथी हैयानी वातो करो तो धणु साऱु  
मारी छे कुंज कुंज वासंती वायरे कोयल करे छे टहुकारो  
आवो तमे तो मन टहुके आनंएमां, भीली उठे आ बाग मारो  
शाने सतावो मारी उरनी सितारना, तारो छेडो तो धणु साऱु  
होठ ना भुले तो हवे आंभोथी हैयानी वातो करो तो धणु साऱु  
कोकवार आवता ने ज़ता मणो छो ऐम, मणता रहे तो धणु साऱु  
होठ ना भुले तो हवे आंभोथी हैयानी वातो करो तो धणु साऱु - अज्ञात

### मां

लिपट जाता हूँ माँ से और मौसी मुस्कुराती है  
में उर्दू में गज़ल कहता हूँ हिन्दी मुस्कुराती है  
उछलते खेलते बचपन में बेटा ढूँढती होगी

तभी तो देख कर पोते को दादी मुस्कुराती है  
तभी जा कर कहीं माँ-बाप को कुछ चैन पड़ता है  
कि जब ससुराल से घर आ के बेटी मुस्कुराती है  
चमन में सुबह का मंज़र बड़ा दिलचस्प होता है  
कली जब सो के उठती है तो तितली मुस्कुराती है  
हमें ऐ ज़िन्दगी तुझ पर हमेशा रश्क आता है  
मसायल से घिरी रहती है फिर भी मुस्कुराती है  
बड़ा गहरा तअल्लुक है सियासत से तबाही का  
कोई भी शहर जलता है तो दिल्ली मुस्कुराती है - मुनव्वर राना

लबों पे उसके कभी बद्दुआ नहीं होती  
बस एक माँ है जो मुझसे खफ़ा नहीं होती

दिलसे कुछ देर उसे जुदा रभुं, मेरे बसमें नहीं मैं उसे ञझा रभुं  
नहीं है मेरे दिलमे सिवा उसके, मैं उसको बूलाऊ तो याद क्यां रभुं?

लम्हा लम्हा सांसे ञतम हो रही है,  
ज़ींदगी मौत के कुलो में सो रही है,  
उस बेवझा से मत पूछो मेरी मौत की वजह,  
वो तो बस जमाने को दिभाने के लिये रो रही है

कैसे हम अपनी महोबतको उसके सामने बतया करे  
वोह हमारी जिंदगी है यह कहेकर कयुं उसे हेरान करे  
हम तो उजड चुके हे महोबतकी राहो पर चलकर  
अब उसकी जिंदगीको कयुं हम वेरान करे  
छोड देंगे उसकी दुनीयाको अकदीन हंमेशा के लीये  
उसे कहे दो की वो ना ञुदको छतना परेशान करे! - दीपक

## દીકરી વિદાય

દીકરી હું તને કરું આજ વિદાય,  
મારી લાડલી ઘર છોડી ને જાય...

ફૂલોથી તારી રાહ સજાવી,

આંસુ થકી આંખ છલકાય,

સુખ નો સૂરજ આંગણ મલકાય,

દુઃખ કેરી છાયા દૂર દૂર જાય,

મારી લાડલી ઘર છોડી ને જાય...

બાળપણ તારું મારી સંગ વિતાવ્યું,

હરપળ એ ક્ષણ ને વિચારું,

આંસુ ને ખુશાલી તારા,હૃદયે મેં આજ ખંડારી,

તારા સ્મિતથી આખું ઘર મલકાય,

મારી લાડલી ઘર છોડી ને જાય...

તારા જનમની એ શુભ વધામણી,

હરપળ એ ક્ષણને સંભારું,

પિતા નહીં, એક સાચા મિત્ર બની,

તારા નજૂક હાથને થામ્યો,

તારા નાજુક પગલાની આહટ,

આજ હજુ એ આહટ સંભળાય.

મારી લાડલી ઘર છોડી ને જાય...

સૂરજ ઉગશે,તારા ઊગશે,

ચાંદની ચંદા સાથ ચમકશે,

તારી ચુડી ,તારા પાયલ,

સાસરીયાના આંગનમાં છનકશે,

સુનું સુનું આ ઘર મારું,

તારી યાદો હરપળ આવે,

તું નથી આ ઘરમાં તોયે,  
તારી હાજરી હરક્ષણ વર્તાય,  
મારી લાડલી ઘર છોડી ને જાય...

તમે છલકાતું રૂપસરોવર, અમે ખાલીખમ બેડું,  
જરા સજન સમજાવ મને, કેમ તરસ હું રેડું? હેમંત ગોહિલ

### નિવૃત્ત જીવન

જ્યારે થયો નિવૃત્ત ખૂણામાં ધકેલાતો ગયો  
જીવતે જીવત સ્મરણમાંથી ભુંસાતો ગયો.  
જિંદગીભરની કમાણી પુસ્તકો એવું બધું,  
રોજ એ ભંગારમાં, પસ્તીમાં વેચાતો ગયો.  
સાંજ પડતા રાહ જોતું કદી'ય આખું ઘર,  
છે હવે ઘરમાં અને ઘરનાથીય ભૂલાતો ગયો.  
જાય ક્યાં? પાસે વઘારે એકલું મંદિર હતું,  
સાંજના ઈશ્વર કને એ ઠોકરો ખાતો ગયો.  
કાલ એમ્બ્યુલન્સ આવીતી અચાનક રાતના,  
ત્યારથી કેવળ કુતુહલવશ એ ચર્ચાતો ગયો.  
કેટલો ખુશ થાત, એણે જોયું હોત દ્રશ્ય આ,  
બેસણું રાખ્યું હતું એ હોલ, છલકાતો ગયો. રાજેશ વ્યાસ-મિસ્કીન

ક્રિકેટરો નો વાક નથી, આ દુનીયા આખી ફિક્સ છે,  
નેતાઓ ને ખાદી અને પોલીસ ને ખાખી ફિક્સ છે.  
સોનોગ્રાફી ની શોધ થતા બાબો કે બેબી ફિક્સ છે,  
મોત નુ ભલે નક્કી નથી, પણ મરવા નુ તો ફિક્સ છે.  
બોગસ વોટીંગ થાય પછી ચુંટાવા નુ ફિક્સ છે,



ને પ્રજા ના પૈસે પ્રધાનો ને પરદેશ જવાનું ફિક્સ છે.  
ગોખેલા વચનો ની વર્ષા, વરસવાનું ફિક્સ છે.  
ને વફાદારી ના સોગંદ ખાઈ ની મારી ખાવાનું ફિક્સ છે.  
ડોનેશન આપો ડુંટી ઉપર, એડમીશન તો ફિક્સ છે,  
કુટી ગયેલા પેપર ઉપર એક્ષામીનેશન તો ફિક્સ છે.  
ઇન્ટર્વ્યુ ઓપન રાખે, પણ સીલેક્શન તો ફિક્સ છે,  
જ્યા કારકુન, જ્યા કચેરી, કરપ્શન તો ફિક્સ છે

રડ્યા બેફામ સૌ મારા મરણપર એજ કારણથી,  
હતો મારો જ એ અવસર અને મારી હાજરી ન હતી! - બેફામ

કોઈ સાથે લાગણી બંધાય છે,  
મૂળ દુઃખના ત્યાં જ નખાય છે  
પોતપોતાની ઉકેલે સૌ વ્યથા,  
ક્યાં પીડાઓ પારકી વેચાય છે?  
એમનાથી માળવા પહોચાય નહીં,  
જેમનું મન હરઘડી શંકાય છે!  
વાર્તા શરૂઆતમાં સારી ભલે,  
વાતે વાતે એ પછી વંકાય છે.  
રંગ સંસારી બધા ભોઠા “કિરીટ”,  
સાવ ઠાલી આંખ આ અંજાય છે! - કિરીટ ગોસ્વામી

હમસે ઝ્યાદા કોઈ બેચૈન ક્યાં હોગા,  
હમસે ઝ્યાદા કોઈ બેતાબ ક્યાં હોગા,  
ઉનકી યાદો કો બાહો મેં લેકર સોચે રહે,  
ઇસે ઝ્યાદા ઉનકે પ્યાર કા જવાબ ક્યાં હોગા.....???

મરવા માટે થોડું ઝેર કાઢી છે દોસ્તો  
પરંતુ જીવવા માટે ઘણું ઝેર પીવું પડે છે!

દુઃખી થાવાને માટે કોઈ ઘરતી પર નહીં આવે;  
હવે સદીઓ જશે ને કોઈ પયગમ્બર નહીં આવે  
હવે તો દોસ્તો ભેગા મળી વહેંચીને પી નાખો,  
જગતનાં ઝેર પીવાને હવે શંકર નહીં આવે.- -અજ્ઞાત

કદમ રુક ગયે જબ પહુંચે હમ બાજાર મેં,  
બિક રહે थे रिश्ते खुले आम व्यापार मેं,  
कांपते पूछा- क्या भाव है रिश्तो का..

दुकानदार बोला- कौनसा लोге?  
बेटे का दूँ या बाप का,  
बहन का दूँ या भाई का,  
कौनसा लोगे,

इंसानियत का दूँ या प्यार का,  
दोस्ती का या विश्वास का,  
बाबूजी क्या दूँ.. बोलो तो सही..  
चुपचाप खडे हो मुंह खोलो तो सही...

मैंने डर के पूछा...  
'माँ' का रिश्ता.....  
दुकानदार नम आँखों से बोला..

संसार इसी रिश्ते पर तो टिका है बाबू

માફ કરના.. યે રિશ્તા બિકને કો નહીં..  
ઇસકા કોઈ મોલ નહીં લગા પાયેગા...  
યે બિક ગયા તો સંસાર ડજડ જાયેગા...હૈપ્પી મદર્સ ડે

અમારા કવનમાં તમારી અસર જાનદાર છે,  
બધાયે કહે છે તમારી ગઝલ શાનદાર છે.

મને રોજ આદત પડી આપની રાહ જોવાની હવે,  
અહિયા જીવવું આપની રાહમાં ધારદાર છે.

તમે રોજ સપનામાં આવો એ ગમે છે મને  
અને એ ઝલક રોજની રોજ તો સારવાર છે.

ન સમજાય દીવાનગી, કાકલૂદી કદી અહી,  
હદયની બધી વાતો શબ્દો થકી આરપાર છે.

ગ્રહો ને નક્ષત્ર હાલ દૂરી નિભાવે છતાં કદી,  
બધું સમુસુતર પાર થાવા તમારી મદાર છે.

હતો પ્રાસ વગડાઉ, મારા કવનનો અહી કદી,  
હવે જોઈ લ્યો ત્યાં, કવન-વૃક્ષમાં પણ બહાર છે - નરેશ.કે.કોડિયા

## મારી નિવૃત્તિએ

ફૂલોના ગુલદસ્તા વહાવે ફોરમ છે;  
સાથે નોકરી છોડો વહીવટી હુકમ છે;  
ઉંમરની આડશે ઘડાયેલો નિયમ છે,  
પાલન કરવું હસીને આપણો ધરમ છે;  
પડેલી કરચલીથી કયાં મને શરમ છે  
પૂરાં કરવા બાકી રહેલા હવે કરમ છે;  
થાક્યો છું એ દુનિયાનો ભરમ છે

મન મક્કમ છે,તન સક્ષમ છે !

મન મક્કમ છે,તન સક્ષમ છે !

"વિશેષ"-અનીલ ધીવાળા

## દીકરી:

દિકરી તારા સોભાગ્યનું સિંદૂર આજ ઘોળી લાવ્યો છું,  
વિઘાતાએ જે લખ્યું હતું તે સરનામું શોધી લાવ્યો છું,  
કાળજા કેરો કટકો તુ,વેગળી નથી કરી ક્યારેય ,  
તારી ને મારી જુદાઇનું કોઇને વચન દઇને આવ્યો છું,  
દિકરી તારા માટે આજ પાનેતર લઇને આવ્યો છું,  
સપના મારા જે હતા પાલવમાં બાંધી લાવ્યો છું,  
પારકી અમાનત છે તુ બીજાની ક્યાં સુધી સંભાળુ,  
ભારે હૈયે તારી કંકોત્રી હેતના તેડા લખવા લાગ્યો છું,  
ઢીંગલી જેવી લાડલી માટે રણઝણ અંઝર લાવ્યો છું,  
હૃદય મારું રડે છે પણ મુખ પર સ્મિત લાવ્યો છું,  
પથ્થર જેવો બાપ પણ રડી પડે છે દિકરી ની વિદાયથી,  
આંગણું મારૂં સુનું થાશે હું વિવશ બની ઉભો છું,  
સંસાર તારો સ્વર્ગ બને એજ આશિષ ગુંથી લાવ્યો છું,  
દર્પણ છે તુજ મારૂં એવો અરીસો લાવ્યો છું,  
પારકાને પોતિકા ગણી બન્ને કુળને શોભાવજે ,  
લુછી નાંખ આંસુ દિકરી ખુશીનો અવસર લાવ્યો છું,  
ખુણે ખુણે સંભળાશે તારો નાદ ,હરપળે આવશે અમોને તારી યાદ,  
કોને પાડીશું હવે અમે સાદ, સાસરવાસને શોભાવજે એવી અમ આસ.  
-લેખક અજ્ઞાત

## મારી લાડલી દીકરી:

દીકરી તારા વીનાની સુકી મારા સંસારની વાડી !  
કુલો વીના સુની પડી વાડી યાદ કરજે દીકરી મારી  
ઉર્મી તણો કો છોડ ઊગ્યો પણ અન્નજળ થયા પુરા

સ્નેહના ખાતરથી ખીલવી હતી કુલ સમી દીકરી મારી  
લેખ હશે ત્યારે તારી યાહે દીકરી દોડી આવજે  
પંચમ સુરે પાપાની યાદમાં ગીતો ગાશે દીકરી મારી  
મારે માથે હેતાળ હાથ ફેરવી પુછે ખબર મારી  
કોઈ જુવે ના તેમ છાની ખબર લેશે દીકરી મારી  
ઉછળતી કુદતી ને હસતી ગાતે ખોળે રમતી મારા  
શાંત ઝરણાંની જેમ દુર વહેતી રહેશે દીકરી મારી  
જીવનની ઉર્મિઓને ખોળે ભરી દીકરી સાસરે જશે  
હૈયામાં જીવનભર એક ખાલિપો ભરી જશે દીકરી મારી  
સુખ અને દુખની આવન-જાવન નશીબના ખેલ  
ના અડકે એકેય દુઃખ તને સુખી રહેજે દીકરી મારી - -નરેશ કે.ડોંડીયા

### દીકરી ચાલી સાસરે:

ખેલતું કૂદતું ફળિયું લઇને, દીકરી ચાલી સાસરે  
આંગણું ધરનું સૂનું કરીને, દીકરી ચાલી સાસરે  
બારી-બારણા ય રડતાં મૂકી, દીકરી ચાલી સાસરે  
છોડી ગુંજતાં ધરનો સાથ રે, દીકરી ચાલી સાસરે  
સખીઓ સાથે જનેતા ભળી, શ્રાવણ વરસે નયન,  
માને મેલી પિતાને સાથ રે, દીકરી ચાલી સાસરે  
આંખો બની દરિયો આજ, દીકરી ચાલી સાસરે  
બાપને મૂકી ભાઈને આશરે, દીકરી ચાલી સાસરે  
શ્યામના આંસુ શેં સુકાય, દીકરી ચાલી સાસરે

### દીકરીની વિદાય બાદ ઘર ભેંકાર લાગે:

આ ઓરડો, આ ઓસરી, આ ફળિયું, હવે  
લાગે સાવ સૂનાં સૂનાં, દીકરી વિદાય પછી.  
સદાય હસતી આંખમાં ઘટના બની નવી,  
આંસુ વહ્યાં ઊના ઊના, દીકરી વિદાય પછી.

હંમેશા હેતથી બોલાવતી,ને પ્રેમથી પુકારતી,  
એ અવાજ પડઘાય ઓરડે, દીકરી વિદાય પછી.  
આ બારણું, આ મંડપ ઊભા સાવ સૂનાં,  
લટકે છે તોરણ આંસુનાં, દીકરી વિદાય પછી.  
આસોપાલવના તોરણ અને ઉદાસ આ હવા  
વૃક્ષો ઊભા બધાં છાનામાના, દીકરી વિદાય પછી.  
ઊડી ગયું પંખી, કલરવ કરતું આંગણેથી,  
લ્યો, ધૂધવે છે દરિયા લૂના, દીકરી વિદાય પછી.  
આ પાદર આખુંય હિબકાં ભરે ને  
હૈયડાં વલોવાય, શ્યામનાં, દીકરી વિદાય પછી.

-ઘનશ્યામ વઘાસીયા

બड़े अजीब हैं ये जिन्दगी के रास्ते,  
अनजाने मोड़ पर कुछ लोग  
दोस्त बन जाते हैं.  
मिलने की खुशी दें या न दें,  
बिछड़ने का गम जरूर दे जाते हैं.

मौत तो नाम से ही बदनाम है ,वरना  
तकलीफ तो जिन्दगी ही देती है.

મંઝિલ માનવીના મનોબળને અજમાવે છે,  
સપનોના પડદા આંખો પરથી હટાવે છે,  
કોઈ પણ વાતે હિંમત હારશો નહીં,  
કારણ કે ઠોકર જ માનવીને ચાલતા શીખડાવે છે - અજ્ઞાત

## ત્યારે પ્રોબ્લેમ થાય છે

પાણી વગર હોડી ના ચાલી શકે એ હકીકત છે  
પણ હોડીમાં પાણી આવી જાય ત્યારે પ્રોબ્લેમ થાય છે  
પૈસા વગર સારી રીતે ના જીવાય એ હકીકત છે,  
પણ પૈસો માણસને નમાવી જાય ત્યારે પ્રોબ્લેમ થાય છે  
સંબંધ વિના માનવી અધુરો છે એ હકીકત છે,  
પણ પોતાનું માણસ રડાવી જાય ત્યારે પ્રોબ્લેમ થાય છે  
વિશ્વાસ રાખ્યા વગર ચાલતું નથી એ હકીકત છે,  
પણ કોઈ ખોટો લાભ ઉઠાવી જાય ત્યારે પ્રોબ્લેમ થાય છે  
કોઈ માણસ પોતે સર્વજ્ઞાની નથી એ હકીકત છે,  
પણ કોઈ અધુરો બહુ છલકાઈ જાય ત્યારે પ્રોબ્લેમ થાય છે-રજુઆત: પ્રવીણ મહેતા

અપને ગમકી નુમાઈશ ન કર,  
અપને નશીબકી આજમાઈશ ન કર,  
જો તેરે હૈ તેરે પાસ ખુદ આર્યેંગે,  
હરરોજ ઉન્હેં પાનેકી ખ્વાહિશ ન કર,  
છૂ લે તૂ આસમાન, જમીનકી તલાશ ન કર,  
જી લે જિંદગી તૂ, ખુશીકી તલાશ ન કર,  
તકદીર બદલ જાયેગી અપને આપહી દોસ્ત,  
મુશ્કુરાના શિખ લે, વજહની તલાશ ન કર! - રેખા શર્મા

બદલા જો વક્ત તો ગેહરી મુહોબત્ત બદલ ગઇ,  
સુરજ ઢલા તો સાયેકી સૂરત બદલ ગઇ,  
એક ઉંમર તક હમ ઉનકી જરૂરત બને રહે,  
ફીર ચું હુવા કી ઉનકી જરૂરત બદલ ગઇ!

બોટલ પે બોટલ પીને સે કયા ફાયદા દોસ્તો...  
રાત ગુજરી તો સારી ઉતર જાયેગી,

અગર નશા હી કરના હૈ તો ,  
સિફ એકબાર કિસીકી બેવફાઈ પીઓ,  
પ્યારકી કસમ ઉમર સારી નશેમે ગુજર જાયેગી!

તેરી દુનિયામે એ મંઝર કયું હૈ?  
કહી ઝખમ તો કહી પીઠમે ખંજર કયું હૈ?  
સુના હૈ કે તુ હર જગહમે રહેતાં હૈ  
તો ફીર જમીપે કહી મંદિર તો કહી મસ્જીદ કયો હૈ?  
જબ રહેનેવાલે ઇસ દુનીયાકે હૈ તેરે હી બંદે,  
તો ફીર કોઈ કિસીકા દુશ્મન તો કોઈ કિસીકા રાહબર કયો હૈ?  
કહેતે હૈ કે તુ બનાતા હૈ લોગોકા મુકદ્દર,  
તો ફીર કોઈ બદનશીબ ઓર કોઈ મુકદ્દર કા સિકંદર કયો હૈ? – અજ્ઞાત

જ્યારે પણ તેના ઘર પાસેથી નીકળું છું તો એ દરવાજો બંધ કરી દે છે  
અફસોસ એ નથી કે એ દરવાજો બંધ કરી દે છે,  
પણ ખુશી એ વાતની છે મિત્રો કે એ આજે પણ મારા પગરવ ઓળખી લે છે!

## રાધા અને મોરલી

અર્જુન પૂછી બેઠો કૃષ્ણ ને વધુ વહાલુ શું છે તમને, મોરલી કે રાધા ?  
જવાબમા શ્રી કૃષ્ણ બોલ્યા.  
મોરલી મારો રાગ છે ને રાધા મારો સાદ છે.  
મોરલી મારો સુર છે ને રાધા મારૂ રૂપ છે.  
મોરલી તો મારી સાથી છે ને રાધા મારી રાની છે.  
છાયો છે મોરલી ને પડછાયો છે રાધા.  
મોરલી મારો હક છે તો રાધા મારો અધિકાર છે  
જેમ મોરલી વિનાનો કૃષ્ણ અધુરો  
તેમ રાધા વિનાનો શ્યામ અધુરો,



એટલે મોરલી કરતા મને રાધા વધારે વહાલી છે,  
કારણ કે મોરલી હું છું એટલે તેને તરછોડીસ તો દુખ મને જ થશે  
પરંતુ રાધા મારો પ્રેમ છે એટલે તેને તરછોડીસ તો દુનિયા આખી ને દુખ લાગશે  
તેથી ગોકુળ મુક્યા પછી મેં મોરલી નથી વગાડી  
કારણ કે પછી મને રાધા ક્યાંય મળી નથી - p.v.dodiya

## દવા શોધી તમે લેજો ...”ભાવ”--’ભાવિન ગોપાણી

પહાડો માં નવો રસ્તો હવે ખોદી તમે લેજો .  
તમારી પાંપણોથી પથ્થરો તોડી તમે લેજો .  
જમાનાની રસમથી આપ પણ વાકેફ થઈ જાઓ ,  
દરદ આપું તમોને હું , દવા શોધી તમે લેજો .  
સફરમાં આંગળી ચીંધી , ઘણાં પાછા વળી જાશે ,  
અને કહેશે કે આગળની સફર , ફોડી તમે લેજો .  
ખબર પડશે છે શું સાગર, અને શું હોય છે આફત !  
વમળની પાસથી ક્યારેકતો હોડી તમે લેજો .  
ઉઠાવેલા તમારા હાથનો , અફસોસ જો સાલે ,  
અહમ હેઠે મુકીને હાથ બે જોડી તમે લેજો .  
બધા મતભેદ ને મનભેદ ભૂલી મિત્રતા કરવા ,  
જરા આગળ વધે કોઈતો જરા દોડી તમે લેજો ...

## બધું ચોરી તમે લેજો..ચિરાગ ઝા “ઝાઝી”

તમે લેજો નવો મારગ, દિશા નોખી તમે લેજો,  
નવા રસ્તા નવા નક્શા હવે દોરી તમે લેજો.  
તને ચાહું, તને પૂંજું, તને મારો ગણું ઈશ્વર,  
શ્રદ્ધા મારી બને પથ્થર, તરત તોડી તમે લેજો.  
તરસ મારી તમે છો તો, તડપ મારી તમે જૂવો,

પ્રણયના આ દરદ કેરી દવા શોધી તમે લેજો.  
સજળ આંખે રહું ક્યાંથી, મળી સોબત સહારાની,  
નથી જોયું અમે મૃગજળ, જરા ગોતી તમે લેજો.  
હશે ચાલો તમે જીત્યા, અમે હારી ગયા બાજી,  
હવે માનો અમારું તો, બધું ચોરી તમે લેજો.  
નથી ગમતા હવે રંગો, નથી ગમતા ચમન, ઉપવન,  
સુકલ ટહુકો વળાવ્યાની, દશા જોઈ તમે લેજો.

### બધુ ફોડી તમે લેજો ....સ્પર્શ – મોહસીન મીર

દરદ આપુ તમોને હું , દવા શોધી તમે લેજો  
તબીબો તો ઉપસ્થિત છે ખૂદા ગોતી તમે લેજો  
સમય છુ હું સમયસર થર બનાવું જીન્દગાની  
પર સ્મરણનો પાવડો લઇને ઝખમ ખોદી તમે લેજો  
સબર તો લોહિમા છે મરજીવાના એટલે કહે છે  
મને છીપલા જ આપી દો ભલે મોતી તમે લેજો  
દિવસને રાત વચ્ચે સાંજ આ અટકી જતી લાગે  
સૂરજના અસ્ત થાવા લગ નિશા ખોળી તમે લેજો  
અગર ફિસ્કું તરલ લાગે કદિ જો આખુયે જીવતર,  
જરા લઇ સુ:ખ અને દુ:ખ ચમચીથી ઘોળી તમે લેજો.  
ખૂમારી સાથ જીવો છો પ્રભુને જાણ છે એની  
નહિ વચમાં પડે ઇશ્વર બધુ ફોડી તમે લેજો

### દવા શોધી તમે લેજો—મુહમ્મદઅલી વફા

બધા આ લાગણીનાં બંધનો જોડી તમે લેજો

અમે લેશું હલેસું તો પછી હોડી તમે લેજો  
મળે જે પણ મુકદરથી વહેંચીને ભલા પીશું,  
બધા વિષના કટોળાઓ જરા શોધી તમે લેજો.  
પછી આ ફૂલની ખૂશ્બૂ થકી મ્હેકી જશે ગુલશન,  
ઊગેલા દ્વેષનાં કંટક બને તોડી તમે લેજો.  
પ્રણયની આ રમતમાં તો ઘણી એ વેદના થાશે,  
દરદ આપું તમોને હું, દવા શોધી તમે લેજો  
હૃદયનું રક્ત બાળીને, તમોને યાદ પણ કરશું,  
વિરહનાં અશ્રુ ભીનામાં નયન બોળી તમે લેજો.  
વફા આ જિંદગીની કટુ સફર ગુલતાન થૈ જાશે,  
અમારી પાંખ સાથે પંખ તમ જોડી તમે લેજો.

સ્વપ્ન પાછળ આયખું ખર્ચી શકું,  
ઘારુ તો હું ઝાંઝવા પણ પી શકું.  
એ ભલે બદલ્યા કરે આબોહવા,  
હું અચળ છું, રંગ ને બદલી શકું.  
આ તો એની આંખ સઘળું બોલતી,  
ના લખ્યું હો એ'ય હું વાંચી શકું.  
લાગણીને બાંધવી જો હોત તો  
સાવ કાચા દોરથી બાંધી શકું.  
દુશ્મનોને રોજ ક્યાં જઈ શોધવા ?  
દોસ્તની પણ આંખમાં ખટકી શકું - મેહુલ એ. ભટ્ટ

કેમ મરો છો ગભરું બેવફા સનમ માટે  
એ દુપટ્ટો પણ નહીં આપે તમારા કફન માટે

મરવું જ હોય તો મરો વતન માટે  
કંઈ નહીં તો તિરંગો તો મળશે કફન માટે!

જાહિદ શરાબ પીને ડે મસ્જિદમે બેઠકર,  
યા વો જગહ બતા, જહાં ખુદા નહીં હૈ! - મીર્ઝા ગાલીબ  
મસ્જિદ ખુદાકા ઘર હૈ, પીનેકી જગહ નહીં હૈ  
કાફિર કે ઘરમે જા, વહાં ખુદા નહીં હૈ! - અલ્લામાં ઇકબાલ  
કાફિર કે દિલસે આયા હું, ચે દેખકર,  
ખુદા મોજૂદ હૈ વહાં, પર ઉસે પતા નહીં! - અહમદ ફરાઝ

અહીં કોણ ભલા ને પૂછે છે ?  
અહીં કોણ બૂરા ને પૂછે છે ?  
મતલબ થી બધા ને નિસ્બત છે ,  
અહીં કોણ ખરા ને પૂછે છે ?  
અત્તર થી નીચોવી કોણ અહીં  
ફૂલો ની દશા ને પૂછે છે ?  
આતો સંજોગ ઝુકાવે છે નહીતર  
અહી કોણ ખુદા ને પૂછે છે ???

ડોક્ટરની ભૂલો કબરમાં દટાઈ જાય છે;  
વકીલની ભૂલો ફાઈલમાં દટાઈ જાય છે ;  
એન્જીનીયરની ભૂલો ઈમારતમાં ચણાઈ જાય છે;  
પણ શિક્ષક ની ભૂલો સારા સમાજમાં છવાઈ જાય છે !!!

શ્વાસ જો શરીરને ટકાવે છે તો વિશ્વાસ સબંધને ટકાવે છે

કોઈપણ સંપૂર્ણ સંસ્કારી નથી હોતું, અંતિમ સંસ્કાર તો બીજા જ આપે છે!

## HINDI FILM SONGS & THEIR MEDICAL INTERPRETATIONS

જીયા જલે જાન જલે, રાતભર ધુઆ ચલે : **FEVER**

તડપ તડપ કે ઇસ દિલ સે આહ નીકળતી રહી : **HEART ATTACK**

જુદા હો કે ભી તું મુઝમે કહીં બાકી હૈ : **CONSTIPATION**

બીડી જલાઈ લે જીગરસે પિયા જીગરમાં બડી આગ હૈ : **ACIDITY**

તુઝમે રબ દીખતા હૈ યારા મૈ ક્યાં કરું : **CATARACT**

તુઝે યાદ ના મેરી આયી કિસી સે અબ ક્યાં કહેના : **ALZHEIMERS**

મન ડોલે મેરા તન ડોલે : **VERTIGO.**

ટીપ ટીપ બરસા પાની, પાની ને આગ લગાઈ : **BURNING SENSATION WHILE URINATING**

દિલ ઘડક ઘડક કે કહે રહા હૈ : **HIGH BP**

આજ કાલ પાઉં જમીનપર નહીં પડતે મેરે : **CORN ON FEET**

હાય રે હાય નીંદ નહીં આયે : **INSOMNIA** - અજ્ઞાત

પ્રેમ ઇશક અને મહોબ્બત .....

એ બધું સ્ટોક માર્કેટ જેવું છે.

આમાં તો એવું છે કે ફાવી ગયા તો ...

હર્ષદ મહેતા.....

નહિતર....

નરશી મહેતા !!!!!!!

\*બુદ્ધીની વાતો, ને સમજ ની વાતો..

ધુવડ કરી રહ્યુ છે સુરજ ની વાતો..

એ હતા ઉતાવળમાં એટલે દોસ્તો....

બે ઘડી બેસી કરી ગયા ધિરજ ની વાતો - વિઝન રાવલ ” વિજ “

ज्यादातर समय

उन बातों का अर्थ ढूँढने में बीत जाता है,  
जो निरर्थक होती हैं..!!!

यार, अपने साथ ही तो जीना है ज़िंदगी भर  
खुद को बेहतर बनाने की कोशिश कर रहा हूँ,  
ताकि अंतिम क्षणों तक जीने का मज़ा आये !

बचपन से जवानी तक काफी वक़्त बिता दिया सीखने में,  
उससे ज्यादा वक़्त लग रहा है कई ग़लत सबक़ भुलाने में..!!

\*प्रार्थनाમાં હું માંગું છું ઉપરવાળાથી યાતના,  
મુન્તઝીરને આમ પણ ગમની વધુ છે યાહના.  
કડવી, મને ચૂભતી ખૂંચતી તારી યાદ છે, તારી ભાવના,  
સિતમગરોની મહેફિલમાં મેં સાંભળી છે તારી નામના.  
હસરતોને દફનાવી દીધી પણ હજી જીવે છે તારી કામના,  
ભીંજેલા નયનો શોધી રહ્યા છે તારા આવવાની સંભાવના.  
પ્રાર્થનામાં હું માંગું છું ઉપરવાળાથી યાતના,  
મુન્તઝીરને આમ પણ ગમની વધુ છે યાહના - મુન્તઝીર

\*ગુજરી હુઈ જિંદગી કો કભી યાદ ન કર,.....તકદીર મેં જો લિખા હૈ ઉસકી ફરિયાદ ન કર.  
જો હોગા વહ હોકર હી રહેગા....તૂ ફિકર મેં અપની હંસી બરબાદ ન કર.!!!!

કોન કિસે દિલ મેં જગહ દેતા હૈ..પેડ ભી સુખે પત્તે ગીરા દેતા હૈ..  
વાકિફ હૈ હમ દુનીયાકે રીવાજોસે..મતલબ નિકલ જાયે તો હર કોઈ હુકરા દેતા હૈ..

ખુશીયોકા એક સંસાર લેકે આયેંગે...પતઝડ મેં ભી બહાર લે કે આયેંગે...  
જબ ભી પુકારો આપ પ્યારસે હમેં, ... જિંદગી સે સાંસે ઉઘાર લે કે આયેંગે.....

તમારી ઉડતી જુલ્ફોને જરા કાબુમાં રાખો....  
હજારોના દિલ ઘાયલ થયાં છે... હવે તો માથામાં તેલ નાખો....!!!

વક્ત ફિસલતા હૈ રેત કી તરહ... હમ બસ ઉસે સંભાલના ભૂલ જાતે હૈ.....  
કુછ લોગ બહુત ખાસ હોતે હૈ જિંદગીમે....હમ બસ ઉસે બતાના ભૂલ જાતે હૈ.....

સંગીત સુનકર જ્ઞાન નહિ મિલતા... મંદિર જાકર ભગવાન નહિ મિલતા....  
પથ્થર કો લોગ ઈસલિયે પૂજતે હૈ ક્યોંકિ વિશ્વાસ કે લાયક ઇન્શાન નહિ મિલતા....

કોઈના અવગુણોને તુ બેનકાબ ના કર,.....  
ઈશ્વર બેઠો છે, તુ હિસાબ ના કર....

સદા એનેય સહરામાં પડી રહેવું નથી ગમતું  
કદી વંટોળની વાટે વિહરતી હોય છે રેતી  
દિવસ ને રાત સૌ 'બેફામ' છે પળનાં પરિવર્તન  
સમયના ફેરફારે માત્ર ફરતી હોય છે રેતી -બરકત વિરાણી 'બેફામ'

કોઈ ને ખબર નથી કે આ રસ્તો ક્યાં જાય છે?  
થાકેલા છે બધાય પણ છતાંય ચાલતા જાય છે.  
કોઈ ને સામે ખુરશી કે કોઈ ને રૂપીયો દેખાય છે.  
તમેજ કહો દોસ્તો શું આને જ જીંદગી કહેવાય છે?

હમને માંગા થા સાથ ઉનકા  
વો જુદાઈકા ગમ દે ગયે  
હમ યાંદો કે સહારે હી જી લેતે

વો ભૂલ જાનેકી કસમ દે ગયે!

મૌત પે ભી મુઝે યકીન હૈ!  
તુમ પે ભી મુઝે ચૈતબાર હૈ!  
દેખના હૈ પહેલે કૌન આતા હૈ  
હંમે દોનોકા ઇન્તઝાર હૈ!

નાગર ન્યારી

નવભિ: નાગરા: સ્મૃતા: :)

શિક્ષણકે સંસ્થામાં, રાજનીતિ કે ધંધામાં,  
રંગભૂમિકે રણભૂમિ જ્યાં નિરખું ત્યા નાગર છે.  
પાટખાટનેહોય હિંડોળા ખાટ રૂડી બાજઠ છે,  
ડબોપાનનો હોય સમીપ તો નિશ્ચય એ નાગર છે.  
કલાકાર, સાહિત્યકાર, વિધવાન પ્રથમ પંક્તિનો,  
ધર્મઅર્થ ને કામ મોક્ષને કાજે સદા ખંતીલો,  
કલમ, કડછી ને બરછીનો એ કસબી જાદુગર છે.  
ભલેન પૈસાદાર છતાં એ પાણીદાર તો છે,  
અમીરનથી પણ ખમીરથી એ ખુશબૂદાર તો છે.  
બગડ્યોતો કોડીનો, નહિતો દિલનો સાગર છે.  
નાતનીરંગતમાં, પંગતમાં પીળા પીતાંબરપહેરી  
બેઠોપાંટલે લલાટ અર્ચા કરી કેસરી ઘેરી  
જાજ્યાં શ્લોકોની રમઝટ એ ધરતીથી અધ્ધર છે.  
શિવશંકરનેશરણે એ છે અંબામાને ખોળે,  
એનીરક્ષા કરે નિરંતર શિવને શક્તિ સજોડે,



નારનાગરી ગરબે જ્યાં ઘુમ્મર લઇ ઘુમ્તી ગરજે,  
ત્યાંત્રણે ભૂવનની મહારાણી મા અંબા હાજર છે.  
હાટકેશપરિવાર તમારો આલમમાં આગળ છે - શ્રી શરદ જોષી

નોંધ: નાગર લોકો ખુબજ કાબેલ અને હોશિયાર ગણાય એટલે જ એમના વીશે કટાક્ષમાં નીચે  
મુજબ કોઈએ વાત લખી છે.

નાગરનો મતલબ જાણો છો?

પહેલા બે અક્ષર નાગ એટલે ઝેર

બીજો અને ત્રીજો અક્ષર ગર એટલે પરવલ્લીનો ગર એટલે ઝેર

પહેલો અને ત્રીજો અક્ષર નાર એટલે ઝેર.....બોલો શું કયો છો?

ના ઇધર કે .....ના ઉધર કે રહે .....બીચ અદ્ધર અટકે રહે

ના ઇન્ડિયા કો ભૂલા સકે,ના અમેરિકા કો અપના સકે,બસ,ઇન્ડિયન-અમેરીકન બન કે ચલતે રહે ....

ના ગુજરાતી કો છોડ સકે,ના અંગ્રેઝી કો પકડ સકે,દેસી accent મેં ગોરોં કો confuse કરતે ચલે...

ના ટરકી કો પકા સકે ...ના ગ્રેવિ બના સકે.....મુર્ગી કો દમ દે કે thanksgiving મનાતે ચલે .....

ના Christmas ટ્રી લગા સકે,ના બચ્ચોં કો સમજા સકે Diwali,પર Santa બનકે gifts બાંટતે ચલે

ના શોર્ટ્સ પહેન સકે, ના સલવાર છોડ સકે,jeans પર કુર્તા ઔર sneakers ચઢા કે ઇતરાતે ચલે.

ના નાશ્તે મેં donut ખા સકે,ના ખીચડી કઢી ભૂલા સકે,પિઝ્ઝા પર મિચીં છીડક કર મઝા લેતે રહે

ના ભૂલા સકે ગર્મિયો કો,ના બરફ કો અપના સકે,ખિડકી સે સુરજ કો દેખે,"beautiful day" કેહેતે રહે

અબ જબ આચી બારી ભારત જાને કી...તો ...હાથ મેં પાની કી બોતલ લે કર ચલે .....

લેકિન વહાં પર ...ના તો ભેલ પૂરી ખા સકેં .... ના તો લસ્સી પી સકેં.....બસ .... પેટ કે દદં સે

તડપતે મારે.... હરડે ઔર ઇસબગુલ ખા ખા કે કામ ચલાતે રહે .....

ના મચ્છર સે ભાગ સકે....ના ખુજલી કો રોક સકે ...cream લગા લગા કે કામ ચલાતે રહે ....

ના ફકીરો સે બચ સકે.....ના ડોલર કો છુપા સકે .....નૌકરો સે ભી પીછા છુડા કર ભાગતે રહે .....

ના સંડાસ પર બૈઠ સકે,ના કોમોડ કો ભૂલા સકે,બસ બીચ અદ્ધર ઝુકે ઝુકે જૈસે તૈસે કામ ચલાતે રહે  
ના ઇધર કે રહે ના ઉધર કે રહે .....કમ્બક્ત ....કહીં કે ના રહે ....  
બસ 'ABCD ' ઔલાદ કો....ઔર confuse બનાતે ચલે .....

ના ઇધર કે રહે ના ઉધર કે રહે ..... બીચ અદ્ધર અટકે રહે.....

શ્વાસોની રફતારને વધારી ગયું કોઇ,  
સ્વપ્નાનાં મહેલને સજાવી ગયું કોઇ.  
કોણે વરસાવ્યા છે આ મેઘધનુષ્યનાં રંગો,  
ભર ઉનાળે મને ભીંજવી ગયું કોઇ.  
આંખેથી નીંદર ઊડાવી ગયું કોઇ,  
અધરોની પ્યાસ વધારી ગયું કોઇ.  
રોમરોમમાં ઘબકે છે વિરહની વેદના,  
થીજી જતી ટાઢમાં બાળી ગયું કોઇ.  
જીવવાનો અભરખો વધારતું ગયું કોઇ,  
માયાની કેડીએ સંગાથી બન્યું કોઇ.  
કોણ છેડી ગયું પેલાં સૂતેલાં સ્પંદનો,  
મૂંઝવણમાં મસ્તી ભરી ગયું કોઇ.  
હારીને બેઠા તોયે ઇનામ પકડાવી ગયું કોઇ – લેખક: અજ્ઞાત

હું વારંવાર એક પાપ કરતો રહ્યો  
આખી જીન્દગી હું વારંવાર એક પાપ કરતો રહ્યો,  
ધૂળ મારા પર હતી ને હું અરીસો સાફ કરતો રહ્યો.  
કેવી અજીબ વાત બની ગઈ જીવનમાં મારી સાથે,  
ભૂલ મારી હતીને એ દોસ્ત હું તને માફ કરતો રહ્યો.  
ન્યાય દેવાવાળો મારી ઉપર બેઠો છે એ ભૂલીને,  
હું ન્યાયાલય ખોલીને બધાનો ઇન્સાફ કરતો રહ્યો.  
જે મારી વિરુદ્ધ હતા એમને મનાવવાના પ્રયત્નોમાં,

જે મારી સાથે હતા એમને મારી ખિલાફ કરતો રહ્યો.  
ખુદ મારા વિષે તો રતીભારનુય જાણતો નહોતો,  
ને ખુદાના અસ્તિત્વ વિષે વાદવિવાદ કરતો રહ્યો.  
જીવન આખું કેવળ હવામાં કિલ્લાઓજ બાંધ્યા,  
ને જે આંખ સામે હતું એ બધું બરબાદ કરતો રહ્યો.  
ખુદ મનેજ સમજવામાં હું જબરી થાપ ખાઈ ગયો,  
ત્યાગના બહાને વરસોના વરસો પ્રમાદ કરતો રહ્યો.  
વર્તમાનમાં શું થઈ રહ્યું છે એનું ધ્યાન ના રહ્યું,  
ભવિષ્યમાં શું થશે એ વિષે બહુ સંતાપ કરતો રહ્યો.

બીજાઓને પણ કૈફ કહેવું છે એ સમજ્યા વગર,  
ખુદની સાથેજ આખુ જીવન વાર્તાલાપ કરતો રહ્યો.  
મારી કવિતાઓ ખુદ મનેજ કહી સંભળાવીને,  
હું ખુશ થઈને વાહ જનાબ, વાહ જનાબ કરતો રહ્યો – રમેશ સોનેયા

બધાંને એમ છે કે હું ફાવી ગયો છું,  
કોણ જાણે આ કેવા દેશમાં આવી ગયો છું, બધાંને એમ છે કે હું ફાવી ગયો છું,  
અહીં કોઈ કોઈને બોલાવતાં બીવે છે, ને મારા દેશમાં લોકો એકબીજાને જોઈને જીવે છે,  
અનહદ ઠંડીમાં લેપટોપ સાથે એક રૂમમાં પુરાઈ ગયો છું, ને બધાંને એમ છે કે હું ફાવી ગયો છું,  
અહીં માણસમાંથી દોસ્ત નીકળી ગયો છે ને, ધોળીયાનો સ્વભાવ બધાંને ભરખી ગયો છે,  
લાગણી વગરના માણસો સાથે ફસાઈ ગયો છું, ને બધાંને એમ છે કે હું ફાવી ગયો છું,  
કોણ જાણે આ કેવા દેશમાં આવી ગયો છું, બધાંને એમ છે કે હું ફાવી ગયો છું,  
એક ટાઇમ ખાઉં છું, ને ઓફીસ જાઉં છું, માણસમાંથી જાણે મશીન બની ગયો છું,  
આઝાદ ભારતમાંથી અહીં આવી ફરી ગુલામ બની ગયો છું, ને બધાંને એમ છે કે હું ફાવી ગયો છું,  
પોતાના લોકોથી છુટો પડી ગયો છું, ને બધાંને એમ છે કે હું ફાવી ગયો છું. લેખક: અજ્ઞાત

**शायद ज़िंदगी बदल रही है!!**

जब मैं छोटा था, शायद दुनिया  
बहुत बड़ी हुआ करती थी..  
मुझे याद है मेरे घर से "स्कूल" तक  
का वो रास्ता, क्या क्या नहीं था वहां,  
चाट के ठेले, जलेबी की दुकान,  
बर्फ के गोले, सब कुछ,  
अब वहां "मोबाइल शॉप",  
"विडियो पार्लर" हैं,  
फिर भी सब सूना है..  
शायद अब दुनिया सिमट रही है...

जब मैं छोटा था,  
शायद शामें बहुत लम्बी हुआ करती थीं...  
मैं हाथ में पतंग की डोर पकड़े,  
घंटों उड़ा करता था,  
वो लम्बी "साइकिल रेस",  
वो बचपन के खेल,  
वो हर शाम थक के चूर हो जाना,  
अब शाम नहीं होती, दिन ढलता है  
और सीधे रात हो जाती है.  
शायद वक्त सिमट रहा है...

जब मैं छोटा था,  
शायद दोस्ती  
बहुत गहरी हुआ करती थी,  
दिन भर वो हुजूम बनाकर खेलना,  
वो दोस्तों के घर का खाना,  
वो लड़की यों की बातें,  
वो साथ रोना...  
अब भी मेरे कई दोस्त हैं,  
पर दोस्ती जाने कहाँ है,  
जब भी "traffic signal" पे मिलते हैं

"Hi" हो जाती है,  
और अपने अपने रास्ते चल देते हैं,  
होली, दीवाली, जन्मदिन,  
नए साल पर बस SMS आ जाते हैं,  
शायद अब रिश्ते बदल रहे हैं...  
जब मैं छोटा था,  
तब खेल भी अजीब हुआ करते थे,  
छुपन छुपाई, लंगड़ी टांग,  
पोषम पा, कट केक,  
टिप्पी टीपी टाप.  
अब internet, office,  
से फुर्सत ही नहीं मिलती..  
शायद जिन्दगी बदल रही है.  
जिंदगी का सबसे बड़ा सच यही है..  
जो अकसर कब्रिस्तान के बाहर  
बोर्ड पर लिखा होता है...  
"मंजिल तो यही थी,  
बस जिंदगी गुज़र गयी मेरी  
यहाँ आते आते"

ज़िंदगी का लम्हा बहुत छोटा सा है...  
कल की कोई बुनियाद नहीं है  
और आने वाला कल सिर्फ सपने में ही है..  
अब बच गए इस पल में..  
तमन्नाओं से भरी इस जिंदगी में  
हम सिर्फ भाग रहे हैं..  
कुछ रफ्तार धीमी करो,  
मेरे दोस्त,  
और इस जिंदगी को जी यो...  
खूब जी यो मेरे दोस्त,  
और औरों को भी जीने दो...

શેરબજાર:

શેરબજાર હસાવે, રડાવે, ચડાવે, પડાવે, ગબડાવે.

કોઈ અભાગિયાને ચૌદમે માળથી કુદાવે કે પંખે લટકાવે.

ક્યારેક કલાર્કમાંથી કોઈને કરોડપતિ બનાવે.

તો ઘણાને કરોડપતિમાંથી રોડપતિ બનાવે.

કોઈને ચાલીમાંથી 'મઢૂલી'માં મહાલતા બનાવે.

તો ઘણા મેન્શનવાળાને ટેન્શનમાં લાવે.

લેહમેને તો પુરેપુરી દુનીયાની જ લગાડી દીધી વાટ.

ઘરડાઓને પણ ન છોડ્યા રવડાવીને કરાવી દીધો કકળાટ .

મુક્યાતા મ્યુચ્યુઅલ ફંડમાં, કે પાછળની જિંદગી સુધારશું .

લાખના થઈ ગયા બાર હજાર, ક્યાં ખબર હતી કે ધોવાઈ જઈશું.

જોબ છૂટ્યા, ઘર તૂટ્યા, ધંધા પડ્યા ને લાખો થયા હેરાન.

પૈસા કમાવાની આંધળી દોડમાં લોકોના જીવન થયા વેરાન.

ગાડરિયો પ્રવાહ જોઈને 'મુસાફિર' ને વિચાર થાય.

લાંબા સાથે ટુંકો જાય મરે નહીં પણ માંદો થાય - નિધીશ દલાલ 'મુસાફિર'

**\*Man O Man !**

ઓ મારા ભાઈ, ઓ મારા ભાઈ !

પૈસા ન હોય તો ઘરે બેસી શાકભાજી ખાય;

પૈસા હોય તો સરસ હોટેલમાં ખાય.

પૈસા ન હોય તો સાઈકલ પર કામે જાય;

પૈસા હોય તો કસરત કરવા સાઈકલ ચલાવે.

પૈસા ન હોય તો ખાવા માટે માઈલો ચાલે;

પૈસા હોય તો ખાધેલું પચાવવા માટે માઈલો ચાલે.

પૈસા ન હોય ત્યારે પરણવાનું મન થાય;

પૈસા હોય ત્યારે છૂટાછેડા લેવાનું મન થાય.  
પૈસા ન હોય તો પત્નીને સેક્રેટરી બનાવે;  
પૈસા હોય તો સેક્રેટરી પત્ની બની જાય.  
પૈસા ન હોય ત્યારે શ્રીમંત હોવાનો ડોળ કરે;  
પૈસા હોય ત્યારે ગરીબ હોવાનો ડોળ કરે.  
શેરબજારમાં મંદીની વાત કરે; પણ સદો રમતો જાય;  
પૈસો બધાં અનિષ્ટનું મૂળ' હોવાની વાતો કરે; પણ પૈસા માટે મરતો ફરે.  
કહે, 'ઉંચા પદમાં એકલતા છે'; પણ ઉંચો હોદ્દો મેળવવા મરણિયા પ્રયત્નો કરે;  
'જુગાર-શરાબ ખરાબ' છે તેમ કહે; પણ પોતે એમાં ડૂબતો જાય.  
ઓ મારા ભાઈ, ઓ મારા ભાઈ !  
બોલે તેવું ક્યારેય માનતો ન હોય અને માનતો હોય તેવું બોલે નહીં;  
ટૂંકમાં, તે સત્ય તો કહી જ ન શકે!!!  
લેખક: અજ્ઞાત

તું ઘણી મજબૂત અને ઘાતક હોઈ શકે 'નિષ્ફળતા'  
પણ મનોબળને મારા તોડી શકે એવી તારામાં ધાર નથી,  
ઘણું મેળવ્યું છે મેં આ જિંદગીની કસોટીઓ માંથી  
તું ખુશ ના થતી ..કારણ કે આ મારી હાર નથી

એક અજનબીસે મુઝે ઇતના પ્યાર કયો હૈ  
ઇતના કરનેપર ચાહત કા ઈકરાર કયો હૈ  
ઉસે પાના નહીં મેરી તકદીરમે શાયદ  
ફિર હર મોડપે ઉસી કા ઇન્તઝાર કયો હૈ?

### **\*એક બારી પણ હતી**

આપણી વચ્ચે ભીત હતી પણ એમાં એક બારી પણ હતી,  
આપણે એ જોઈ ના શક્યા, એ ભૂલ આપણી સહિયારી હતી.

વેરાન રણની વચ્ચોવચ્ચ પણ ફૂલોની સુંદર વાડી હતી,  
પણ આપણેતો એકબીજાના કાંટાઓ જોવાની ટેવ પાડી હતી.  
આપણી બન્ને વચ્ચે ઘણો સમય ચાહત બહુ સારી હતી,  
ફૂલો ભલે સુકાયા, તુલસીની તો એવી ને એવી ક્યારી હતી.  
હું સામે ચાલીને તારી માફી માંગું એ માગણી તારી હતી,  
તો તું મારા પગે પડે ને મને મનાવી લે એ જીદ મારી હતી.  
પ્રેમ કર્યો પણ સમજ્યા નહિ કે એ એક જવાબદારી હતી.  
જેના પર સુતા એ ફૂલોની નહિ પણ કાંટાની પથારી હતી.  
ખોટી દલીલો કરીને આપણે આપણી તિરાડ વધારી હતી,  
આપણી જીભ એ જીભ નહિ, પણ એક ધારદાર કટારી હતી.  
કોઈનીય સાચી વાત આપણે ક્યાં કદી ગણકારી હતી?  
એક સુંદર જીન્દગી રોળાઈ ગઈ જે આપણે સાથે મઠારી હતી.  
મળ્યા ત્યારે તે મને અને મે તને કેવી ધારી હતી?  
છુટા પડ્યા ત્યારે થયું કે આવી જુદાઈ ક્યારેય વિચારી હતી?  
લેખક:અજ્ઞાત

ડોક્ટરની ભૂલો કબરમાં દટાઈ જાય છે;  
વકીલની ભૂલો ફાઈલમાં દટાઈ જાય છે ;  
એન્જીનીયરની ભૂલો ઈમારતમાં ચણાઈ જાય છે;  
પણ શિક્ષક ની ભૂલો સારા સમાજમાં છવાઈ જાય છે !!!

## HINDI FILM SONGS & THEIR MEDICAL INTERPRETATIONS

જીયા જલે જાન જલે, રાતભર ધુઆ ચલે : **FEVER**  
તડપ તડપ કે ઇસ દિલ સે આહ નીકળતી રહી : **HEART ATTACK**  
જુદા હો કે ભી તું મુઝમે કહીં બાકી હૈ : **CONSTIPATION**  
બીડી જલાઈ લે જીગરસે પિયા જીગરમાં બડી આગ હૈ : **ACIDITY**



તુઝમે રબ ટીખતા હૈ યારા મૈ ક્યાં કરું : **CATARACT**

તુઝે યાદ ના મેરી આઘી કિસી સે અબ ક્યાં કહેના : **ALZHEIMERS**

મન ડોલે મેરા તન ડોલે : **VERTIGO.**

ટીપ ટીપ બરસા પાની, પાની ને આગ લગાઈ : **BURNING SENSATION WHILE URINATING**

દિલ ઘડક ઘડક કે કહે રહા હૈ : **HIGH BP**

આજ કાલ પાઉં જમીનપર નહીં પડતે મેરે : **CORN ON FEET**

હાય રે હાય નીંદ નહીં આયે : **INSOMNIA** - અજ્ઞાત

દર્દમે કોઈ મૌસમ પ્યારા નહીં હોતા,  
દિલ હો પ્યાસા તો પાનીસે ગુજારા નહીં હોતા,  
કોઈ દેખે તો હમારી બેબસી ,  
હમ સબ કે હો જાતે પર કોઈ હમારા નહીં હોતા.

**આ રૂપિયો.....**

કાગળ નો હોય કે લોઢાનો, વજન વાળો છે આ રૂપિયો,  
સુખ શાંતિ ને પાછળ રાખી, મગજ બગડતો આ રૂપિયો  
ભાઈ થી વેર કરાવે, સગો નથી કોઈનો આ રૂપિયો  
દોસ્તી અને યારીમાં બસ સૌનો સગો છે આ રૂપિયો  
લાય રૂસ્વત અને ભ્રષ્ટાચાર ની ભાષા છે આ રૂપિયો  
એનાથી સૌ કામ કરે છે સૌથી મોટો બન્યો આ રૂપિયો  
કાળા ને પણ સુંદરી અપાવે એવો છે આ રૂપિયો  
કુડા ને રૂડા મનાવે, એવો રૂપાળો આ રૂપિયો  
એના વગર સઘળું અંધારું, ચળકાટ છે આ રૂપિયો  
વગર અક્કલે માન અપાવે, અભિમાની આ રૂપિયો  
મદિરમાં ભગવાન પાસે પેટી માં પડ્યો છે આ રૂપિયો  
ભગવાનની સાથે સાથે પૂજનીય બન્યો છે આ રૂપિયો

સબંધ, લાગણી, પ્રેમ ને બાયપાસ કરે છે આ રૂપિયો  
કલયુગમાં સૌ પ્રેમથી બોલે, સૌથી મોટો છે આ રૂપિયો  
સૌ કહે છે મારો મારો, પણ કોઈનો નથી આ રૂપિયો  
આજ ભલે મારો કાલે બીજાનો, પડ્યો રહેશે આ રૂપિયો - અજ્ઞાત

આપ મેરે પ્યારકી સહી કિંમત કબ કરોગે  
આપકો પાને કે લીયે હમ કીતનાભી ગીર શકતે હૈ  
આજ આપકી ચાહતને હંમે ઇતના ગીરા દિયા  
નીચે લે જા કે પડ તક પહુંચા દિયા  
ઓ મેરે પ્યારે ડોલર અબ તો મેરી બાહોમે આ જાઓ  
યા ઔર ભી મેરા બજાઓગે બેન્ડ-બાજા  
આપકા દીવાના રૂપિયા!

કવિતા હોય કે કલાકૃતિ  
પુસ્તક હોય કે નાટક,  
દરેક સર્જક નામ પોતાનું આપે છે,  
પણ “માં” જેવું સર્જક કોઈ નહીં,  
સંતાનને જન્મ આપે છે,  
ને નામ “પિતા”નું આપે છે.

\*કુતરાનું ગલુડીયું ગમે તેટલું સુંદર હોય, પણ તેણે કુતરું જ કહેવાય,  
પ્રેમ ગમે તેટલો દિલથી હોય, લગન વગર તો લફરું જ કહેવાય!

\*સુર્ય કોઈના માટે નમતો નથી, ડુંગર કોઈના માટે વધતો નથી  
અમને ગુજરાતી હોવાનો ગર્વ છે  
કારણ કે,  
ગુજરાતી માણસ બાયડી છોડી, કોઈના બાપથી ડરતો નથી!

\*ધ્રાસ જો શરીરને ટકાવે છે તો વિધાસ સબંધને ટકાવે છે  
કોઈપણ સંપુર્ણ સંસ્કારી નથી હોતું, અંતિમ સંસ્કાર તો બીજા જ આપે છે!

\*કેટલાક સંબંધો જીવન સાથે વણાઈ જાય છે,  
કેટલીક યાદો સ્વપ્ન બનીને રહી જાય છે,  
લાખો મુસાફિર પસાર થઈ જાય તો પણ,  
કોઈકના પગલા કાયમ માટે યાદ રહી જાય છે

### હે પરમકૃપાળુ પરમાત્મા!

અમારા વિચારોને એટલા ઉદાર કરો કે,  
બીજા માણસનું દ્રષ્ટીબીંદુ અમે સમજી શકીએ.  
અમારી લાગણીઓને એટલી મુક્ત કરો કે,  
બીજાઓ પ્રત્યે અમે તેને વહાવી શકીએ.  
અમારા મનને એટલું સંવેદનશીલ કરો કે,  
બીજાઓ ક્યાં ઘવાય છે તે અમે જાણી શકીએ.  
અમારા હૃદયને એટલું ખુલ્લું કરો કે,  
બીજાઓનો પ્રેમ અમે ઝીલી શકીએ.  
અમારા ચિત્તને એટલું વિશાળ કરો કે,  
પોતાના/પારકાના ભેદથી ઉપર ઉઠી શકીએ.  
હે પરમાત્મા! અમારી દ્રષ્ટી એટલી ઉજ્જવળ કરોકે,  
જગતમાં રહેલા તમારા સૌંદર્યો ને સત્યોને નીરખી શકીએ.  
અમારી ચેતનાને એટલી સૂક્ષ્મ કરોકે,  
તમારા સંકેતો અને માર્ગદર્શનને સમજી શકીએ.-અજ્ઞાત

### \*મોત:

કોઈ શાયરે “મોત” માટે શું સુંદર શબ્દો કહ્યા છે.....  
જિંદગીમાં કોઈ બે મીનીટ માટે મારી પાસે ન બેઠું  
આજે બધા મારી આજુબાજુ ટોળું કરીને બેઠા છે  
આજ સુધી કોઈએ મને કોઈ ભેટ નથી આપી

આજે મારી ઉપર ફૂલ-હારનો ઢગલો કરી દેવામાં આવ્યો છે  
કોઈના હાથે એક કપડાના ટુકડા માટે અમે તરસી રહ્યા હતા  
જ્યારે આજે બે નવા નક્કેર કપડા પહેરાવવામાં આવ્યા છે  
ત્યારે કોઈ બે ડગલા સાથે ચાલવા રાજી ન હતું  
આજે મોટો કાફલો બનાવીને લઈ જઈ રહ્યા છે  
આજે ખબર પડી કે મોત આટલું સુંદર હોય છે  
કમબખ્ત અમે તો એમ જ જીવી રહ્યા હતા

\*એક સુંદર વાક્ય ઉપરની શાયરીને અનુસંધાનમાં છે  
માણસે કફન માટે રાખ્યો નવા કાપડનો રીવાજ  
કોઈ એમ નહીં કહે કે મને ન મળ્યું નવું કાપડ!

\*કિંમત પાણીની નહીં તરસની હોય છે,  
કિંમત મોતની નહીં, શ્વાસની હોય છે,  
લોકો તો ઘણા હોય છે આ દુનિયામાં,  
પણ કિંમત સંબંધોની નહીં,  
સંબંધો નીભાવવાની હોય છે!

\*નયન મળતા નયન શરમાઈ જશે,  
મન મળતા મન હરખાઈ જશે,  
જીંદગી છે તો માં-બાપની સેવા કરી જો જો,  
સ્વર્ગ શું છે ?....તે જીવતા જીવતા સમજી જશે

**\*જીવનના કપરા-કટોકટીના પ્રસંગે આટલું વિચારજો....**

જે થયું સારું થયું.

જે થઈ રહ્યું છે, તે સારું થઈ રહ્યું છે.

જે થશે તે પણ સારુંજ થશે.

તમારું શું ગયું જેથી તમે રડો છો ?  
તમે શું લાવ્યા હતા જે તમે ગુમાવ્યું ?  
તમે શું બનાવ્યું જે નાશ પામ્યું ?  
તમે જે લીધું, અહિયાંથી જ લીધું.  
જે આપ્યું, અહિયાં જ આપ્યું.  
જે આજે તમારું છે, કાલે બીજા કોઈનું હતું. પરમ દિવસે ત્રીજા કોઈનું થઈ જશે.  
પરિવર્તન સંસારનો નિયમ છે.

\*હું સવાર ને પૂછું ,  
હે સવાર તું રોજ પડે તો તને વાગતું નથી ?  
સવાર કહે ,  
અરે પાગલ વાગે તો છે , પણ આકળ બની રડું એ કોઈને સમજાતું નથી !!!!!!!!!

\*સ્પર્શ દઈ ને પાણી વહી જાતું હશે ,  
ત્યારે પથ્થરો ને પણ કૈક તો થાતું હશે !!  
તેથી જ તો માનવી પથ્થર ને પૂજે છે ,  
પછી તે કાબા માં હોય કે કાશી માં!

\*અગર વો નહીં મીલી તો પાકર જન્મત હમ ક્યાં કરેંગે?  
છુપ કે લે ચલ બોટલ કફનમેં, વહી બૈઠકર પિયા કરેંગે.  
નશેકી બોટલ કફનમેં રખકર વહી પિયા કરેંગે,  
અગર નશેમે કમી હુંઈ તો ખુદા સે મંગવા લીયા કરેંગે!

\*એક વાર માણસે કોયલને પૂછ્યું કે  
કોયલ તારામાં કાળાશ ન હોત તો  
તું કેટલી સારી હોત?

\*એક વાર માણસે સાગરને પૂછ્યું કે  
સાગર તારામાં ખારાશ ન હોત તો  
તું કેટલો સારો હોત?

વળી, એક વાર તેણે ગુલાબને પૂછ્યું કે  
હે ગુલાબ તારામા કંટક ન હોત તો  
તું કેટલું સારું હોત?

આ સાંભળી કોયલ, સાગર અને ગુલાબ  
ત્રણેય એક સાથે બોલી ઉઠ્યા.....

હે માનવા!!! તારામા બીજાના દોષ જોવાની કુટેવ ના હોત...  
તો તું કેટલો સારો હોત?...લેખક:અજ્ઞાત

\*જે પ્રેમને નહીં સમઝે તે માણસ નથી  
દુનીયામાં કોણ એવું છે જે પરેશાન નથી?  
જો તમે જવાબ આપશો તો જ અમે મેસેજ/એસ.એમ.એસ. કરીશું  
અમે કંઈ મેસેજ કે એસ.એમ.એસ.ની હાટડી ખોલીને નથી બેઠા!

\*પ્રેમ પણ ગજબની વસ્તુ છે  
માંને પ્રેમ કરો તો પૂજા કહેવાય  
બાપને પ્રેમ કરો તો ઈજ્જત કહેવાય  
ભાઈને પ્રેમ કરો તો વિશ્વાસ કહેવાય  
બહેનને પ્રેમ કરો તો ફરજ કહેવાય  
અને પત્નીને પ્રેમ કરો તો દુનીયા કહે છે.....  
“જોરૂકા ગુલામ”

## \*अमेरिका

आये थे अमेरिका में ये सोच कर  
चले जायेंगे बस पैसे बटोर कर  
फिर रहेंगे भारत में बड़ी शान से  
गाडी होगी बंगले होंगे आलिशान से

क्या क्या खवाब लेकर था आया  
अपना विचार देसी भाई को बताया  
देसी भाई सुन कर बहुत मुस्कुराया  
बोला गया नहीं जो अमेरिका आया

वहां घर में थे कई नौकर चाकर  
धोबी दे जाता था कपड़े धो कर  
खुद नहीं था कभी खाना बनाया  
मिल जाता था बस पका पकाया

पता नहीं था आटे दाल का भाव  
इन बातों से नहीं था कोई लगाव  
मर्जी से सोते थे, मर्जी से उठते थे  
नवाबजादों की तरह रहते थे

यहां वीक एंड में होते लाखों काम  
खुद ही करने पड़ते हैं सब इंतजाम  
घर के लिये जरूरी सामान लाना  
रविवार को पूरा खाना बनाना

अपने कपड़े धोना और सुखाना  
झाड़ू पोछा खुद ही लगाना  
समय पता नहीं कहां है जाता  
अपनी परेशानी किसको बताता

टेन्शन दिन ब दिन बड रही है

जिन्दगी भी ऐसे दौड रही है  
दोस्त पुराने कहां बिखर गये हैं  
खुशियों के पल जाने किधर गये हैं

अपनी गाथा हम किसे सुनायें  
देश को वापिस भी कैसे जायें  
नौकरी का नहीं पक्का ठिकाना  
मुश्किल है घर वालों को बताना

सच्ची बात हम बता नहीं सकते  
असलीयत को छुपा नहीं सकते  
क्या मुंह लेकर वापिस जायें हम  
अमेरिका को कैसे अपनायें हम

यदि आ ही गये हो तो जम जाओ  
पुरानी बातें को तिलक भूल जाओ  
मेहनत करो और पैसे कमाओ  
अमेरिका को ही वतन बनाओ  
अमेरिका को ही वतन बनाओ

\*मानव ઉપર છે એવા ભરોસા ના જોઈ એ,  
બદલા જગત ની રીત મુજબ ના ના જોઈ એ,  
તારુ એ બહાનુ હોય જો અમને નીભાવવા નુ,  
તો ઓ ખુદા અમારે એવી શ્રદ્ધા ના જોઈ એ!

\*દિલ પર હજાર પહેરા મૂકી તું કરે છે હૃદયની વાત,  
પછી કહે છે કોઈ સમજતું કેમ નથી આ મારી વાત,  
પણ ભલા જો કહેવીજ હોય તારે તારા દિલની વાત,  
તો મૂકને બીજી બધી પંચાત ને માંડને સીધી વાત,



\*તમે મને જીવતા શીખવાડી દીધું,  
પ્રેમના રસ્તા પર ચાલતા શીખવાડી દીધું,  
જ્યારથી મળ્યો પ્યાર તમારો...  
દુઃખમાં પણ હસતા શીખવાડી દીધું,

\*પ્રણયને જે કહે છે આંધળો, એ લોકો સાચા છે,  
તમારું રૂપ જોયું એ પછી નહોતી રહી આંખો,  
હવે તો જો કે આવું સ્થાન હોવું જોઈએ તારું,  
ન એને જોઈ મેં કિન્તુ મને જોતી રહી આંખો.

\*બે ઘડકતા દિલોની અજબ રોશની હશે,  
પ્રેમ ખુદા હશે તો ખુદાની બંદગી હશે,  
તારે ખાતર તો મોત પણ મીઠું લાગશે,  
એ મરવા માંચ એક નવી જિંદગી હશે.

\*મન માં જે "Sim card" હોત  
તો યાદો ને Delete કરી શકાતી હોત...  
મગજ માં જે "Printer" હોત તો,  
વિચારો ની Print Out કાઢી શકાતી હોત...  
હૈયા માં જે "Pen Drive" હોત  
તો જીન્દગી નો Data એમાં સમાયો હોત...  
મોઢામાં જે "Blue Tooth" હોત તો,  
વાતો ને Transfer કરી શકાતી હોત...  
આંખો માં જે "SMS" હોત તો,  
તસ્વીરો ને Receive કરી શકાતી હોત...  
કદાચ...  
જીન્દગી જે "Computer" હોત તો,  
તેને પણ Restart કરી શકાતી હોત

\*ચાલ મળીએ કોઇ પણ કારણ વિના,  
રાખીએ સંબંધ કંઇ સગપણ વિના,  
એક બીજાને સમજીએ આપણે,  
કોઇ પણ સંકોચ કે મુંઝવણ વિના,  
કોઇને પણ ક્યાં મળી છે મંઝિલો,  
કોઇ પણ અવરોધ કે અડચણ વિના,

\*છેલ્લે તો આપણે બે જ હોઈશું

ભલે ઝગડીએ, ક્રોધ કરીએ, એકબીજા પર તુટી પડીએ,  
એકબીજા પર દાદાગીરી કરવા, છેલ્લે તો આપણે બે જ હોઈશું.  
જે કહેવું હોય એ કહી લે, જે કરવું હોય એ કરી લે,  
એકબીજાનાં ચોકઠાં(ડેન્યર-ચશ્માં) શોધવા છેલ્લે તો આપણે બે જ હોઈશું.  
હું રીસાઈશ તો તું મનાવજે, તું રીસાઈશ તો હું મનાવીશ,  
એકબીજાને લાડ લડાવવા, છેલ્લે તો આપણે બે જ હોઈશું.  
આંખો જ્યારે ઝાંખી થશે, યાદશક્તી પણ પાંખી થશે,  
ત્યારે, એકબીજાને એકબીજામાં શોધવા, છેલ્લે તો આપણે બે જ હોઈશું.  
ઘુંટણ જ્યારે દુઃખશે, કેડ પણ વળવાનું મુકશે,  
ત્યારે એકબીજાના પગના નખ કાપવા, છેલ્લે તો આપણે બે જ હોઈશું.  
'મારા રીપોર્ટ્સ તદ્દન નોર્મલ છે, આઈ એમ ઓલરાઈટ',  
એમ કહીને, એકબીજાને છેતરવા, છેલ્લે તો આપણે બે જ હોઈશું.  
સાથ જ્યારે છુટી જશે, વીદાયની ઘડી આવી જશે,  
ત્યારે, એકબીજાને માફ કરવા, છેલ્લે તો આપણે બે જ હોઈશું

\*વજન વગર ની વાત નકામી  
ભજન વગર ની રાત નકામી  
સંગઠન વગર ની નાત નકામી

માનવતા વગર ની જાત નકામી

કહ્યું ન માને એ નાર નકામી  
બેસી જાય તેવી ઘોડી નકામી  
બ્રેક વગર ની કાર નકામી  
પૂંજ સાવ અધૂરી નકામી  
સમજણ સાવ થોડી નકામી

ભણતર વગર નું જીવન નકામું  
સ્વાદ વગર નું જમણ નકામું  
સુગંધ વગર નું કુલ નકામું

સુધારે નહીં તેવો માર નકામો  
બોલ્યો ફરે એ બંદો નકામો  
કઈ ઉપાડે નહીં તે કાંધો નકામો  
છોલે નહીં તે રંધો નકામો  
નફા વગર નો ધંધો નકામો  
ખરાબ સમયમાં જે સાથ ન આપે તે મિત્ર નકામો  
લેખક: અજ્ઞાત          રજૂકર્તા : પ્રવીણભાઈ મહેતા

\*ગુસ્સે થયા જો લોક તો પથ્થર સુધી ગયા,  
પણ દોસ્તોના હાથ તો ખંજર સુધી ગયા.  
'ઘાયલ' નિભાવવી'તી અમારે તો દોસ્તી,  
આ એટલે તો દુશ્મનોના ઘર સુધી ગયા.

\*રહી રહીને દિલને દઈ સતાવે તો શું કરું ?  
હરદમ જો તેની યાદ રડાવે તો શું કરું ?  
ખબર મળ્યાં હતા કે થાસે મુલાકાત સ્વપ્નામાં,  
પણ રાતભર જો ઊંઘના આવે તો શું કરું ?

\*નથી મળી લાગણી મને પણ હું લાગણીથી બધાયેલો છું.  
જે નફરત કરે છે દોસ્તો મને,હું તેના પ્રેમથી બધાયેલો છું.  
એક બેવફાને પ્રેમમા પણ હું નફરત ક્યા કરી શક્યો છું.  
યાદોમા જીવવાની આદત છે જીદગી ક્યા જીવી શક્યો છું.

\*છે હિદય નિર્મળ પણ ક્યારેક કા કહોર બની જા ?  
જીદ તો તારી આદત છે બસ તું થોડી મળતાવડી બની જા ...  
છે આ હાથ કે તું એમાં રાખી તારો હાથ નિશ્ચિત બની જા ,  
તારા ડુસકા ને હું સમાવું બસ તું ફરી હસતી થયી જા ...  
છે મારી આંખ કેરો અરીસો એમાં તારી તસ્વીર જોઈ લે ,  
જેવી તું બહાર છે એવી આબેહુબ તું મારી ભીતર જોયી જા ...

### \*પૈસાનું ગુપ તપાસ્યું છે?

મનુષ્ય જ્યારે જન્મે છે ત્યારે નઝન જન્મે છે  
મરે ત્યારે ચિતા ઉપર નઝન થઈને બળે છે  
જન્મે ત્યારે તેનું વજન અઢી કીલો હોય છે  
બળે ત્યારે રાખનું વજન અઢી કીલો હોય છે  
પહેલા પોશાકને ખીસું નથી હોતું  
તેના કફનને પણ ખીસું નથી હોતું  
તો તેના વચલા ગાળાના ખીસા માટે આટલી બધી ઉપાધિ શા માટે?  
આટલી બધી દોડધામ શા માટે?  
આટલા દગા અને પ્રપંચ શામાટે?  
લોહી લેતા પહેલા ગુપ ચેક કરાય છે  
પૈસા લેતા પહેલા તેનું ગુપ ચેક કરજો  
એ ક્યાં ગુપનો છે?  
હકનો છે? હાયનો છે? કે પછી હરામનો છે?  
ખોટા ગુપના પૈસા જેના ઘરમાં આવ્યા

તેના ઘરમાં કલેશ, કંકાસ અને કજીયો લાવ્યા  
હાય, હરામનો પૈસો જો ઘરમાં આવે, તો તે  
દવા, દારુ અને ગણિકાના ઘરે છોકરા ઉડાવે  
તમારું બેંક બેલેન્સ વધશે મગજનું બેલેન્સ ઘટશે  
અણહકનો પૈસો તમને ખુવાર કરીને જ અટકશે.  
માટે જ કહું છું કે પૈસો લેતા પહેલા એનું ગુપ જોજો! - વિપુલ એમ દેસાઈ

\*અંતર ને સળગાવી નાખે એવી આગ માંગું છું,  
હું બે યુવાન દિલોની જલન માંગું છું,  
બીજું તો શું માંગું પ્રિયા તારી પાસે ?  
બસ તારી ઓઢણીનું કફન માંગું છું.

\*માનવ ઉપર છે એવા ભરોસા ના જોઈ એ,  
બદલા જગત ની રીત મુજબ ના ના જોઈ એ,  
તારુ એ બહાનુ હોય જો અમને નીભાવવા નુ,  
તો ઓ ખુદા અમારે એવી શ્રદ્ધા ના જોઈએ.

## માણસ છે, બીઝનેસ કરે છે

પતંગીયાની પાંખો છાપે, માણસ છે, બીઝનેસ કરે છે,  
ઝાકળ પણ પાઉંચમાં આપે, માણસ છે, બીઝનેસ કરે છે...  
અજવાળાનો સ્ટોક કરીને, સૂરજને પણ બ્લોક કરીને,  
પોતે તડકો થઇને વ્યાપે, માણસ છે, બીઝનેસ કરે છે...  
સંબંધોની ફાઇલ રાખીને ચહેરા પર સ્માઇલ રાખી,  
લાગણીઓ લેસરથી કાપે, માણસ છે, બીઝનેસ કરે છે...  
શબ્દ, શબ્દને વાટી વાટી, અર્થોનું કેમીકલ છાંટી,  
જળમાં પણ ચિનગારી ચાંપે, માણસ છે, બીઝનેસ કરે છે...

કલરવને પણ ટેપ કરીને, કંઠ ઉપર પણ રેપ કરીને,  
માંગો તે ટૂંકા આલાપે, માણસ છે, બીઝનેસ કરે છે...  
ચક્રમક લોહું ઘસતાં ઘસતાં, ફૂંક લગાવી હસતા હસતા,  
જ્યાં જ્યાં સળગે ત્યાં ત્યાં તાપે, માણસ છે, બીઝનેસ કરે છે...  
પોતાનું આકાશ બતાવી, સૂરજ, તારા ચન્દ્ર ગણાવી,  
વાદળ કુટપટ્ટીથી માપે, માણસ છે, બીઝનેસ કરે છે... - અજ્ઞાત

## જિંદગી ની દરેક ક્ષણ દિલ થી માણો

"મોત ઉભું છે ઇન્તેઝાર માં, પણ સાલું દિલ અટક્યું છે દિલદાર માં."

શું કરું?

કોણ છે એવું જેને એના જીવન સાથે પ્યાર નથી?

મોત તો સહુ કોઈ માંગે છે પણ મરવા કોઈ તૈયાર નથી.....

જો આપણા મનમાં શાંતિ ન હોય તો એનું કારણ એ છે કે

આપણે ભૂલી ગયા છીએ કે આપણે એકબીજાનાં છીએ.

જે નથી થયું તેનો અફસોસ શાને કરો છો ... ??

આ જિંદગી જીવવા માટે છે ... !!

આમ રોજ રોજ શાને મરો છો ... ??

આ દુનિયા માં સંપૂર્ણ સુખી તો કોઈ નથી

એક આંખ તો બતાઓ મને ... !!

જે ક્યારેય રોઈ નથી

બસ એટલું જ કહેવું છે મારે ... !!

જિંદગી ની દરેક ક્ષણ દિલ થી માણો

નસીબ થી મળી છે જિંદગી તો એને જીવી જાણો ... !!

સંસાર સાગર ની એક નાવ છે જીંદગી,

કદી ધૂપ કદી છાંવ છે જીંદગી,

કરી જુઓ સઘળા સંબંધો નો સરવાળો,

લાગણી થી બંધાયેલો ભાવ છે જીંદગી,

સબંધ ભલે થોડા રાખો પણ,  
એવા રાખો કે હૈયે હરખ ની હેલી પડે.  
મોત ના મુખમાં થી જીદંગી વરસી પડે,  
અને મૃત્યુ બાદ સ્મશાન ની રાખ પણ રડી પડે.

કલ્પના સુંદર હોય છે પણ જીવી શકાતી નથી,  
વાસ્તવિકતા કડવી હોય છે પણ, મારી શકાતી નથી,

આખરી વાત: મને કોઈ સમજે એ કરતાં હું કોઈ બીજાને સમજું એવો વિચાર કરનારને સમજનારા  
મળી જ જાય છે. દરેક શ્રેષ્ઠ બાબતમાં શરૂઆત આપણાથી કરવામાં વધુ સાર્થકતા છે.

અષાઢને શ્રાવણ ગયા કોરા,  
ઝાપટા તો લાપતા ને ફોરાં ને બદલે,  
પાણી માંથી નીકળે પોરા.  
હેલી ના બદલે નીકળી મુરાદ તારી મેલી,  
ને શ્રાવણ ના સરવરિયા તો સુરસુરિયા,  
વાદળાં ઘેરાય ને તોય ના વરસે?  
આ તે કેવો છે તારો ત્રાસ?  
રેઇન રેઇન ગો અવે તો ખાલી બધા બોલે,  
તારે 'આવરે વરસાદ રાખવું યાદ'  
ઊની ઊની રોટલી એકલી ગળે ઉતરે?  
મોંઘા કારેલા જો થાય બાદ!  
પડ ભઇ પડ હવે, ના બન જડ હવે,  
સૃષ્ટિ વિરુદ્ધ ના કામ તું છોડ હવે,  
નહિતર....  
આ સાલ તો દુકાળ ને પાછો અધિક માસ..... લેખક:અજ્ઞાત

ઈશ્વર ને રડતાં જોયા

તેજ નથી નિસ્તેજ બનેલા  
માનવ કેરાં મડદાં જોયા  
તપ ના કર્યું , નથી સાધના  
સિદ્ધિ માટે મરતાં જોયાં  
બળ ની તો શી વાત કરું હું ?  
હાડપિંજર મેં જીવતાં જોયાં  
ઉપનિષદ ના આદર્શો ની  
સૌ ને હાંસી કરતાં જોયાં  
સિંહસુત ને મેં બકરારૂપે  
જ્યારે બેં બેં કરતાં જોયાં  
ત્યારે સત્ય હકીકત કહું છું  
ઈશ્વર ને મેં રડતાં જોયાં .....  
સંકલિત .....કૌશિક પટેલ

શકુંતલાએ દુષ્યંતથી અને નળે દમયંતીથી છુટા છેડા લઈ લીધા છે  
હવે નળ અને દુષ્યંત અને શકુંતલા અને દમયંતી  
એકમેક ની સાથે રહે છે  
હવે તેઓ સમાન હક ના સંગ્રામના સેનાનીયો છે.  
દુશાશનને હવે વસ્ત્રો ખેંચવા પડતા નથી  
માત્ર થોડું ધન વાપરવાથી  
દ્રૌપદી જાતેજ  
પોતાના વસ્ત્રો કાઢી નાખે છે  
શ્રી કૃષ્ણનો ચીર પુરા પાડવાનો  
ધંધો સાવ બેસી ગયો છે અને તેમણે નાદારી નોંધાવી છે  
પાંડવો હવે નત મસ્કતે હવે ઉભા રહેતા નથી  
તેઓ ઉદગ્રીવ દ્રષ્ટીએ આ દ્રશ્ય મારો છે  
સંકલિત .....કૌશિક પટેલ



પ્રીતની એકપક્ષી રમત થઇ ગઇ,  
કેવી નાદાની સંજોગવત થઇ ગઇ.  
હાર કે જીત જેવું કશું ના રહ્યું,  
જિંદગી એક અમસ્તી શરત થઇ ગઇ.  
નામ આવ્યું તમારું કે કિસ્સો ખતમ,  
લાગણીઓ બધી એકમત થઇ ગઇ.  
મારા દિલ પર વધુ ભાર એનો રહ્યો,  
એમની જો કદી 'હા' તરત થઇ ગઇ.  
જિંદગીએ હસીને કહ્યું મોત ને,  
આપણી વચ્ચે કેવી રમત થઇ ગઇ.  
સ્વપ્ન નો'તું - છતાં જઇને ભેટી પડ્યા,  
'સૈફ'થી ભૂલ કેવી સખત થઇ ગઇ.  
-સૈફ પાલનપુરી

બાત રાખી દિલ મા, બાત કહી ના શક્યા  
યાદ કર્યા એમણે ને શ્વાસ લઈ ના શક્યા  
કોઇકે પુછ્યુ આ દિલ ને કે તે પ્રીત કરી કોઈને?  
જાણવા છતા પણ નાં એમનું નામ ન લઈ શક્યા!

ये ली अजुब है नां???

બીસકા નોટ બહુત જ્યાદા લગતા હૈ  
જબ ગરીબકો દેના હોતા હૈ!  
મગર હોટલમેં ટીપ દેના હો તો  
દિલકો બહોત કમ લગતા હૈ  
ये ली अजुब है नां???

तीन मीनीट के लीये  
भगवानको याद करना कितना मुश्कील है

મગર તીન ઘંટેકી ફિલ્મ દેખના  
બહોત આસાન હૈ !  
યે ભી અજબ હૈ નાં???

પૂરે દીન કામ કરને કે બાદ  
જીમમેં જાનેસે નહી થકતે,મગર  
માં-બાપકે પૈર દબાના હો તો હમ થક જાતે હૈ!  
યે ભી અજબ હૈ નાં???

હમે સુલાને કી ખાતીર જબ રાત આતી હૈ,  
હમ સો નહિ પાતે રાત ખુદ સો જાતી હૈ,  
પૂછને પર દિલ સે યે આવાઝ આતી હૈ,  
આજ ઉન્હેં યાદ કર લે રાત તો રોજ આતી હૈ.

સબ કુછ મિલા સુકુન કી દૌલત નહિ મિલી,  
સબ કુછ મિલા સુકુન કી દૌલત નહિ મિલી,  
એક તુજકો ભૂલ જાને કી મોહલત નહિ મિલી,  
કરને કો બહુત કામ થે અપને લિયે મગર,  
હમકો તેરે ખયાલ સે કુરસત નહિ મિલી.

યહા લોગો કે અંદાઝ બદલતે રેહતે હૈ,  
યહા દિન તો ક્યાં રાત બદલતે રેહતે હૈ,  
ઇન હુસ્ન વાલો કા ક્યાં ચૈતબાર કરે,  
યે તો દૌલત કી ખાતીર યાર બદલતે રેહતે હૈ.

અરમાનો કી ગિનતી તો મુજે નહિ આતી,  
પર દિલ કા એક ખયાલ આપશે કેહ દુ,  
અગર પાની કી હર 1 બુંદ પ્યાર બન જાયે,  
તો તોફે મેં આપકો સારા સમંદર દે દુ...

જીન્દગી જબ અપના પતા દેતી હે  
ઇસમે કિતના ગમ હે બતા દેતી હે  
ભૂલ કર ભી કિસી અપનો કો નહી ખોના  
ક્યુકી યહી વો બાત હે જો અક્સર રુલા દેતી હે..

તારાથી છુદ્ધ પડયા પછી ફક્ત આટલુ થયુ  
તારૂ કશુ ગયુ નથી અને મારૂ કશુ રહ્યુ નથી

જીન્દગી જબ અપના પતા દેતી હે  
ઇસમે કિતના ગમ હે બતા દેતી હે  
ભૂલ કર ભી કિસી અપનો કો નહી ખોના  
ક્યુકી યહી વો બાત હે જો અક્સર રુલા દેતી હે..

વેલેન્ટાઈન ડે કે લીએ  
હમ પૂરે સાલ ઇન્ટજાર કરતે હૈ મગર,  
મઘર ડે કબ આતા હૈ, હંમે પતા નહી!  
યે ભી અજબ હૈ નાં???

રાત સવારની રાહ નથી જોતી ,  
ખુશ્બુ ઋતુ ની રાહ નથી જોતી ,  
જે પણ ખુશી થી મળે દુનિયામાં ,  
એને શાન થી સ્વીકારજો ,  
કેમકે જિંદગી સમય ની રાહ નતી જોતી ....

વો સો જાતે હે અક્સર હમે યાદ કિયે બગૈર  
હમકો નીંદ નહી આતી ઉનસે બાત કિયે બગૈર  
કસુર ઉનકા નહી હમારા હૈ  
ઉનહેં યાહા ભી તો ઉનકી ઇજાઝત કે બગૈર

બીના ચોટકે અહેસાસ નહીં હોતા  
હર કોઈ દુનીયા મેં ખાસ નહીં હોતા  
મગર જિસકી જરૂરત દિલ સે હોતી હૈ  
વો હી શખ્સ હમારે પાસ નહીં હોતા

એક રોટી નાં દેસકા ઉસ માસુમ કો  
લેકિન વો તસ્વીરકો લાખોમે બેચા  
ઇસ તસ્વીરકો દેખકર લોગ હાય હાય કરતે હૈ  
ઉનકો મદદ કરના કિસીકે દિમાગને નહી સોચા!  
યે ભી અજબ હૈ નાં???

ઇસ મેસેજકો ફોરવર્ડ કરના મુશ્કીલ લગતા હૈ  
ફીઝુલકે જોક્સકો ફોરવર્ડ કરના યા તો  
ફેસબુકપે ગપ્પે મારના અચ્છા લગતા હૈ  
સચ્ચા કભી દિલકો અચ્છા નહી લગતા!  
યે ભી અજબ હૈ નાં??? - અનજાન

રાહ રાહ કર આપકી યાદ આતી હૈ  
એસ.એમ.એસ. ન આને પર આપકી વજહ સતાતી હૈ  
સોચ રહે હૈ જરૂર કોઈ ગમ હોગી  
યા, આપકે દિલમે હમારે લીચે જગહ કમ હોગી

રિસ્તે તોડ દેતી હૈ ગર્લ ફ્રેન્ડ  
ઇન્સા કો તન્હા કર દેતી હૈ ગર્લ ફ્રેન્ડ  
નાં આને દેના દિલ કે કરીબ ઇસ્કો  
કયોકી દિલ સે ઘડકનકો જુદા કર દેતી હૈ ગર્લ ફ્રેન્ડ

ગર્લ ફ્રેન્ડ બોલે તો ગલત ફરેબી  
જો અભી આપકો હુઈ!

કાશ, ફીલીંગ ભી એસ.એમ.એસ. કી તરહ હોતી  
આપકે ગમ હમ રીસીવ કરતે  
આપકી ખુશીયા હમ આપકો સેન્ડ કરતે  
આપકી નારાજગી હમ ડીલીટ કરતે  
ઔર  
આપકી યાદો કો સેવ કરતે!

વખત આને દો બાત કરેંગે  
જિંદગીમે હમ ભી મુલાકાત કરેંગે  
રાસ્તા યાહે જીતના ભી કઠીન હો  
તુઝે પાનેકી કોશિશ બાર બાર કરેંગે!

કભિ કભિ મેરે દિલ મે યે સવાલ આતા હે  
કભિ કભિ મેરે દિલ મે યે સવાલ આતા હે  
કે અગર દુનિયા મે ગુજરાતી ના હોતે તો ક્યા હોતા!!

ક્યા દિન, ક્યા રાત બિના સન ઓફ ગુજરાત  
દુનિયા લગતિ જેસે બિના ચિડિયા કા ઘોસલા  
without ભાખરી, ફાફડા , ખાખરા એન્ડ માય ફેવરીટ ઢોકળા  
ના હોતે ઝવેરી ના હી હોતે પટેલ  
બિના અંબાણી કે સબ ધંધે હોતે ફેઇલ  
સમજ મેરી બાત યાર સીધી સી હે બાત  
બિના સન ઓફ ગુજરાત  
કભિ કભિ મેરે દિલ મે યે સવાલ આતા હે  
કે અગર દુનિયા મે ગુજરાતી ના હોતે તો ક્યા હોતા

એસા લગતા જેસે પહેના હે કુર્તા બગેર પજામા  
કોન કહેતા 'કેમ છો..??' ને કોન કહેતા 'મજા મા'  
કોન કહેતા પેપ્સી કો ફેક્સી  
રમેશભાઈ , સુરેશભાઈ , દિનેશભાઈ ના હોતે  
ના હોતે બા-ઓર બાપુ ઓર નાહી હોતે પોતી-પોતે  
શુશિલાબેન, દક્ષાબેન, નિશાબેન ના હોતી  
અરે ઓર તો ઓર ઇંગ્લેન્ડ મે બીગબેંગ ભી ના હોતી  
અંગ્રેઝ ભી રખતે સર પે અપને હાથ  
બિના સન ઓપ ગુજરાત  
છોકરીઓ મીન્સ ગલ્સ  
લડકિયા તો હોતી પર ગુજરાતણ ના હોતી  
ગરબા દેખને કે લિયે છોકરાઓ કી આંખ ખુબ રોતી  
પતા નહિ વો કેસે ઝેલતે  
જબ વો અકેલે અકેલે ડાંડિયા ખેલતે  
હર બાર મે મિસિંગ હોતી કુછ બાત - લેખક - અજ્ઞાત

આ છે જિંદગી એક પરદેશીની  
જે દેશ છોડીને ચાલ્યો મોટા મોટા ખ્વાબોની શોધમાં  
વિદેશની ધરતી પર, જ્યારે મુક્યો એણે પહેલો કદમ  
ભૂલી ગયો પોતાનું ઈમાન, એ ઈમાનનો ધરમ  
દોડવા લાગ્યો જ્યારે તે, વધુ રફતારમાં આગળ  
પાછળ કેટલું છોડતો ગયો, ન હતી એની એને ખબર  
ઘણી ઝીલ્લતો એણે વેઠી, પામવા સુખ-ચેનને  
એની તો એને ખબર નથી કે, પાછળના રસ્તા હવે થઈ ગયા બંધ  
જ્યારે વિચાર આવ્યો એને, પાછળ રહી ગયું મારું ઘર  
પણ રસ્તો હવે રહ્યો નથી, કોઈ એની પાછળ જવાનો  
મુલાકાત થશે હવે, બસ જ્યારે છે દમ નીકળવાનો! - અનીલ અમદાવાદી

ફૂલોની સુગંધ તમારા મનને મેહકાવી જાય,  
ઠંડી હવા તમારા દિલને સ્પર્શી જાય,  
જ્યારે યાદ કરો તમે જીવનની મીઠી ક્ષણો,  
ભગવાન કરે તમને અમારી યાદ આવી જાય.

सच्चा है दोस्त, हरगिज़ जूठा हो नहीं सकता।  
जल जायगा सोना फिर भी काला नहीं हो सकता।

અપની જિંદગીકી તો અજબ કહાની હૈ  
જિસ ચીઝ કો યાહા વો હી બેગાની હૈ  
હંસતે હૈ દુનિયા કો હસને કે લીચે  
વરના દુનિયા ડુબ જાયે ઇન આંખો મેં ઇતના પાણી હૈ

**કાયનદીને પેલે કાંઠે**

કાયનદીને પેલે કાંઠે શબ્દ ઊભો અજવાળાં લઈને  
થરથરતા હિમચુગોને છેડે સપનાંઓ હૂંફાળાં લઈને

કાયનદીને પેલે કાંઠે કોઈ આપણી રાહ જુએ છે  
ચાલ આંખમાં ભીનાશ લઈને  
છાતીમાં ગરમાળા લઈને

કાયનદીને પેલે કાંઠે નામ ધૂંધળું ચહેરા ઝાંખા  
આ કાંઠે ચૂપચાપ ઊભો છું  
શ્વાસોની જપમાળા લઈને

કાયનદીને પેલે કાંઠે કોની પહેલી તરસ પહોંચશે  
જલપરીઓની રાણી ઊભી હાથોમાં વરમાળા લઈને

કાચનદીને પેલે કાંઠે ગણિત બધાંચે સાવ નકામાં  
તરી ગયા એ શૂન્ય ઊંચકી ડૂબી ગયા સરવાળા લઈને

કાચનદીને પેલે કાંઠે પાગલ પંખી માળો બાંધે  
ડાહ્યા લોકો ભેટ આપવા આવે કૂચીતાળાં લઈને –સંદીપ ભાટિયા

કહેવાય છે હાથની રેખામાં આપની કિસ્મત હોઈ છે,  
પણ કિસ્મત તો એની પણ હોઈ છે જેના હાથ નથી હોતા.

કેડેથી નમેલી ડોશી દેખીને જુવાન નર,  
કહે શું શોધો છો કશી ચીજ અછતી રહી;  
કહે ડોશી બાળપણું ખબર વિના મેં ખોયું,  
જુવાનીમાં દીવાની તારા જેવી ગતિ રહી;  
છવાઈ જરાની છાયા, કાયાના વિંખાયા બંધ,  
ગાયા ન ગોવિંદરાયા, માયામાં મતિ રહી;  
ઝૂકી ઝૂકી ડોકી વાંકી રાખી દલપતરામ,  
જોતી હું ફરું છું જે જુવાની ક્યાં જતી રહી.-દલપતરામ કવિ

દિલકે અરમાં આંસુઓમે બહે ગયે  
હમ ગલીમે થે ગલી મેંહી રહે ગયે  
જો બાત ઉનસે કહેનીથી ઓર લાઈટ ચલી ગયી  
વોબાત ઉનકી મામ્મીસે કહે ગયે..... દિલકે અરમાં આંસુઓમે બહે ગયે

જીન્દગીકી રાહ મુશ્કીલ હૈ તો ક્યાં હૈ?  
થોડા તુમ ચલો...થોડા હમ ચલે  
રીક્ષા મિલે તો બૈઠ કર સાથ ચલે જાયેંગે!

હમ ઐસે આશિક હૈ જો ગુલાબ કો કમલ બના દેંગે



ઉસકી હર અદાપર ગઝલ બના દેંગે  
અગર વો આજાયે હમારી જિંદગીમે  
રીલાયન્સકી કસમ, મુકેશ કા બાબૈયા મકાન  
હમ ઉનકે લીયે ખરીદ લેંગે

પ્રસ્વેદમાં પૈસાની ચમક શોધે છે  
હર ચીજમાં એક લાલની તક શોધે છે  
આ દુષ્ટ જમાનાનું રુદન શું કરીએ?  
આંસુમાં ગરીબોના નમક શોધે છે!

સમજ્યા વગર કોઈ ને પસંદ ના કરો,  
સમજ્યા વગર કોઈ ને ગુમાવી પણ ના દિયો  
કેમ કે ફિકર દિલ માં હોઈ છે શબ્દો માં નહિ,  
અને ગુસ્સો શબ્દો માં હોઈ છે દિલ માં નહિ...

સ્વપ્ન પણ ક્યારેક કડવું લાગશે,  
એ હકીકતથી જો મળતું લાગશે.

આપ કહીને આપ જો બોલાવશો,  
સાથ હોવાનુંય અળગું લાગશે.

પ્રેમ તો એવી બલા છે, દોસ્તો,  
રૂબવાની વાત તરવું લાગશે.

ટોચ પર પહોંચી જવાનો ફાયદો,  
એક ચપટીમાં ઉતરવું લાગશે.

જિંદગીના ખેલને જોયા કરો,  
અંતમાં સઘળુંય સરખું લાગશે.

આ ગઝલ લખવાનું કારણ એટલું,  
શબ્દથી એને સ્પર્શવું લાગશે.

લાગણીની વાત 'ચાતક' ના કરો,  
જીવવાનું ખુબ અઘરું લાગશે – અજ્ઞાત

સબંધો ક્યાં કોઈ ના કાયમના હોય છે,  
આજે આપણા તો કાલે પરાયા હોય છે,  
મન થી મન મળે એજ સબંધ સાચો,  
બાકીના સબંધ તો કાચી માટીના વાસણ હોય છે.

## જિંદગી જીવી જાણો

લાંબી આ સફરમાં જિંદગીના ઘણા રૂપ જોયા છે  
તમે એકલા સાને રડો છો, સાથી તો અમેય ખોયા છે  
આપ કહો છો આમને શું દુઃખ છે, આ તો સદા હસે છે  
અરે આપ શું જાણો આ સ્મિતમાં કેટલા દુઃખ વસે છે  
મંજીલ સુધી નાં પહોચ્યા તમે એ વાતથી દુઃખી છો  
અરે, ચાલવા મળ્યો રસ્તો તમને એટલા તો સુખી છો!  
આપને છે ફરિયાદ કે કોઈને તમારા વીશે સુઝ્યું નથી  
અરે, અમને તો “કેમ છો?” એટલુંય કોઈએ પૂછ્યું નથી  
જે થયું નથી એનો અફસોસ શાને કરો છો?  
આ જિંદગી જીવવા માટે છે, આમ રોજ રોજ શાને મારો છો?  
આ દુનિયામાં સંપૂર્ણ સુખી કોઈ નથી  
એક આંખ તો બતાવો મને જે ક્યારેય રોઈ નથી  
બસ, એટલુંજ કહેવું છે, જિંદગીની કરેક ક્ષણ દિલથી માણો  
નસીબથી મળી છે જિંદગી તો એને જીવી જાણો

કોઈ ને સાડું કહેવામાં મજા છે,  
તો કોઈક ને સાચું કહેવાડવા માં મજા છે,

પણ કઈ કીધા વગર બધું સમજી જાય  
તેની સાથે જીવવા માં એક અલગ મજા છે

જેના દિલ પર વાગે છે તે આંખોથી નથી રોતા.  
જે પોતાના નથી થતા એ કોઈનાય નથી થતા.  
સમય એજ શીખવાડે છે....  
સપના તૂટી જાય છે પણ પુરા નથી થતા....

વજન વગર ની વાત નકામી  
ભજન વગર ની રાત નકામી  
સંગઠન વગર ની નાત નકામી  
માનવતા વગર ની જાત નકામી  
કહ્યું ન માને એ નાર નકામી  
બેસી જાય તેવી ઘોડી નકામી  
બ્રેક વગર ની કાર નકામી  
પૂંજી સાવ અધૂરી નકામી  
સમજણ સાવ થોડી નકામી  
ભણતર વગર નું જીવન નકામું  
સ્વાદ વગર નું જમણ નકામું  
સુગંધ વગર નું કુલ નકામું  
સુધારે નહીં તેવો માર નકામો  
બોલ્યો ફરે એ બંદો નકામો  
કઈ ઉપાડે નહીં તે કાંધો નકામો  
છોલે નહીં તે રનધો નકામો  
નફા વગર નો ધંધો નકામો  
ખરાબ સમયમાં જે સાથ ન આપે તે મિત્ર નકામો - અજ્ઞાત

બાટલી

જન્મીને બાટલી, મરતાં બાટલી, જીવન જાય બધું બાટલીમાં .....જન્મીને બાટલી  
માસ છ નો થયો હું જ્યારે, દૂધ પીધું મેં બાટલીમાં .....જન્મીને બાટલી  
છ વરસનો થયો હું જ્યારે, પેપ્સી પિધું મેં બાટલીમાં ....જન્મીને બાટલી...  
યુવા વયનો થયો હું જ્યારે, બિયર પીધું મેં બાટલીમાં ,....જન્મીને બાટલી  
જ્યારે જ્યારે ટેન્શન આવ્યું, વ્હિસ્કી લીધું મેં બાટલીમાં ...જન્મીને બાટલી..  
અસપતાલમાં હતો હું જ્યારે, ઝલુકોષ આપ્યું મને બાટલીમાં ,,,...જન્મીને બાટલી  
ઓપરેશનના ટેબલ ઉપર લોહી ચડાવ્યું મને બાટલીમાં ...જન્મીને બાટલી..  
જેની જેની જરૂર પડી તે મળ્યું બધું મને બાટલીમાં ,,,,જન્મીને બાટલી  
જ્યારે પણ હું મરી જવાનો, ગંગાજળ તૈયાર છે બાટલીમાં ..જન્મીને બાટલી..  
-પી. કે. દાવડા

સતત બોલ્યા કરે તે મૈત્રી, અને ચુપ રહે તે પ્રેમ  
મિલન કરાવે તે મૈત્રી, ને જુદાઈ સતાવે તે પ્રેમ  
મનને મલકાવે તે મૈત્રી, ને હૃદયને ધબકાવે તે પ્રેમ  
હાથ પકડીને ચાલવું તે મૈત્રી, આંખોમાં નીરખ્યા કરવું તે પ્રેમ  
મિત્રોને વહેંચવાની વસ્તુ તે મૈત્રી, પોતાનામાં છુપાવવાની વસ્તુ તે પ્રેમ  
હસાવે તે મૈત્રી, ને રડાવે તે પ્રેમ  
છતાં ખબર નથી લોકો કેમ મૈત્રી મુકીને કરે છે પ્રેમ?

વિશ્વાસની દોરી મજબૂત બનાવી રાખજો  
અમે ક્યાં કીધું કે અમારા જ દોસ્ત બનીને રહો  
પણ તમારા દોસ્તો ની યાદીમાં  
એક નામ.... અમારું પણ રાખજો !!!

કોણ કહે છે "સંગ એવો રંગ",  
માણસ "શિયાળ" સાથે નથી રેહતો તોયે "લૂચ્યો" છે,  
માણસ "વાઘ" સાથે નથી રેહતો તોયે "ફૂર" છે,

અને માણસ "કુતરા" સાથે રહે છે તોયે"વફાદાર" નથી.....

માણસને પ્રેમ કરો. વસ્તુને નહી,

વસ્તુને વાપરો. માણસને નહી".....

કેટલાક સંબંધો જીવન સાથે વણાઈ જાય છે

કેટલીક યાદો સ્વપ્ન બની ને રહી જાય છે

લાખો મુસાફિર પસાર થઈ જાય તો પણ.

કોઈકના પગલા કાયમ માટે યાદ રહી જાય છે!!!

ઝીંદગી મળવી એ નસીબની વાત છે....

મોત મળવું એ સમયની વાત છે.....

પણ મોત પછી પણ કોઈના દિલમાં જીવતા રહેવું..

એ ઝીંદગીમાં કરેલા કર્મની વાત છે

સુખ હોય કે દુખ, પણ જીવવા માં મજા છે,

કોઈકે દીધેલ દર્દને સહેવામાં પણ મજા છે

મારુતો ગણિત છે બધાથી અલગ,

પામવા કરતા જતું કરવામાં મજા છે.

પાનખરમાં વસંત થવું મને ગમે છે

યાદોની વર્ષામાં ભીજવું મને ગમે છે

આંખ ભીની તો કાયમ રહે છે

તો પણ કોઈના માટે હસતા રહેવું ગમે છે.

મોકલું છું મીઠીયાદ ક્યાંક સાચવી રાખજો

મિત્રો હમેશા અમૂલ્ય છે યાદ રાખજો

તડકામાં છાયો ના લાવી શકે તો કંઈ નહિ

મુલા પગે તમારી સાથે ચાલશે એ જ યાદ રાખજો

જીવનમાં સમયની સાથે ચાલવું પડે છે...

જે નામજુર હોય તે જ કરવું પડે છે.....

રોવાનો અધિકાર પણ નથી આપતું આ જગત..

ક્યારેક લોકોને બતાવવા માટે પણ હસવું પડે છે

આંસુ સુકાયા પછી જે મળવા આવે...એ સંબંધ છે

ને...આંસુ પહેલા મળવા આવે ....એ પ્રેમ છે

દરેક ઘર નું સરનામું તો હોય પણ

ગમતા સરનામે ઘર બની જાય....એ જીવન છે..

પ્રેમમા કોઈની પરીક્ષા ના લેશો,

જે નીભાવી ના શકો એવી શરત ના કરશો,

જેને તમારા વગર જીવવાની આદત નથી,

તેને વધુ જીવવાની દુઆ ના આપશો.

"ક્યારેક ઉદાસીની આગ છે જિંદગી,

ક્યારેક ખુશીનો બાગ છે જિંદગી,

હસતો ને રડાવતો રાગ છે જિંદગી,

પણ આખરે તો કરેલાં 'કર્મ'નો જવાબ છે જિંદગી..."

ભૂતકાળમાં કોઈ માણસ પાસે ઘડિયાળ નહિ હતી,

પરંતુ સમય હતો.

જ્યારે આજે બધા માણસ પાસે ઘડિયાળ છે,

પરંતુ સમય નથી...!!!

**બિટિયા!**

क्या लिखू ! की वों परि यों का रूप होती है!  
या कड़कती ठंड में सुहानी धूप होती है,  
वों होती है उदासी के हर मर्ज की दवा की तरह!  
या उमस में शीतल हवा की तरह.  
वों चिड़ियों की चहचहाहट है या फिर निश्छल खिलखिलाहट है!  
वों आंगन में फैला उजाला है,  
या मेरे गुस्से पे लगा ताला है!  
वों पहाड़ की चोटी पे सूरज की किरन है,  
वों जिंदगी सही जीने का आचरण है.  
है वों ताकत जो किसी छोटे से घर को महल कर दे,  
वों काफिया जो किसी गजल को मुकम्मल कर दे.  
वों अक्षर जो न हो तो वर्णमाला अधूरी है,  
क्या लिखू ?

वों जो सबसे ज्यादा जरूरी है.  
ये नहीं कहूंगा की वों हर वकत साँस साँस होती है,  
क्योंकि बेटी या तो सिर्फ एहसास होती है!  
वों मुझ से ओस्ट्रेलिया में छुट्टी या, मर्सिडीस की ड्राइव,  
फाइव स्टार में खाने या नये नये आईपोड नहीं माँगती है .  
नहीं वों बहुत सारे पैसे अपनी पिगी बैंक में उड़ेलना चाहती है.  
वों बस कुछ देर मेरे साथ खेलना चाहती है!  
में वही!!!!!!!

बेटा काम है, बहुत जरूरी काम है, शूटिंग करना जरूरी है,  
नहीं करुंगा तो कैसे चलेगा?

जैसे

मजबूरी भरे दुनियादारी के जवाब देने लगता हु!!  
और वों जूठा ही सही, मुझे एहसास कराती है जैसे सब समझ गयी हो.

लेकिन आंखें बंद करके रोती है,  
सपने में खेलते हु वे मेरे साथ सोती है.  
जिंदगी न जाने क्यों उलज जाती है,

और हम समझते है की बेटी या सब समझ जाती है!!!!!!! - Sailesh Lodha

યુવાની ના આકર્ષણ ને પ્રેમ ના સમજો  
હમદદ ને હમસફર ના સમજો  
કહેવું અને કરવું આમાં તફાવત છે ઘણો  
ગહેરી આ ઝીંદગી ને મજાક ના સમજો

દુનિયા મને શુઆપશે એમ વિચારનારા મેનેજર બને છે.  
દુનિયાને હું શું આપું એમ વિચારનારા લીડર બને છે.

કિતની બુરી લગતી है जिंदगी,  
जब हम तन्हा महसूस करते हैं.  
मरने के बाद मिले है चार कंधे,  
और जीते जी हम एक के लिए तरसते हैं!!!!!!!!!!!!

एक दिन जिंदगी ऐसे मुकाम पै पहुंच जाएगी!  
दोस्ती तो सिर्फ यादों में रह जाएगी....  
हर कप कोफ़ी के साथ याद दोस्तों की आए गी.  
और हँसते हँसते फिर आँखें नम हो जाएगी!  
ऑफिस के चेम्बर में क्लास रूम नजर आए गी!  
पर चाहने पर भी प्रोक्सी नहि लग पाये गी.  
पैसा तो बहुत होगा.....  
पर उन्हें लुटाने की वजह ही खो जाएगी.  
जि ले खुल के इस पल को मेरे दोस्त...  
क्यों की जिंदगी ये पलों को फिर से नहीं दोहराएगी!!!!!!!!!!!!

વિશ્વાસ ની એક દોરી છે ઝીંદગી,



વિશ્વાસ વિના કોરી છે ઝીંદગી.  
ક્યારેક થેન્ક્સ તો ક્યારેક શોરી છે ઝીંદગી,  
ને માનો તો ઈશ્વર ની પણ કમજોરી છે ઝીંદગી!!!!!!

પ્રેમ ઇશ્ક અને મહોબ્બત .....

એ બધું સ્ટોક માર્કેટ જેવું છે.  
આમાં તો એવું છે કે ફાવી ગયા તો ...  
હર્ષદ મહેતા.....  
નહિતર....  
નરશી મહેતા !!!!!!!

સુખ નથી આવતું દુઃખ વગર,  
પ્રેમ નથી મળતો નફરત વગર,  
માટે ભરોસો રાખો ભગવાન ઉપર,  
કેમકે ભગવાને સાગર નથી બનાવ્યો.....કિનારા વગર

સપના પણ કેટલા છેતરામણા હોય છે,  
એમાય કેટલા રિસામણા-મનામણા હોય છે,  
ખુલી ગયા પછી વિરાન જણાય છે બધું,  
એ બંધ આંખે જ સોહામણા હોય છે.

દુઃખી થાવાને માટે કોઈ ધરતી પર નહીં આવે;  
હવે સદીઓ જશે ને કોઈ પયગમ્બર નહીં આવે  
હવે તો દોસ્તો ભેગા મળી વ્હેંચીને પી નાખો,  
જગતનાં ઝેર પીવાને હવે શંકર નહીં આવે. -અજ્ઞાત

તારી એક યાદ જાણે ઘાયલ બની ગઈ,  
પ્રેમથી પીઘેલી ઘૂંટ જાણે શરાબ બની ગઈ.  
મોજાઓ ઉછળવાનું ભૂલી ગયા,  
ને જાણે સાગરની મસ્તી પણ ઓટ બની ગઈ.

કોરા કાગળમાં કઈક આમ લખુ છું,  
મોગરાના તેજને પણ શ્યામ લખુ છું,  
ઉડી ન જાય સુવાસ તારી,  
એટલે બંધ એકાન્તમાં પણ નામ લખુ છું

એક ઇલજામ માથે પડ્યો આવતા જતા હું સૌને નડ્યો, બસ અમસ્તુજ યુંટ્યુ ફૂલ ને જાણે હું વસંત  
ને નડ્યો. – એમ.બારિયા

ગુમાવાનું જીવન માં ઘણું હોય છે,  
પણ પામવાનું માપસર નું હોય છે.  
“ખોવાયું” છે તેનો અફસોસ કદી નાં કરતા,  
જે નાં ખોવાય એજ “આપણું” પોતાનું હોય છે.

વિશ્વાસ માત્ર શબ્દ છે દીસ્તો,  
તેને વાંચતા સેકન્ડ લાગે છે .  
વિચારો તો મિનિટ લાગે છે.  
સમજાવો તો દિવસ લાગે છે.  
પણ તેને સાબિત કરવામાં  
આખી જિંદગી લાગી જાય છે.

પ્રેમ સાચો હોય તો સમય પણ રોકાઈ જાય છે,

આકાશ લાખ ઊંચું હોય તો પણ ઝુકી જાય છે,  
પ્રેમ માં દુનિયા લાખ બને અડચણ,  
પણ હમસફર જો સાચો હોય તો ખુદા પણ ઝુકી જાય છે

યે દોસ્તી કે રીસ્તેભી કિતને અજબ હોતે હૈ,  
સબ અપને અપને નશીબ હોતે હૈ,  
રહતે હો જો નીગાહો સે દુર,  
વોહી દિલ કે કરીબ હોતે હૈ!

કોઈ એટલું અમીર નથી કે તે  
પોતાની જુવાની ખરીદી શકે,  
.....અને .....

કોઈ એટલું ગરીબ પણ નથી  
કે પોતાનું ભવિષ્ય બદલી ના શકે!!

મેરી દોસ્તી સૂરજ જેસી નહિ,  
જો રાત કો ચલી જાયે,  
મેરી દોસ્તી ચાંદ જેસી ભી નહિ,  
જો દીન મેં દિખાઈ નાં દે,  
અપની દોસ્તી હૈ આંસુ જેસી,  
જો ખુશી ઓર ગમ દોનો મેં નઝર આયે

હકીતત સમઝો યા અફસાના,  
બેગાના કહો યા દીવાના  
સુનો મેરે દિલકા અફસાના  
તેરી દોસ્તી હૈ મેરે જુનેકા બહાના

रिश्ते और रास्ते के बिच एक अजीब संबध है.

कभी रिश्ते निभाते ,निभाते रास्ते खो जाते है.

तो कभी रास्ते पे चलते चलते ,

रिश्ते बन जाते है.

दान विषे - कबीरवाणी

१. कहे कबीर कमालको, दो बातां शीष ले,  
कर साहेब की बंदगी, ओर भुजे को कछु टे.
  २. धर्म कीये धन ना घटे, नदी न संचे नीर,  
अपनी आंभे देभीये, युं कहे दास कबीर.
  ३. मरुं पण मांगुं नही, अपने तनके काज,  
परमारथ के कारणे, मागन न आवे लाज.
  ४. भुजेको कछु दीजुये, यथा शक्ति जो होय,  
ता उपर शीतल वचन, लभो आत्मा सीय.
  ५. जहां दया वहां धर्म, जहां लोभ वहां पाप,  
जहां क्रोध वहां काण, जहां क्षमा वहां आप.
  ६. दाता दाता चल गये, रह गये मज्भीयुर,  
दान मान समजे नही, लऽने में मज्भुर.
- अही संत तुलसीदासे ऐमनी आ शाभीओमां घणी समजवा जेवी वात करी छे.

ऐरणकी चोरी करे , दिवे सोयका दान  
झिर देभे आकाशको , कयुं न आवे विमान.  
दया धरमका मूल है , पाप मूल अलिमान  
तुलसी दया न छान्डीये, जब लग गटमे प्रान .

“અપને લીયે જી જાયે વો હૈ જિંદગી, ઔરોંકો જો કામ આયે વો હૈ બંદગી. “

એક ઇલજામ માથે પડ્યો આવતા જતા હુ સૌને નડ્યો,  
બસ અમસ્તુજ ચુંટ્યુ ફૂલ ને જાણે હૂ વસંત ને નડ્યો. – એમ.બારિયા  
દુઃખી થાવાને માટે કોઈ ધરતી પર નહીં આવે;  
હવે સદીઓ જશે ને કોઈ પયગમ્બર નહીં આવે  
હવે તો દોસ્તો ભેગા મળી વ્હેંચીને પી નાખો,  
જગતનાં ઝેર પીવાને હવે શંકર નહીં આવે. -અજ્ઞાત

હુ જાગતો રહ્યો આખી રાત,  
પણ કહી ના સક્યો મારા દિલ ની વાત,  
આંખોમા હતા આશા ભર્યા સપના,  
પણ આવીના નીંદર ને વીતી ગયી રાત.

આંખને ખૂણે હજીયે ભેજ છે  
આ ગઝલ લખવાનું કારણ એ જ છે  
જાત ઝાકળની પણ કેવી ખુમારી હોય છે  
કે પુષ્પ જેવા પુષ્પ પર મારી સવારી હોય છે.  
કોઈ ઇચ્છાનું મને વળગણ ન હો,  
એ જ ઇચ્છા છે, હવે એ પણ ન હો.

તારી એક યાદ જાણે ઘાયલ બની ગઈ,  
પ્રેમથી પીધેલી ઘુંટ જાણે શરાબ બની ગઈ.  
મોજાઓ ઉછળવાનુ ભૂલી ગયા,  
ને જાણે સાગરની મસ્તી પણ ઓટ બની ગઈ.

કોરા કાગળમાં કઈક આમ લખુ છું,  
મોગરાના તેજને પણ શ્યામ લખુ છું,  
ઉડી ન જાય સુવાસ તારી,  
એટલે બંધ એકાન્તમાં પણ નામ લખુ છું

મુક્તક

દ્રશ્યો છે બે સુમાર છે  
આંખો છે કે વખાર છે  
નામ જવા દે ઈશ્વરનું  
ગામ આખાનો ઉતાર છે

ફોન પણ કરતો નથી ફેક્સ પણ કરતો નથી  
ક્યાં વસે છે એ કહી રીલેક્સ પણ કરતો નથી

જીવું છું આમ ને શું કામ છું હું ?  
સૂરાલય માં પૂછાતું નામ છું હું.  
હશે બેમાંથી કોની બદનસીબી ?

દોસ્તી માં જીવજો, દોસ્તી માં મારજો  
હિંમત ના હોય તો દોસ્તી ના કરજો,  
ઝીંદગી નથી અમને દોસ્તો થી પ્યારી  
દોસ્તો માટે જ છે ઝીંદગી અમારી

સતાવે છે મને નાહક જગતના લોક એવા છે  
ભલા મદોં વિષે ઓરતને શું પૂછો છો કેવા છે!  
બધાએ બાપ જેવા છે, બધાએ ભાઈ જેવા છે

છતાં મજબૂર છું ખુદને હું એક એક જનને વેચુ છું  
ફક્ત એક પેટને ખાતર હું આખા તનને વેચુ છું - કવિ 'નઝ'

તારી એક યાદ જાણે ઘાયલ બની ગઈ,  
પ્રેમથી પીઘેલી ઘુંટ જાણે શરાબ બની ગઈ.  
મોજાઓ ઉછળવાનુ ભૂલી ગયા,  
ને જાણે સાગરની મસ્તી પણ ઓટ બની ગઈ.

કોરા કાગળમાં કઈક આમ લખુ છું,  
મોગરાના તેજને પણ શ્યામ લખુ છું,  
ઉડી ન જાય સુવાસ તારી,  
એટલે બંધ એકાન્તમાં પણ નામ લખુ છું

મારા મરણ પર દોસ્તો તમે આંશુ નહી વહાવતા  
મારા મરણ પર દોસ્તો તમે ગમ નહી કરશો  
મારી યાદ આવે તો સીધા ઉપર જ આવજો

જીવનમાં જશ નથી, પ્રેમમાં રસ નથી  
ધંધામાં કસ નથી, જવુ છે સ્વર્ગમાં  
પણ એની કોઈ બસ નથી

તુ હસે છે જ્યારે જ્યારે  
ત્યારે ત્યારે તારા ગાલમાં ખાડા પડે છે  
હુ વિચારુ છુ બેઠો બેઠો

મારા સીવાય, આ ખાડામાં પડે છે કેટલા ત્યારે

પતી પત્નીને:

મેં તારું નામ રેતીમાં લખ્યું જે ધોવાઈ ગયું  
મેં તારું નામ હવામાં લખ્યું જે પવનમાં ઘસડાઈ ગયું  
પછી તારું નામ મેં હૃદયમાં લખ્યું, ને મને હાઈ એટેક આવ્યો!

બોલ્યા કરે એ મૈત્રી, યુપ રહે એ પ્રેમ  
મીલન કરાવે એ મૈત્રી, જુદાઈ સતાવે એ પ્રેમ  
હસાવે એ મૈત્રી, રડાવે એ પ્રેમ  
તો પણ લોકો મૈત્રી મુકીને કેમ કરે છે પ્રેમ

કોણ ભલાને પૂછે છે? અહીં કોણ બૂરાને પૂછે છે?  
મતલબથી બધાને નિસ્બત છે, અહીં કોણ ખરાને પૂછે છે?  
અત્તરને નિચોવી કોણ પછી ફૂલોની દશાને પૂછે છે?  
સંજોગ ઝુકાવે છે નહીંતર અહીં કોણ ખુદાને પૂછે છે?

સુકાયેલી નદીના ક્યાંકથી પગરણ મળી આવે  
વિખૂટું થઈ ગયેલું એ રીતે એક જણ મળી આવે  
ઘણા વરસો પછી, વાંચ્યા વગરની કોઈ ચિઠ્ઠીમાં  
‘તને ચાહું છું હું’ બસ આટલી ટાંચણ મળી આવે

જમાનો જો હોય કાળો નાગ તો હું પણ મદારી છું;  
પછાડું હું ઉડતા પંખી ને એવો હું શિકારી છું.  
ખરેખર બાદશાહ બેતાબ છુ આખી આલમ નો;  
છતાં આપની મીઠી નજર કાજે ભીખરી છુ.



” ધરો ધીરજ વધુ પડતો પ્રણય સારો નથી હોતો  
અતિ વરસાદ કેં ખેડૂતને પ્યારો નથી હોતો.”

મેં કર્યો એકજ સ્થળે ઊભા રહીને ઈન્તિઝાર,  
એટલે તારા સુધી મારાથી પહોંચાયું નહીં...

અમે જીત્યા દરેક બાજી અને મશહૂર થઈ ગયા  
તારા હાસ્ય માં હસ્યા તો આંસુ દુર થઈ ગયા  
શું કરિશ્મા છે તમારી આ દોસ્તી નો જુઓ  
આજે અમે કાંચ માથી કોહિનૂર થઈ ગયા.

છે ઘણા એવા કે, જેઓ યુગને પલટાવી ગયા,  
પણ બહુ ઓછા છે, જેઓ પ્રેમમાં ફાવી ગયા.  
હું વીતેલા દિવસો પર એક નજર કરતો હતો,  
યાદ કંઈ આવ્યું નહીં, પણ આંસુઓ આવી ગયાં.

જીવનમાં મુશ્કેલીઓ તો અનેક હોય છે.  
પરંતુ, તે દરેકનો એક રસ્તો હોય છે.  
અને એ રસ્તો એને જ મળતો હોય છે  
કે જેનો ચહેરો સદાય હસતો હોય છે

દાવો અલગ છે પ્રેમનો દુનિયાની રીતથી,  
એ ચૂપ રહે છે જેને અધિકાર હોય છે.

સુંદર જો હો તબીબ તો છે એક વાત નો ડર,  
સાજા થવાની કોઈ ઉતાવળ નહીં કરે.

માનવ ઉપર છે એવા ભરોસા ના જોઈ એ,  
બદલા જગત ની રીત મુજબ ના ના જોઈ એ,  
તારુ એ બહાનુ હોય જો અમને નીભાવવા નુ,  
તો ઓ ખુદા અમારે એવી શ્રદ્ધા ના જોઈ એ.....

પ્રેમ એટલે કે તારા ગાલો ના ખાડા મા ડુબી જતાં મારા ચોર્યાસી લાભ વહાણો નો કાફલો....

આ જિંદગી આમ જુઓ તો અમારી છે  
પણ એમા થોડી મહેરબાની તમારી છે  
ભલે ને ઉગી તમારા હાથમાં એ રેખાઓ  
પણ એમા કિસ્મત લખેલી અમારી છે

જિગરના ટુકડાઓને વિણવા નિકળ્યો છું  
નાજાણે કોના પ્રેમને શોધવા નિકળ્યો છું  
રાતના અંધારામા દિવો લઇને નિકળ્યો છું  
પ્રેમના નગરમા પ્રેમને શોધવા નિકળ્યો છું

બસ દુર્દશાનો એટલો આભાર હોય છે,  
જેને મળું છું મુજથી સમજદાર હોય છે.

ના તને ખબર પડી ના મને ખબર પડી,  
કે હું પ્રેમમાં પડ્યો કે તું પ્રેમમાં પડી  
કારણમાં કઈ નહીં બે આંખ લડી  
હું પ્રેમમાં પડ્યો કે તું પ્રેમમાં પડી

ધંધો ના કોય ગમતો ના નોકરી ગમે છે, જ્યાર થી અમને એક છોકરી ગમે છે,  
એનો જ ચહેરો ગુમ્યા કરે છે મગજ મા, ના ઘર ગમે છે ના ઓસરી ગમે છે.....

“સુકાયેલી નદીના ક્યાંકથી પગરણ મળી આવે  
વિખૂટ્ટ થઈ ગયેલું એ રીતે એક જણ મળી આવે  
ઘણા વરસો પછી, વાંચ્યા વગરની કોઈ ચિઠ્ઠીમાં  
‘તને ચાહું છું હું’ બસ આટલી ટાંચણ મળી આવે”

જીવનમાં મુશ્કેલીઓ તો અનેક હોય છે,  
પરંતુ, તે દરેકનો એક રસ્તો હોય છે.  
અને એ રસ્તો એને જ મળતો હોય છે  
કે જેનો ચહેરો સદાય હસતો હોય છે

માનવ ઉપર છે એવા ભરોસા ના જોઈ એ,  
બદલા જગત ની રીત મુજબ ના ના જોઈ એ,  
તારુ એ બહાનુ હોય જો અમને નીભાવવા નુ,  
તો ઓ ખુદા અમારે એવી શ્રદ્ધા ના જોઈ એ.....

વો હમપે અજુબ અસર રખતે હૈ

હર જસબાત એ દિલકી ખબર રખતે હૈ  
શાયદ કી હમ ઉન્હેં ભૂલ જાતે  
મગર વોહ યાદ આનેકા  
હર એક હુન્નર રખતે હૈ!

મન માં જો "Sim card" હોત  
તો યાદો ને Delete કરી શકાતી હોત...  
મગજ માં જો "Printer" હોત તો,  
વિચારો ની Print Out કાઢી શકાતી હોત...  
હૈયા માં જો "Pen Drive" હોત  
તો જીન્દગી નો Data એમાં સમાયો હોત...  
મોઢામાં જો "Blue Tooth" હોત તો,  
વાતો ને Transfer કરી શકાતી હોત...

આંખો માં જો "SMS" હોત તો,  
તસ્વીરો ને Receive કરી શકાતી હોત...  
...કદાચ...  
જીન્દગી જો "Computer" હોત તો,  
તેને પણ Restart કરી શકાતી હોત

## રાખજે

વિશ્વની સાથે ભલે સંબંધ રાખજે  
આગણે પાછો ફરે પ્રબંધ રાખજે  
જ્યાં ગુલાંટો ખાઈ બેઠા થયા હતા  
એ વતનના પ્યારને અકબંધ રાખજે  
વીંટળાઈ જોખમો પગમાં નડે ભલે  
તું વિસામો શોધવાનું બંધ રાખજે  
એનું છે અસ્તિત્વ જો તારી હયાતિ છે  
નાળ જોડી રાખજે અનુબંધ રાખજે

સળવળે માળો થતાં ચી ચી બખોલમાં  
બારીઓ ખોલી હવા નિર્બંધ રાખજે  
દેહ માટીનો ઘડો છે એ કબૂલ છે  
પણ ઘડાને તું ટકોરાબંધ રાખજે  
'કીર્તિ'ને અપકીર્તિ બે સિક્કાની બાજુઓ  
લોક ઉછાળે નહિ પ્રતિબંધ રાખજે  
કીર્તિકાંત પુરોહિત.

કેમ ના વંદેમાતરમ કહીએ, યાર ! ધરતી અમારી માડી છે.- ખલીલ ધનતેજવી

અઢી અક્ષરનું ચોમાસું, ને બે અક્ષરના અમે;  
ખોટ પડી અડધા અક્ષરની, પૂરી કરજો.. તમે!  
ત્રણ અક્ષરના આકાશે આ બે અક્ષરની વીજ,  
બે અક્ષરનો મોર છેડતો સાત અક્ષરની ચીજ.  
યાર અક્ષરની ઝરમર ઝીલતાં રૂવાડાં સમસમે,  
ખોટ પડી અડધા અક્ષરની, પૂરી કરજો.. તમે!  
યાર અક્ષરના ધોધમારમાં છલબલ આપણાં ફળિયાં;  
આંખમાં આવ્યાં પાંચ અક્ષરનાં ગળાબૂડ ઝળઝળિયાં!  
ત્રણ અક્ષરનું કાળજું કહો ને, ધાવ કેટલા ખમે ?  
ખોટ પડી અડધા અક્ષરની, પૂરી કરજો.. તમે!  
પાંચ અક્ષરનો મેઘાડંબર, બે અક્ષરનો મેહ,  
અઢી અક્ષરના ભાગ્યમાં લખિયો અઢી અક્ષરનો વેહ!  
અડધા અક્ષરનો તાળો જો મળે, તો સઘળું ગમે,  
ખોટ પડી અડધા અક્ષરની, પૂરી કરજો.. તમે!  
ત્રણ અક્ષરનું માવહું મુજ સંગ અટકળ અટકળ રમે!  
ખોટ પડી અડધા અક્ષરની, પૂરી કરજો.. તમે!  
-ભગવતીકુમાર શર્મા

દર્દ દેવા વાળા બહુજ મળશે

પણ દર્દ લેવા વાળા ઓછા મળશે  
નાજુક સમયમાં અમને યાદ કરજો  
કારણકે દિલ થી પ્રેમ કરવા વાળા દોસ્ત બહુ ઓછા મળશે.

સબંધના મોતિ પરોવી રાખજો,  
વિશ્વાસની દોરી મજબુત બનાવી રાખજો,  
અમે ક્યાં કીધું કે અમારા જ દોસ્ત બનીને રહો,  
પણ તમારા દોસ્તો ની યાદીમાં,  
એક નામ અમારું પણ રાખજો .....

પ્રેમ કરે એને જગત માફ નથી કરતુ,  
કોઈ એની સાથે ઇન્સાફ નથી કરતુ,  
લોકો પ્રેમને પાપ કહે તો છે,  
પણ કોણ એવું છે જે આ પાપ નથી કરતુ?

ઝીંદગી મળવી એ નસીબની વાત છે  
મોત મળવું એ સમયની વાત છે  
પણ મોત પછી પણ કોઈના દિલમાં જીવતા રેહવું  
એ ઝીંદગીમાં કરેલા કર્મની વાત છે..

મોકલુંછુંમીઠીયાદક્યાંકસાયવીરાખજો,  
મિત્રો હમેશા અમૂલ્ય છે યાદ રાખજો,  
તડકામાં છાયો ના લાવી શકે તો કંઈ નહિ,  
ખુલા પગે તમારી સાથે ચાલશે એ જ યાદ રાખજો.

મેં જિંદગીને પૂછ્યું તું શા માટે સહુને દર્દ આપે છે.??  
જિંદગીએ હસીને જવાબ આપ્યો મેં તો આપી છે સહુને ખુશી,  
પણ એકની ખુશી બીજાનું દર્દ બની જાય છે...

જીવનમાં સમયની સાથે ચાલવું પડે છે,  
જે ના મજુર હોય તે જ કરવું પડે છે,  
રોવાનો અધિકાર પણ નથી આપતું આ જગત,  
ક્યારેક લોકોને બતાવવા માટે પણ હસવું પડે છે . . .

આંસુ સુકાયા પછી જે મળવા આવે...  
એ સંબંધ છે..., ને...  
આંસુ પેહેલા મળવા આવે .....,  
એ પ્રેમ છે.....

હસવું નથી છતાં હસવું પડે છે,  
કોઈ પૂછે કેમ છે? તો જલસા એમ કહેવું પડે છે,  
જીવન નો આ એવો રંગમંચ છે,  
જ્યાં બધા એ ફરજિયાત નાટક કરવું પડે છે!

અટપટો રસ્તો હશે તો ચાલશે,  
ભોમિયો સાચો હશે તો ચાલશે.  
જે બતાવે, હોય કેવળ સત્ય તો,  
આયનો જૂનો હશે તો ચાલશે.  
પર્ણ લીલું હોય કે પીળું ભલે,  
ડાળથી નાતો હશે તો ચાલશે.  
સહેજપણ હો છાંયડાની શક્યતા,  
માર્ગમાં તડકો હશે તો ચાલશે.  
મેળવું જો જાત રાખીને અખંડ,  
રોટલો અડધો હશે તો ચાલશે.  
ખુદને મળવા શું વધારે જોઈએ..?  
ઘરનો એક ખૂણો હશે તો ચાલશે. - સુનીલ શાહ

બધી ઇચ્છાઓ અમારી અધુરી નથી હોતી  
દોસ્તોમાં ક્યારેય દુરી નથી હોતી  
જેના દિલમાં રેહતા હોય દોસ્ત તમારા જેવા  
એમને ઘડકનની જરૂરત નથી હોતી.

દોસ્તી તૂટશે તો જીંદગી વિખરાય જશે  
આ તમારા વાળ નથી જે સેટ થઈ જશે  
પકડી લો હાથ એમનો જે તમને ખુશી આપે  
નહી તો રડતાં-રડતાં જ જીંદગી વીતી જશે.

પૂનમની રાતે ચાંદની વળ ખાતી હતી,  
શીતળતાભર્યા સ્પર્શથી રાત મલકાતી હતી,  
તારા ગુલાબી મુખ પર શરમના ફૂલ,  
એની મદહોશી જોઈ શરમ, શરમાતી હતી.

સપના પણ કેટલા છેતરામણા હોય છે,  
એમાય કેટલા રિસામણા-મનામણા હોય છે,  
ખુલી ગયા પછી વિરાન જણાય છે બધું,  
એ બંધ આંખે જ સોહામણા હોય છે.

ખુશીમા રાત વિતાવે છે ઘણા છતાં ગમની સાથે સવાર થાય છે...  
ક્યાંથી ચેન પડે દિલને હવે, જ્યાં જુઠ્ઠી મહોબતનો માર ખાય છે...  
દિલથી દિલના સોદા નથી, ફક્ત શરીરના વેપાર થાય છે...  
રાત્રે મુઝરામાં ફૂલ વરસે છે ને સવારે મંદિરમાં હાર થાય છે...  
મને હજી સમજાતું નથી કે ખુદા કેમ આટલો ઉદાર થાય છે



ડરો નહીં નિષ્ફળતાથી, તેનો પણ કિનારો હોય છે.  
છકો નહીં સફળતાથી, આ નશો ઉતરનારો હોય છે.  
રડો નહીં ઠોકરથી, તે દર્દ જનારો હોય છે.  
થાકો નહીં મહેનતથી, તે જુસ્સો ફળનારો હોય છે.  
હારો નહીં સમાજથી, તે ફક્ત બોલનારો હોય છે.  
મારો નહીં દીન-દુખીયાને, ઉપરવાળો જોનારો હોય છે.  
ચાલો સુખની શોધમાં, જીતનો જન્મ ફક્ત તમારો હોય છે

**કિસી શાયરને મૌત કો ક્યા ખુબ કહા હે**

જિંદગી મેં દો મીનીટ કોઈ મેરે પાસ ના બૈઠા,  
આજ સબ મેરે પાસ બૈઠે જા રહે થે

કોઈ તોહફા ના મિલા આજ તક મુઝે,  
ઔર આજ ફૂલ હી ફૂલ દિયે જા રહે થે  
તરસ ગયે હમ કિસી કે હાથ સે દિયે એક કપડે કો,  
ઔર આજ નયે નયે કપડે પહેનાયે જા રહે થે.  
દો કદમ સાથ ના ચલને કો તૈયાર થા કોઈ,  
ઔર આજ કાફિલા બનાકર લે જા રહે થે.  
આજ પતા ચલા કે “મૌત” ઇતની હસીન હોતી હે,  
કમબખ્ત “હમ” તો યુહી જીયે જા રહે થે.

નિખાલસ મન નો નિખાર અલગ હોય છે,  
પ્રેમ સામે દુનિયા નો વ્યવહાર અલગ હોય છે,  
આંખો તો હોય છે સૌની સરખી,  
બસ જોવાનો અંદાઝ અલગ હોય છે.

અન્યની શી રીતે કરશે માપણી,  
કેં અલગ ઊંચાઈ પર ખુદને ગણી.?  
સ્નેહની કૂંપળ વિશે સમજે શું એ..?  
જેરો જીવનભર નવી ભીંતો ચણી.  
થાકનો તો પ્રશ્ન ક્યાંથી ઉદભવે,  
છે સફરનો માર્ગ તારા ઘર ભણી.  
હોય પરપોટો અને પથ્થર નજીક,  
ફૂટવાની શક્યતા રહે છે ઘણી.!  
પાંખ આવી કે એ બસ ઊડી જશે,  
એ ગણીને, રાખજે તું લાગણી..! – અજ્ઞાત

એક પ્રેમ નો મુકામ છે તારા હાથ માં,  
ક્યારેક વિશ્રામ તો ક્યારેક તોફાન છે તારા હાથ માં,  
રાધા નો હાથ જોઈને કહ્યું હતું એક જ્યોતિષે,  
તું ભલે ગોરી, પણ એક શ્યામ લખ્યો છે તારા હાથ માં.

રસ્તા પર લખેલું હોય છે, “યહાં ચલના મના હૈ”  
સરકારી ઓફીસ માં લખેલું હોય છે, “યહાં થુંકના મના હૈ.”  
પણ કોલેજ માં એમ કેમ નથી લખેલું હતું કે “યહાં દિલ તોડના મના હૈ”?

અંતર થી યાદ કરીને એક વાર મળી લેજો,  
હયાતી નહિ હોય ત્યારે યાદ કરીને શું કરશો?  
હેત ની ભરતી આવીને ચાલી જશે,,,,,  
પછી કિનારે છીપલાં વીણી ને શું કરશો..??

વીતેલા પળ યાદ આવતા રોવું પડે છે,

જે અમૂલ્ય હોય એનેજ ખોવું પડે છે.  
વાસ્તવિકતા અને કલ્પના ભલે વિરુદ્ધ હોય,  
તોય સાકાર કરવા સપનું તો જોવુજ પડે છે.

કોઈની રાહ જોવી એ અઘરું છે,  
કોઈને ભૂલી જવું એ એનાથી પણ વધારે અઘરું છે,  
પણ સૌથી વધારે અઘરું એ નક્કી કરવું,  
કે એની રાહ જોવી કે ભૂલી જવું..???

ગુમાવાનું જીવન માં ઘણું હોય છે,  
પણ પામવાનું માપસર નું હોય છે.  
“ખોવાયું” છે તેનો અફસોસ કદી નાં કરતા,  
જે નાં ખોવાય એજ “આપણું” પોતાનું હોય છે.

આકાશમાં ચમકતા બધા તારા નથી  
મંદિરે જતા બધા સારા નથી  
નદિઓ ના પાણી બધા ખારા નથી  
અને મને ગમતા બધા મારા નથી.

શરમ એને આવે છે જે શરમ થી શરમાય છે,  
અમે તો રહ્યા બેશરમ,શરમ અમારાથી શરમાય છે.....!!!

જેને અમે પ્રેમ કરતા હતા,  
એને અમારા પ્રેમ પર શક હતો  
જ્યારે એમને અમારા પ્રેમ પર વિશ્વાસ આવ્યો.

ત્યારે અમારા પર હક કોઈ ઓર નો હતો.

દિલ ની વાત હોંઠો પર આવીને અટકે છે.....,  
આંસુ બની આંખ માંથી કોઈ ટપકે છે.....,  
ખુશનસીબ છે , જેને સાચા સમજનારા મળે છે.....,  
બાકી સાચી લાગણી માટે લાખો તરસે છે .....

**દિલ દિલસે .....**

દિલ દિલસે કભી જબ મિલતા હૈ તો કૌન પરાયા લગતા હૈ,  
દિલ દિલસે નહિ કભી જલતા હૈ, દિલ અપના રંગ બદલતા હૈ,  
દિલ અપના રંગ બદલતા હૈ, તબ ધ્યારા પરાયા લગતા હૈ,  
કોઈ કહેતા હૈ દિલ ગોરા હૈ, કોઈ કહેતા દિલ કાલા હૈ  
દિલ અપના રંગ બદલતા હૈ, તબ દિલકા રંગ નિરાલા હૈ,  
જબ દિલસે ધ્યાર નિકલતા હૈ, તબ દિલકા રંગ નિખરતા હૈ,  
દિલ દિલકી બાત સમજતા હૈ, તબ ખૂશિયોં સે વો ઉછલતા હૈ,  
જબ દિલ પે ચોટૈં ગીરતી હૈ, તબ દિલ યે મરીઝ હો જાતા હૈ,  
દિલ અપના રંગ બદલતા હૈ, તબ કોઈ ક્યા કર સકતા હૈ,  
જબ દિલ પે દોરે પડતે હૈં, સબ દૌડે દૌડે રહતે હૈં,  
જબ દિલકા રિપેરીંગ હોતા હૈ, તબ જેબે ખાલી હોતી હૈ,  
હર જિસ્મમેં એક દિલ હોતા હૈ, વહ અપના ખૂન પરખતા હૈ,  
જબ દિલસે સૌદા હોતા હૈ, ક્યા ઉસકી કિમત હોતી હૈ?  
દિલ દિલસે કભી નહિ ડરતા હૈ, વહ દિલકા ધ્યાર સમજતા હૈ  
જબ દિલકી જૂબાં કુછ કહેતી હૈ, આંખોસે ઈશારા હોતા હૈ,  
દિલ દિલકો દિવાના કરતા હૈ, દિલ દિલકો બેગાના કરતા હૈ,  
જબ દિલકો દિલ ઠકરાતા હૈ, દિલ મુઝકો માયુસ કરતા હૈ – નટુભાઈ મોઢા – માયસોર

હતા જ્યારે સાથે ત્યારની વાતો યાદ આવે છે,

તમે ભૂલી જાવ પણ તમારી દોસ્તી યાદ આવે છે,  
હસીખુસી અને મસ્તી નાં પલ કોને નાં સતાવે,  
વીતેલા કાલ ની વાતો આજે યાદ આવે છે.

જબ ગુજરતે હૈ તેરી ગલીયોસે,  
મેરી નજરે એક ઝલક દેતી હૈ.  
ગમ યે નહીં કી આપ દરવાજા બંધ કર દેતે હો,  
ખુશી તો યે હૈ કી આપ હમોં અબભી પહેચાન લેતે હો! - અજ્ઞાત

ગીલે કાગજકી તરહ યહ જિંદગી હમારી  
કોઈ લીખતાભી નહીં, કોઈ જલાતાભી નહીં  
ઇસ કદર અકેલે હો ગયે હૈ હમ આજકલ  
કોઈ સતાતાભી નહીં, કોઈ મનાતાભી નહીં! - અજ્ઞાત

**દીકરો કે દીકરી?**

દીકરો વારસ તો દીકરી પારસ  
દીકરો વંશ તો દીકરી અંશ  
દીકરો આન તો દીકરી શાન  
દીકરો તન તો દીકરી મન  
દીકરો સંસ્કાર તો દીકરી સંસ્કૃતિ  
દીકરો દવા તો દીકરી દુઆ  
દીકરો ભાગ્ય તો દીકરી વિધાતા  
દીકરો શબ્દ તો દીકરી અર્થ  
દીકરો ગીત તો દીકરી સંગીત  
દીકરો પ્રેમ તો દીકરી પૂજા  
પરંતુ

દીકરીમાં દીકરો બનવાની ક્ષમતા છે

પણ

દીકરો ક્યારેય દીકરી ના બની શકે!-અજ્ઞાત

સરવાળા ની અપેક્ષા એ પ્રેમ નાં થાય,  
ગુણાકાર ની લાલચે પણ પ્રેમ નાં થાય,  
બાદબાકી ની તૈયારી હોય તો અને  
ભાગાકાર નો સહેજ પણ ડર નાં હોય તો જ પ્રેમ થાય.....ફેસબૂકમાંથી...

કેવું થાય જ્યારે ગમતું સ્વપ્ન તુટી જાય  
ફરિયાદ પણ કેમ થાય જ્યારે કોઈ અંગત રુઠિ જાય,  
શું દોષ આપુ હું મારાં ઇશ્વરને,જુનો રિવાજ છે,  
કોઈ મળે છે તો કોઈ છુટી જાય છે .....ફેસબૂકમાંથી...

હોઠ પર રમતુ હતુ તે નામ છોડી જાઉ છુ,  
તે સંબંધો થી ભરેલુ ગામ છોડી જાઉ છુ;  
જે હતુ તે ગટગટાવી ને પી ગયો છુ દોસ્તો,  
ને હવે બસ ખાલી પડેલો જામ છોડી જાઉ છુ.....ફેસબૂકમાંથી...

લખેલા શબ્દ લીટા મારવા થી ભૂસાતા નથી,  
દિલ માં પ્રેમ ના મોજા એમ જ ઉભરાતા નથી,  
સંબંધો નક્કી થયા હોય છે ઉપર થી જ,  
એટલે તો આપને એક બીજા ને ભૂલતા નથી. -ફેસબૂકમાંથી...

અશ્રુ જે પીવે છે તે મા હોય છે,  
મનમાં જે રૂવે છે તે મા હોય છે.

ડાઘ જે પાડે તે બાકીના બઘા,  
ડાઘ જે ધુએ છે તે મા હોય છે.  
આવનાર કોઈ ન હોય તે છતાં,  
રાહ જે જુએ છે તે મા હોય છે.  
આખા ઘરને પ્રેમથી ઊંઘાડ્યા બાદ,  
અંતે જે સુવે છે તે મા હોય છે." - અજ્ઞાત

કોને ખબર હતી કે પ્રેમનો એક દી એવો અંજામ આવશે.  
કોઈ પૂછશે મારું નામ તો મારા હોઠે તારું જ નામ આવશે.  
સાયવ્યા કર્યા છે જે કપનાઓના ભારા જાગતી જાતોમાં;  
એકલતાની અંધારી ગલીઓમાં રોશની કરવા કામ આવશે.  
સાયવીને આપ્યો છે ચાકીએ મને આજની આ મહેફિલમાં;  
મને શી ખબર મારે હાથ આજ એ જ ગળતો જામ આવશે.  
રોજ રોજ જાઉં હું અલગ અલગ મંદિરોમાં અહિં હર ગજીએ;  
એક દી તો એમાં ક્યાં રામ આવશે ક્યાં રાધાનો શામ આવશે.

બોલાવ્યા ત્યારે કદી ન આવ્યા હતા મારા દુઃખ સાંભળવા;  
નટવર તારી મૈયતમાં તારા એ તાળી મિત્રો તમામ આવશે - નટવર મહેતા

દુઃખી થાવાને માટે કોઈ ધરતી પર નહીં આવે;  
હવે સદીઓ જશે ને કોઈ પયગમ્બર નહીં આવે..  
હવે તો દોસ્તો ભેગા મળી વ્હેંચીને પી નાખો,  
જગતનાં ઝેર પીવાને હવે શંકર નહીં આવે...

કોને શું દેખાતું નથી ? (Unknown)

શ્રીમંતને ગરીબાઈ દેખાતી નથી.

ભાગ્યને સંજોગ દેખાતો નથી.  
લોભને વિનાશ દેખાતો નથી.  
ક્રોધને દયા દેખાતી નથી.  
ભુલને કબુલાત દેખાતી નથી.  
નાસ્તિકને શ્રદ્ધા દેખાતી નથી.  
આશાને નિરાશા દેખાતી નથી.  
દુશ્મનને દોસ્તી દેખાતી નથી.  
ઇર્ષ્યાને ઇન્સાફ દેખાતો નથી.  
દુર્જનને સજ્જન દેખાતો નથી.  
સ્વાર્થીને સંબંધ દેખાતો નથી.  
શક્તિશાળીને કમજોર દેખાતો નથી.  
ઘમંડીને લાચાર દેખાતો નથી.  
યુવાનીને ઘડપણ દેખાતું નથી.  
ભણેલાને અભણ દેખાતો નથી.  
મહેલને ઝુપડું દેખાતું નથી.  
અનાડીને સચ્ચાઇ દેખાતી નથી.

## જીવનમાં

- ખાવા જેવી ચીજ હોય તો 'ગમ' છે.
- ગળવા જેવી ચીજ હોય તો 'અપમાન' છે.
- પચાવવા જેવી ચીજ હોય તો 'બુદ્ધિ' છે.
- પીવા જેવી ચીજ હોય તો 'ક્રોધ' છે.
- આપવા જેવી ચીજ હોય તો 'ધન' છે.
- લેવા જેવી ચીજ હોય તો 'જ્ઞાન' છે.
- જીતવા જેવી ચીજ હોય તો 'પ્રેમ' છે.



- હારવા જેવી ચીજ હોય તો 'અભિમાન' છે.
- દેખાડવા જેવી ચીજ હોય તો 'દયા' છે.
- સાંભળવા જેવી ચીજ હોય તો ગુણ' છે.
- બોલવા જેવી ચીજ હોય તો 'સત્ય' છે.
- ભૂલવા જેવી ચીજ હોય તો 'ભૂતકાળ' છે.
- સુધારવા જેવી ચીજ હોય તો 'વર્તમાન' છે.
- વિચારવા જેવી ચીજ હોય તો 'ભવિષ્ય' છે.
- કાબુમાં રાખવા જેવી ચીજ હોય તો 'વાણી' છે.

સમયના વહેણમાં સમાઈ ન જતા,  
દિલના દરિયામાં ડૂબી ન જતા,  
આપની મૈત્રી છે જિંદગીથી અનમોલ,  
ક્યાંક આપની આ મિત્રતા ને ભૂલી ના જતા.

ગુનાહ વગરનો હું ગુન્હેગાર છુ,  
તમારે જેમ ગણવું હોય એમ ગણો,  
ઘડિયાળના કાંટા ફેરવી નાખ અરે દોસ્ત,  
પછી નહિ મળે આ ક્ષણો !

તમારા જેવા મિત્રો મારી મૂડી છે,  
એથી વધુ બીજી કઈ વાત રૂડી છે?  
બીજી તો સહુ ચીજ મામૂલી છે,  
મિત્રો જ ઈશ્વરની ભેટ અણમોલી છે.

સંસારમાં આ પ્રમાણે રહેવું :

એટલા નરમ ના બનશો કે લોકો તમને ખાઈ જાય.

એટલા ગરમ ના બનશો કે લોકો તમને સ્પર્શી પણ ન શકે.

એટલા સરળ ના બનશો કે લોકો તમને બનાવી જાય.  
એટલા અતડા પણ ના બનશો કે લોકો તમને મળતા ખચકાય.  
એટલા ગંભીર ના બનશો કે લોકો તમારાથી કંટાળી જાય.  
એટલા છીછરા ના બનશો કે લોકો તમને ગણકારે જ નહીં.  
એટલા મોંઘા પણ ના બનશો કે લોકો તમને બોલાવી પણ ના શકે.  
એટલા સસ્તા પણ ના બનશો કે લોકો તમને નચાવી જાય.

### ઘડપણની વ્યથા (Unknown)

કાન સુણે ના નજર ધુંધળી  
કોઈ ન ફરકે વ્હાલા,  
ચહેરા ઉપર ઉપસી આવ્યાં કરચલીઓના જાળાં.  
સંધિવાની વ્યાધિ સાથે પગમાં લાગ્યાં તાળાં,  
નસીબ આડે ફરતા ભાસે કરોડીઆના જાળાં.  
ઘવલ કેશને બોખા મોઢે, ડગમગ કાયા હાંકે,  
દૂર દૂર ભાગે રે અજવાળા, ક્ષણ ક્ષણ હૈયું વાગોળે છે જન્મારાની ગાથા,  
જીવતર ની સંધ્યા એ ડંખે વ્યથા વેદના માયા.

### માણસ ભુલ્યો... (UNKNOWN)

આજે માણસ માણસાઈ ભુલ્યો માટે કોર્ટો ઓછી પડી,  
આજે માણસ ખાવામાં ભાન ભુલ્યો માટે હોસ્પિટલો વધતી ગઈ,  
આજે માણસ ઘરમાં ખાવાનું ભુલ્યો માટે હોટલોનો રાફડો ફાટ્યો,  
આજે માણસ સંસ્કાર આપવાનું ભુલ્યો માટે વૃધ્ધાશ્રમ ઉભા થયા,  
આજે માણસ ધર્મને ભુલ્યો માટે સિનેમાઘરો ઉભરાવા લાગ્યા,  
આજે માણસ ખવડાવીને ખાવાનું ભુલ્યો માટે ગરીબી ફાટી નીકળી.

તારા પર હવે એક મારો જ અધિકાર છે;  
તારા વિના જીવવું હવે મારે ધિક્કાર છે.  
કરમ કર સનમ કે કર સિતમ મુજ પર;  
સનમ તું જે કરે એ બધું મને સ્વીકાર છે.  
તું પ્યારને પ્યાર રહેવા દઈ પ્યાર કર.  
કહે પ્યારના ક્યાં કોઈ અલગ પ્રકાર છે?  
સાયવીને ડગ માંડજે પ્રેમપંથે આજકાલ;  
ક્યાંક પ્રેમના ઓથે સંતાયેલો વિકાર છે.  
આજે તો સાકી તારી નજરોથી પીવું છે.  
તું જ કહે હવે મને તારો શો વિચાર છે?  
ક્યાંથી ભલું થાય મેરા ભારત મહાનનું?  
નપાવટ નેતાઓ ને નકામી સરકાર છે.  
શા માટે તું લખ્યા રાખે નટવર હવે અહિં?  
અહિં ક્યાં કોઈને લાગણીની દરકાર છે? -નટવર મહેતા

**પૈસો બોલે છે (અજ્ઞાત)**

મારા મરણ વખતે બધી નોટો અહિં પધરાવજો,  
મારી નનામી સાથે કોરી ચેક-બુકો બંધાવજો,  
ડાઘુઓમાં સંઘરાખોરોને પ્રથમ બોલાવજો,  
કોઈ ચૌદશિયાને પેલા દોણી દઈ દોડાવજો,  
માલને મુડી બધી મુકી દઈને જાઉં છું  
બંગલા અને મોટરો પણ અહિંયા જ મુકતો જાઉં છું,  
લખપતિ કહેવાઉં, પણ ખાલી હાથે જાઉં છું,  
શું કરું લાચાર છું, બસ એકલો હું જાઉં છું,  
જીવ મારો ધન મહિં છું, એટલું ના ભુલશો,

ભુત થઇ પાછો આવીશ એ કહીને જાઉ છું,  
છેતર્યો નિજ આત્માને, છેતરી સરકારને,  
છેતર્યા કંઇક ગરીબો, છેતર્યા લાચારને,  
કોઇ વિધવાઓને રડાવી, લઇ લીધા કુલ હાર મેં,  
ભરબજારે શેઠ થઇ લુંટી લીધા શણગારમેં,  
દીઘો દગો મિત્રો સંબંધીઓ બધાનાં પ્યારને,  
મેં છેતરી કુદરતને, છેતર્યો સંસારને,  
લાખો મુકીને જાઉ છું, દમડી રહી સાથે નથી,  
જાઉ છું તો વાલની વીંટીએ પણ હાથે નથી,  
ભરબજારે ચોકમાં, ખાંતી તમે ખોદાવજો,  
એ પુણ્યનો પૈસો નથી, એ દાનમાં દેશો નહિં,  
ને લખપતિ કાલો ગયો, એ લેખ માહિ લખાવજો,  
હેવાનના પૈસા, કોઇ ઇન્સાન ને દેશો નહિં.

આશાઓ પર પાણી ફરી જતાં વાર નથી લાગતી  
કિનારે આવી ડૂબી જતાં વાર નથી લાગતી  
જીતનો જલસો માનવાની ઉતાવળ ન કર  
જીતેલી બાજી હારી જવામાં વાર નથી લાગતી

મહેફિલમાં ગયો, હું કોઈને કામ ન આવ્યો.  
શાકી મારા સુધી આજ તારો જામ ન આવ્યો.  
ક્યારની લોગ ઇન થઈ છે રાધા આજે  
ફેઈસબુક પર આજ એનો શ્યામ ન આવ્યો!  
ઇમેઈલ ચેક કરી વારંવાર ગોપીએ  
કનૈયાનો આજ કોઈ પયગામ ન આવ્યો!

વડપ્રેસ જોયા ને બ્લોગસ્પોટ ખંખોળ્યા  
મારા જેવો ત્યાં કોઈ બદનામ ન આવ્યો.  
ચાલતો રહ્યો 'નટવર' જિંદગીભર એકલો  
પુરી થઈ જિંદગી, કોઈ મુકામ ન આવ્યો – નટવર મહેતા

## દીકરો અને દીકરી

દીકરો વારસ છે તો દીકરી પારસ છે!  
દીકરો વંશ છે તો દીકરી અંશ છે!  
દીકરો આન છે તો દીકરી શાન છે!  
દીકરો તન છે તો દીકરી મન છે!  
દીકરો માન છે તો દીકરી સ્વમાન છે!  
દીકરો સંસ્કાર છે તો દીકરી સંસ્કૃતિ છે!  
દીકરો આગ છે તો દીકરી બાગ છે!  
દીકરો દવા છે તો દીકરી દૂવાં છે!  
દીકરો ભાગ્ય છે તો દીકરી વિધાતા છે!  
દીકરો શબ્દ છે તો દીકરી અર્થ છે!  
દીકરો ગીત છે તો દીકરી સંગીત છે!  
દીકરો પ્રેમ છે તો દીકરી પૂજા છે!  
દીકરો વાદળ છે અને વરસે છે તો દીકરી ધરતી છે અને તરસે છે!  
દીકરો એક પરિવારને તારે છે તો દીકરી દસ પરિવારને તારે છે!!

જો સફરકી શુરુઆત કરતે હૈ,  
વોહ મંઝીલ કો પાર કરતે હૈ,  
એકબાર ચલાનેકા હોશલા રખો'  
મુસાફીરોકા તો રાસ્તેભી ઇન્તઝાર કરતે હૈ!

મતદારોમે ધૂમ લેતા હું, સેવકોમે ઝૂમ લેતા હું!

ખુરસી તું જહાં ભી મિલે, તેરે કદમોકો ચુંમ લેતા હું! - વિપુલ દેસાઈ

પ્રજા માટે રડતો સંસદ એ રડે, ન રડે તોય શું?

એના જુઠા વચનો એ પાળે, ન પાળે તોય શું?

ખુરસી છે અંધ, એને શું માન-અપમાન?

પાંચ વર્ષ સુધી સંસદ મળે ન મળે તોય શું? - વિપુલ દેસાઈ

જિંદગી ચાલી ગઈ છે વાતમાં ને વાતમાં  
ને અમે બેઠા રહ્યા છઈ હાથ રાખી હાથમાં  
આપ સૌ તો સુઝા છો સમજી જશો આ શે'રને  
કાવ્યના મૃત્યુ થયા છે છીછરા અનુવાદમાં  
વાંઝણું આંગણ હશેને તો'ય એ ચાલી જશે  
છાંચડો આપે નહીં એ ઝાડને ઊગાડ મા  
કોણ જાણે પાંગરીને એ હવે કેવું થશે  
લાગણીનું બીજ રોપ્યું છે અમે પથરાળમાં  
એ હળાહળ સત્ય હો કે હોય અફવાનો વિષય  
જે તને ગમતી નથી એ વાતને અપનાવ મા  
બારમો છે ચંદ્રમાં મારે અને આ થાકને  
મંઝિલોને પીઠ દેખાડી ગયો છું રાહમાં  
આંખનું સન્માન રાખી, સ્મિત રાખી હોઠ પર  
દર્દ જેવા દર્દને ભીડી શકું છું બાથમાં  
એ પછી તો શબ્દનો મેળાવડો યોજાય છે  
એ ખરું સંકોચ જેવું હોય છે શરૂઆતમાં  
'પ્રેમ' પણ ગઝલોની માફક થઈ ગયો મૃત્યુપરંત  
આંખ મીંચેલો ગણીને તું કફન ઓઢાડ મા.

- જિગર જોષી 'પ્રેમ'

અમે ઝીંદગી સવારી ને બેઠા..  
તમે આવશો એવુ વિચારી ને બેઠા.  
ફક્ત તમારા એક દિલ ને જીતવા,  
અમે આખો સંસાર હારી ને બેઠા.....

અરે ઓ મતદારો, હું એટલા માટે રડું છું કે  
નથી ચુંટ્યા પ્રધાનોને તમારા ખીસામાંથી ?  
મળી જ્યાં ખુરસી,મતદારો બધા ભૂલાય ગયા.  
બંદુકની ગોળીથી, તમે બધા ગભરાય ગયા. - વિપુલ દેસાઈ

અમારા સત્યાગ્રહને યાહેતો મુશીબત કહેજો  
તમારા ગોળીબારને અમારા પ્રત્યેની નફરત કહેજો  
કિન્તુ, ચુંટણી ટાણે, અમારા જખ્મો યાદ આવે  
તો,તમારી ગોળીના જખ્મોને,અમારી શહાદત કહેજો. - વિપુલ દેસાઈ

ગમે તેટલો સત્યાગ્રહ કરીને ન્યાય મેળવીશું  
તમારા ગોળીબાર સામે આંખો ચાર કરીશું  
સત્યાગ્રહમાં ઝુકાવીને,ફૂલવાનો અમને ડર નથી.  
ડુબીશું તો લાશ બનીને કિનારો પાર કરીશું. - વિપુલ દેસાઈ

ચુંટણી ટાણે મતદારોમાં ઉઠે છે આંધી  
હું પણ સમય પારખીને બનું છું ગાંધી  
ગાંધીને નામે વટલાવું છું મતદારોને  
ચુંટાયા પછી અટવાવું છું મતદારોને - વિપુલ દેસાઈ

ટીકીટ બુકિંગ અર્થે ફોન કર્યો બોરીબંદર  
કમનશીબે લાગ્યો રોંગ નંબર  
પૂછ-પરછનો જવાબ મળ્યો સ્મશાનેથી  
કોઈ પણ સમયે આવી શકો છો અંદર - વિપુલ દેસાઈ

અમે ઝીંદગી સવારી ને બેઠા..  
તમે આવશો એવું વિચારી ને બેઠા.  
ફક્ત તમારા એક દિલ ને જીતવા,  
અમે આખો સંસાર હારી ને બેઠા.....

અંધારામાં પ્રકાશતા બધા કઈ આગિયા નથી હોતા  
એક શય્યા પર સુનારા બધા કઈ પતિ-પત્ની નથી હોતા.  
સેવાને નામે ચુંટાનારા બધા કઈ સેવક નથી હોતા  
તેમ ગોળીબાર કરાવનારા બધા કઈ બહાદુર નથી હોતા - વિપુલ દેસાઈ

સ્વાર્થ માટે સહુ સગા થાય છે, સ્વાર્થ માટે સહુ સગા થાય છે  
સબંધના નામે દગા થાય છે, ક્યાં નિભાવે છે આજે દોસ્તી કોઈ!  
દોસ્તો સાવ બેવફા થાય છે, કરે જે સંકલ્પ સાથે રહેવાનો



એ લોકોજ જલ્દીથી જુદા થાય છે, બનીને આવે છે ઇન્સાન ખુદા  
અહી આવીને ક્યાં કોઈ ખુદા થાય છે?, ઘણા યુગોથી રામ ગયા ને  
આજે રામના નામે રાવણો બધા ભેગા થયા છે, ને કહે છે કે આજ તો વફા છે આ જ ઇન્સાફ છે પ્રભુ  
તારો?, કે અહી ગુનેગારોને નહિ, નિર્દોષને સજા થાય છે - અજ્ઞાત

મૌન સાથે જાતને ઘોળ્યા કરો.  
બંધ આંખે બારણા જોયા કર  
આથમેલો સુર્ય ઉગશે પણ ખરો ,  
ઉંબરા બસ આશથી ઘોયા કરો.  
કોણ આવ્યું કોણ ત્યાંથી જાય છે,  
સાવ ખુલ્લા ભીતરે જોયા કરો.  
કોણ સંભાળશે ગઝલ જેવા હવે,  
શબ્દે શબ્દે રોદણાં રોયા કરો.  
-અસલ પાલનપુરી

રોટલો માંગે, કોઈ જગતમાં, કોઈ તો વળી, માંગે પીઝા રે  
ગુજરાતી કે', વેઠ કરીને, પેટ ભરીશું, આપો વીઝા રે  
શક્તિથી હું, ભક્તિ કરું, માત ક્યારે, કળશ ઢોળે રે  
એક દિવસ તો, જઈને પડું, હું લીબર્ટી-માના ખોળે રે  
કેમ અમે રે આહી પડ્યા, જઈ મહાસુખ માણે બીજા રે  
ગુજરાતી કે' વેઠ કરીને પેટ ભરીશું, આપો વીઝા રે  
જર્સીના, ચોકમાં જોને, કેટલા બધા, પંખી ચણે રે  
મા..માનું ઘર, કેટલે હજુ, દીવા બળે જો ને પણે રે  
ઓલ્યા ઓબામા, મારા રે મામા, ઊંચકી લે! થઈ પગમાં ઈજા રે  
ગુજરાતી કે' વેઠ કરીને પેટ ભરીશું, આપો વીઝા રે  
મંગલ ફાઈલ, ખોલો દયામય, ખોલો ને વા'લા, જલદી ખોલો રે  
હું ધૂસું ને, મારી પાછળ, ખાનદાન આખું, કરે ફોલો રે!

ભાઈભત્રીજા, સાસુ સસરા, સાળા સાઢુ, બેન ને જીજા રે  
ગુજરાતી કે' વેઠ કરીને પેટ ભરીશું, આપો વીઝા રે  
- રઘશ મણિયાર

એક સચ્ચાઈ છે જેને હું સહી શકતો નથી,  
ખૂબ સીધી વાત છે પણ હું કહી શકતો નથી;  
ને એમ પણ હું ભોગવું છું મૌન રહેવાની સજા,  
તો લે કહું, તારા વગર જા... હું રહી શકતો નથી.  
હું તને કારણ વગર બોલાવી પણ શકતો નથી,  
કે કોઈ બહાના વગર હું આવી પણ શકતો નથી;  
એક મજબૂરી છે જેનું નામ શાયદ પ્રેમ છે,  
ત્યાગી પણ શકતો નથી અપનાવી પણ શકતો નથી. -ફેસબુકમાંથી...

સુખ મળે છે તારી બાહો માં  
સમાવી લે તારા દિલ માં  
સપનું નહિ મને આશિક બનાવી લે કેમ કે  
થોડો સમય તો રહી છું હું તારી આંખો માં. -ફેસબુકમાંથી...

વાત ઇશારે સમજાય તેનું નામ....પ્રેમ  
એકને વાગે ને બીજા ને દર્દ થાય એનું નામ....પ્રેમ  
દિલ ભલે ધબકતું હોય જુદા જુદા  
ધબકારા બન્ને ને સાથે સંભળાય એનું નામ....પ્રેમ -ફેસબુકમાંથી

"મિલાવી જામ અમે તો જિંદગી પી ગયાં,  
મદિરા તો શું આપની કમી પણ પી ગયાં,  
રડાવી જાય છે અમને બીજાનાં દર્દો,  
બાકી અમારાં દર્દો તો અમે હસીને પી ગયાં..."

માનવીનાં મનસુબા નો તાગ કદી જડતો નથી  
કેવી કરામત છે કુદરતની  
એક સરખા માનવી કદી ઘડતો નથી  
તારા વિના નહિ જીવી સકુ એવું કેહેનાર  
કદી સાથે મરતો નથી...

મરતા નથી હોતા બધા લોકો મોતથી,  
કોઈને જિંદગીનો માર લાગે છે.  
અમથા નથી વળતા વૃદ્ધો કમરથી,  
સંઘરેલા આંસુનો એને ભાર લાગે છે.  
લડી જુએ છે શુરા ભગવાનનીય સામે,  
નસીબમાં આપણાં હાર જ હાર લાગે છે.  
ચાલ્યું નથી કોઈનું આજ સુધી એની સામે,  
તકદીરની તલવાર ધારદાર લાગે છે.  
મુશ્કેલ બને છે જીવવું જ્યારે,  
મોત સહેલું, જીવન પડકાર લાગે છે.  
માગે છે ઘણા મોત એ પણ નથી મળતું,  
એને તો આવતા ય કેટલી વાર લાગે છે – ડૉ. દિલીપ પટેલ

દિલ મેં દીધું આપને દીઠા વિના  
મંઝીલે પહોંચી ગયો રસ્તા વિના  
એમનાં દર્શન થયાં મોકા વિના  
સ્વપ્ન એક જોયું હતું નિદ્રા વિના  
કોઈ માને કે ન માને સત્ય છે  
ચાંદ જોયો છે અમે ડાઘા વિના  
આપણે પણ મૌનનો દરિયો હવે  
પાર કરીએ શબ્દની નૌકા વિના

જાય છે ક્યાં ઘરની દીવાલો બધી  
આજ અમને કાંઈપણ પૂછ્યા વિના  
કોણ અચાનક આવ્યું ઘરમાં અદમ  
કેમ અજવાળું થયું દીવા વિના ?  
દિલ - અદમ ટંકારવી

ચાલતા રહ્યા જિંદગીભર જે સાથે એ કામ ન આવ્યા;  
મારી મથ્યતમાં મારા એ દોસ્તો તમામ ન આવ્યા.  
ગયો મથખાને તેં આપેલ ગમને વીસરવા સનમ;  
સાકીએ જે ભર્યા હતા મારે હાથ એ જામ ન આવ્યા.  
બોર ચાખીને ચાખીને બોખી થઈ શબરી કળિયુગમાં;  
થાકી હારી ગઈ એ,એઠાં બોર ખાવા રામ ન આવ્યા.  
ક્યારની લોગ ઈન થઈ છે રાધા ને ઘેલી ગોપીઓ;  
આજે ફેઈસબુક પર કેમ એમના શ્યામ ન આવ્યા?  
કેવી શરુ કરી છે સફર નટવર તેં અહિંયાં જિંદગીની?  
પુરા થઈ ગયા રસ્તાઓ, કોઈ પણ મુકામ ન આવ્યા - નટવર મહેતા

ભારે સખત પહેરા અને એ જાપતા ઓછા પડ્યા  
સરકી ગયું પંખી પલકમાં ફાંસલા ઓછા પડ્યા  
રાખી ન'તી સહેજે કસર બરબાદ કરવામાં મને  
પણ એમના એ છળ-કપટના ત્રાગડા ઓછા પડ્યા  
ખુલ્લી પડી ગઈ વાત એનાં નેણના અણસારથી  
ધારણ કર્યા'તા મૌનના એ અંચળા ઓછા પડ્યા  
સમજ્યા નહિ એ વાત મારી, દોષ એ મારો જ છે  
આપ્યા હતા મેં ખંતથી એ દાખલા ઓછા પડ્યા  
કંઈ કેટલી લાંબી હતી એના વિરહની રાત એ  
ગણતો ગયો, ગણતો રહ્યો ને તારલા ઓછા પડ્યા

આવ્યા હતાં એ લઈ કટક 'બેજાન'ને હંફાવવા  
જખમો હતા કાતિલ બધા, પણ બાપડા ઓછા પડ્યા  
– 'બેજાન' બહાદરપુરી

રાત સવારની રાહ નથી જોતી ,  
ખુશ્બુ ઋતુ ની રાહ નથી જોતી ,  
જે પણ ખુશી થી મળે દુનિયામાં ,  
એને શાન થી સ્વીકારજો ,  
કેમકે જિંદગી સમય ની રાહ નતી જોતી ....

જેને ખુદાની સાથે વધુ પ્યાર હોય છે  
એ હોય છે ગરીબ ને લાચાર હોય છે.  
એના ઉપર તો જીતનો આધાર હોય છે  
મરવાને માટે કેટલા તૈયાર હોય છે.  
ઊડતા રહે છે ચોતરફ કોઈ રોક-ટોક વિણ  
આકાશમાં જે પંખીઓ ઊડનાર હોય છે.  
વ્યક્તિને જોઈને એ ખૂલી જાય છે તરત  
દારો ઘણી જગાના સમજદાર હોય છે.  
હદમાં રહીને જીવવા જે માગતી નથી  
એવી જ વ્યક્તિઓ બધી હદપાર હોય છે.  
કરશે ગુનાઓ માફ સૌ અલ્લાહ એટલે,  
પાપોની લીલા મારી લગાતાર હોય છે.  
એનાથી બચવા માટે પ્રયત્નો કરે છે સૌ  
મરવાને માટે આમ સૌ હકદાર હોય છે.  
એના ઉપરથી લાગે છે થાશે ગઝલનું શું ?  
સોમાંથી એંસી આજે ગઝલકાર હોય છે.

થોડી લખું છું વર્ષોથી તેથી તો ઓ 'જલન'  
ચોટીલી મારી સૌ ગઝલ દમદાર હોય છે – જલન માતરી

કરાચીના વિખ્યાત શાયર વલીમોહમ્મદ 'ફકીર' એક ગઝલમાં કહે છે:  
છે બાજુગરોની આ બધી ધૂર્ત ચાલ,  
સદા જીત છે પ્રેમમાં, હાર ક્યાં છે..?!

જાણીતા શાયર 'બેફામ' ઉપરવાળાને ફરિયાદ કરતાં કહે છે: ખુદા, તારી કસોટીની પ્રથા સારી નથી  
હોતી (ફારણ) કે સારા હોય છે એની દશા સારી નથી હોતી...!!

સ્વર્ગસ્થ કૈલાસ પંડિતની એક ગઝલની કેટલીક પંક્તિ એલચી રૂપે...  
મારી વ્યથા તો ફૂલમાં પુરાયેલો ભ્રમર,  
તારી વ્યથા તો ફૂલ ઉઘડવાની વાત છે.  
મારા સમયને રાત-દિવસ ઠીક છે બધું,  
તારો સમય તો સૂર્ય નીકળવાની વાત છે.  
મારું જીવન તો આખરી સપ્તાહ માસનું,  
તારું જીવન તો ચેકમાં લખવાની વાત છે.

પૈસો આહારની ખાતરી આપે, ભૂખની નહીં  
પૈસો સબંધોની ખાતરી આપે, પ્રેમની નહીં  
પૈસો મકાનની ખાતરી આપે, ઘરની નહીં  
પૈસો બેડરૂમની ખાતરે આપે, ઊંઘની નહીં  
પૈસો વૈભવની ખાતરી આપે, આનંદની નહીં  
પૈસો દવાની ખાતરી આપે, આરોગ્યની નહીં  
પૈસો ખાતરી આપે, સમાધાન નહતી! – ઈશ્વર વાઘેલા

## શાયરી

"ન અવગણશો તમારા આ દિવાનાને પાગલ પ્રેમી સમજીને, અમે કંઈક દરિયાને ડાહ્યા બનાવ્યા છે એક કાકરીના ચાળાથી!"

"બીજાના અશ્રુની કિંમત શુ જાણશો? જ્યાં સુધી તમારી આંખોમાંથી અશ્રુનીનદી નિરાશાના સાગરમાં ભળે નહીં?"

"જો તારાથી કોઈ સુંદર હશે તો તે પ્રેમ હશે અને ના માને તેને સુંદરતા પર વ્હેમ હશે!"

"કોણે કીધું દુઃખની ભાષા રુદન છે, એ મારું હસવું પણ હોઈ શકે!

गुनाहो को वो माफ कर देती है, गुस्से मे हो तो भी प्यार देती है  
लबो पे उसके हमेशा दुवा होती है, ऐसी गर्ल फ्रेंड नही सिर्फ मा होती है!

તેં ફક્ત આંસુઓ સારી મને બતાવ્યાં છે,  
અમે તો જળનાં ય શિલ્પો ઘણાં બનાવ્યાં છે.  
ઘણી વખત તો અનાયાસે શબ્દો આપ્યા છે,  
કદી ઉજાગરા ગઝલે મને કરાવ્યા છે.  
હસી, મજાક તને ખૂબ આવડે છે દોસ્ત,  
ઉદાસી, શોકના ઉત્સવ તેં ક્યાં મનાવ્યા છે.  
કદીક જાતથી પડછાયો થાય છે આગળ,  
જરૂર હવાએ જ રસ્તો ગલી બતાવ્યાં છે.  
કશુંક કહેવા તમે રોજ મંદિરે ચાલ્યા,  
બધું જ સાંભળીને ઈશ્વરે બચાવ્યા છે ?  
આ ફૂલની અહીં શોભા વધારવા માટે,  
બધા જ કંટકે મસ્તકને પણ ઝુકાવ્યાં છે.  
ઉદાસ થઈને તું દ્વારેથી નીકળે પણ કેમ ?  
મે માનપાણી બધાંને દઈ વળાવ્યાં છે.

તને હવે જે વિશે લખવું હોય તે લખજે,  
મેં બારી બહારનાં દશ્યો ઘણાં બતાવ્યાં છે.  
– નીલેશ પટેલ

પ્રાર્થનામાં એકસાથે કેટલું માંગી શકો ?  
જીર્ણ વસ્ત્રોથી વરસતા આલને ઢાંકી શકો ?  
આપ બહુ બહુ તો કરીએ શું શકો દુનિયા વિશે ?  
સત્ય જેવા સત્યને બસ કોસ પર ટાંગી શકો.  
અંધ આંખો, પાંગળું મન ને લથડતા હો કદમ,  
તો સફળતાને ભલા કઈ રીતથી આંબી શકો.  
કોણ ફૂલો મૂકવા આવ્યું હતું કોને ખબર ?  
કબ્રમાં તીરાડ ક્યાં છે કે તમે ઝાંખી શકો.  
જો, ફરી સંધ્યા સમય આવી ગયો છે ‘પ્રેમ’નો,  
સૂર્યને બાંધી શકો તો ક્યાં સુધી બાંધી શકો ?  
– જિગર જોષી ‘પ્રેમ’

લાગણીઓ અટવાય છે,  
ચહેરા ક્યાં વંચાય છે !?  
હિમગિરિના શિખરે  
તડકો પણ ફૂંઠવાય છે !  
સાગર કાંઠે પવન જુઓ,  
ખુદ પરસેવે ન્હાય છે !  
જાતને જાણે કટકે કટકે  
ચિંતા કોરી ખાય છે.  
સાવ સરળ જીવનમાં શાથી  
અઘરું સહુ વરતાય છે ?  
થૈ ભેગાં સૌ ‘આનંદ’ કરીએ,  
સાવ મફત વ્હેંચાય છે.  
– અશોક જાની ‘આનંદ’



હજી પણ એમને ખાના ખરાબી ની ખબર ક્યા છે,  
હજી પણ અમને પુછી રહ્યા છે કે તારુ ઘર ક્યા છે.  
મને પણ કોઇ શક પહેલી નજર ના પ્રેમ પર ક્યા છે,  
મગર મારા તરફ એની હવે પહેલા જેવી નજર ક્યા છે.  
મળી લઈએ હવે આવે સુખદ અંજામ ઉલ્કત નો,  
તને મારી ફીકર ક્યા છે, મને તારી ફીકર ક્યા છે.  
બીછાવ્યા તો નથી એમાય કાંટા કોઇયે “બેફામ”  
મરણ પહેલા જરા હુ જોઇ લઉ મારી કબર ક્યા છે.  
-”બેફામ”

લગ્ન અને અંતિમક્રિયા વચ્ચેનો ફરક

ફર્ક ફક્ત એટલો જ હતો કે  
તારી ડોલી ઉઠી,  
મારી મૈયત ઉઠી!  
ફર્ક ફક્ત એટલો જ હતો કે  
ફૂલો તારા પર ફેંકાયા અને  
ફૂલો મારા પર પણ ફેંકાયા!

ફર્ક ફક્ત એટલો જ હતો કે  
તે જાતે શણગાર કર્યો,  
મને શણગારવામાં આવ્યો!  
ફર્ક ફક્ત એટલો જ હતો કે  
તું ઘરે જવા નીકળી અને  
હું પણ ઘરે જવા નીકળ્યો!  
ફર્ક ફક્ત એટલો જ હતો કે  
તું ઉઠીને ડોલીમાં ગઇ  
મને ઉચકીને જનાનામાં લઈ ગયા!  
ફર્ક ફક્ત એટલો જ હતો કે

મહેફિલ ત્યાં પણ હતી અને  
લોકો અહિયા પણ હતા!  
ફર્ક ફક્ત એટલો જ હતો કે  
તારું ત્યાં હસવું અને  
મારું અહિયા રડવું!  
ફર્ક ફક્ત એટલો જ હતો કે  
કાઝી ત્યાં પણ હતા,  
મૌલવી અહિયા પણ હતા!  
ફર્ક ફક્ત એટલો જ હતો કે  
બે શબ્દો તારા માટે બોલાયા  
તો બે શબ્દો મારા માટે બોલાયા!  
ફર્ક ફક્ત એટલો જ હતો કે  
તારો નિકાહ થયો ને  
મારો જનાનો થયો!  
ફર્ક ફક્ત એટલો જ હતો કે  
તને અપનાવી લીધી  
મને દફનાવી દીધો!  
ફર્ક ફક્ત એટલો જ હતો કે  
તારે સફાઈ આપવા શાયરીની જરૂર પડી  
મારે પણ સફાઈ આપવા શાયરીની જરૂર પડી!

કોઈ મારી આંખમાં તરતું હશે  
કોઈ મારા શબ્દમાં રમતું હશે  
હું અમસ્તો સ્વપ્નથી ઘેરાઉં ના  
કોઈ નક્કી જાગરણ કરતું હશે

ફૂલને પૂછવામાં આવ્યું- તે તો બસ ખુશ્બુ જ આપ્યા કરી છે તેમાં તને શું મળ્યું..?

ફૂલે કહ્યું- આપીને લેવું તે વેપાર છે,જે આપીને કઈ ના માગે તે જ "ધ્યાર" છે.

ના કર સાસુ દીકરા દીકરા, હવે તો હસબન્ડ મારો  
જ્યારે પહેરતો બાબાસૂટ, ત્યારે દીકરો તારો હતો  
હવે તો પહેરતો થ્રીપીસ સૂટ, હવે તો ડાર્લિંગ મારો  
જ્યારે પીતો બોટલમાં દૂધ, ત્યારે ગગો તારો હતો  
હવે તો પીતો ગ્લાસમાં વ્હીસ્કી, હવે તો મીસ્ટર મારો  
જ્યારે લખતો ક,કા,કી,કુ ત્યારે નાનકો તારો હતો  
હવે તો કરે SMS, હવે તો પતિ મારો  
જ્યારે ખાતો ચોકલેટ આઈસ્ક્રીમ, ત્યારે વ્હાલો તારો હતો  
હવે તો ખાય પીઝા પાસ્તા, એ તો છે હસબન્ડ મારો  
ના કર દીકરા દીકરા સાસુ, હવે તો છે હસબન્ડ મારો  
હવે તો જાય ગોલ્ડ રમવા, હવે તો ચેમ્પિયન મારો  
ના કર સાસુ દીકરા દીકરા, હવે તો હસબન્ડ મારો  
કોલેજમાં લાઈન મારતો હતો, તે દીકરો તારો  
હવે કહું ત્યાં સાઈન કરતો, વર છે મારો  
શાકભાજીની થેલી તને ઉચકાવતો તે દીકરો તારો  
છોકરાઓની ગાણ ધોતો વર છે વ્હાલો મારો  
ના કર સાસુ દીકરા દીકરા, હવે તો હસબન્ડ તો છે મારો

**સંત વાણી**

ક્રોધનું પોતાનું પણ એક ખાનદાન છે.

ક્રોધની લાડલી બહેન છે 'જીદ',

ક્રોધની પત્ની છે 'હિંસા',

ક્રોધના મોટાભાઈનું નામ છે 'અહંકાર',

ક્રોધના પિતાનું નામ છે 'ભય',

'નિંદા' અને 'કુથલી' ક્રોધની પુત્રીઓ છે, આ બેમાંની એક મુખ આગળ રહે છે

અને બીજી કાન આગળ,

તેનો પુત્ર છે વેર,  
ઈર્ષ્યા આ ખાનદાનની બહેન છે,  
આ પરિવારમાં એક પૌત્રી પણ છે 'ધુણા', જે હંમેશાં નાકપાસે રહે છે,  
'ઉપેક્ષા' ક્રોધની માતા છે.  
તરુનસગરજી મહારાજ.

ઝરણ સુકાઈને આ રીતથી મૃગજળ બની જાયે  
મને લાગે છે એને કોઈ ધ્યાસાની નઝર લાગી

હવે એવું કહીને મારુ દુઃખ શાને વધારો છો.  
કે આખી જીંદગી ફીકી મને તારા વગર લાગી.- મરીઝ

અમે તો ફક્ત મિત્રતા માંગી હતી,  
એમા પણ આના-કાનીકરો છો,  
તમે તો નફરત પણ એવી રીતે કરો છો,  
કે જાણે, મહેરબાની કરો છો!!!

આપનું હોવું એ પ્રથમ કેવું હતું?  
ક્યાંક તું ને ક્યાંક હું એવું હતું  
ને પછી કેવા મળ્યા આપણે !  
ના કઈ લેવું હતું ના કઈ દેવું હતું.-અજ્ઞાત

રેસમાં જીતેલા ઘોડાને નથી ખબર હોતી કે જીત શું છે?  
એ તો માલિકથી અપાતી તકલીફથી દોડે છે.  
તો જ્યારે તકલીફ પડે ત્યારે સમજો,  
કે માલિક તમને ” જીતાડવા ” જ માંગે છે...!!

મારી જિંદગી તમારી યાદ માં વહી ગઈ

તમે હતા ત્યાં સુધી જિંદગી રહી ગઈ

હવે તો આ જિંદગી પણ..

જીવ-વાની ના કહી ગઈ.

-અજ્ઞાત

બહુ સહેલાઈ થી કહી દિલ ની વાત

ભલે રહે કેવળ દર્દ નો સાથ

જેને હતી નિભાવ-વાની એને ના નિભાવી

આ ઝખ્મો ને ભરશે હવે અંધારી રાત.-અજ્ઞાત

છેક ગળથૂથીથી ગંગાજળ સુધી ચાલ્યા અમે,

એમ લાગ્યું ફક્ત બસ મૃગજળ સુધી ચાલ્યા અમે.

છાતી ચીરીને બતાવી ના શક્યા,તેથી જ તો,

કાળજેથી નીકળી કાગળ સુધી ચાલ્યા અમે.

સીંદરીની જાત છઈએ,જાત પર જઈએ જ ને,

રાખ થઈ ગ્યા,તોય છેલ્લા ધાસ સુધી ચાલ્યા અમે.

સાધના ,સાધન અને શું સાધ્ય છે સ્વાહા બધું,

ધૂપદાની લઈ અને ગૂગળ સુધી ચાલ્યા અમે .

બળ કહો કે છળ કહો કે કળ કહો ,કંઈ પણ કહો ,

અંતમાં કહેવું પડે :અંજળ સુધી ચાલ્યાં અમે - સુરેશ વીરાણી

અશ્રુ જે પીવે છે તે મા હોય છે,

મનમાં જે રૂવે છે તે મા હોય છે.

ડાઘ જે પાડે તે બાકીના બધા,

ડાઘ જે ધુએ છે તે મા હોય છે.

આવનાર કોઈ ન હોય તે છતાં,

રાહ જે જુએ છે તે મા હોય છે.

આખા ઘરને પ્રેમથી ઊંઘાડ્યા બાદ,  
અંતે જે સુવે છે તે મા હોય છે.  
મુકુલ ચોકસી

કોઈ ને પ્રેમ ની ખબર નથી હોતી  
તો કોઈ ને પ્રેમ ની અસર નથી હોતી  
બહુ ઓછાને મળે છે સાચો પ્રેમ આ જગત માં  
પણ જેને મળે છે એને કદર નથી હોતી ...

સમયના સૂર્યનું ચાલે તો સળગાવી મૂકે સઘળું,  
વ્યથાના વાદળો વાતાવરણ જીવતું રાખે.

કિનારાઓ અલગ રહીને ઝરણને જીવતું રાખે,  
અલગતા આપણી એમ જ સ્મરણને જીવતું રાખે.

તળાવો મૃગજળોના જેમ રણને જીવતું રાખે,  
બસ એમ જ સ્વપ્ન તારું એક જણને જીવતું રાખે.

અનાયાસે પણ જીવનમાં બધું ભૂલી જઈએ પણ,  
પ્રયાસો જ સ્મરણના ખુદ સ્મરણને જીવતું રાખે - રઈશ મનીઆર

મહેફિલની ત્યારે સાચી શરૂઆત થઈ હશે,  
મારા ગયા પછી જ મારી વાત થઈ હશે.  
આજે હવામાં ભાર છે ફૂલોની મહેકનો,  
રસ્તાની વચ્ચે એની મુલાકાત થઈ હશે.

ઢળતા સૂરજને જોઉં છું જોયા કરું છું હું,  
લાગે છે એના શહેરમાંયે રાત થઈ હશે.  
મારે સજાનું દુઃખ નથી છે દુઃખ એ વાતનું,  
વાતો થશે કે મારે કબુલાત થઈ હશે.  
લોકો કહે છે ભીંત છે ત્યાં ભીંત છે ફકત,  
'કૈલાશ' મારા ઘર વિશેની વાત થઈ હશે.  
કૈલાશ પંડિત

છે ઘણા એવા કે જેઓ યુગને પલ્ટાવી ગયા,  
પણ બહુ ઓછા છે જેઓ પ્રેમમાં ફાવી ગયા.  
દુર્દશા જેવું હતું કિન્તુ ! સમજ નોતી મને,  
દોસ્તો આવ્યા અને આવીને સમજાવી ગયા.  
હું વિતેલા દિવસો પર એક નજર કરતો ગયો,  
યાદ કંઈ આવ્યું નહીં ને આંસુઓ આવી ગયા.  
મેં લખેલો દઈ ગયા, પોતે લખેલો લઈ ગયા,  
છે હજી સંબંધ કે એ પત્ર બતલાવી ગયા.  
સૈફ ! આ તાજી કબર પર નામ તો માફે જ છે,  
પણ ઉતાવળમાં આ લોકો કોને દફનાવી ગયા?  
સૈફ પાલનપુરી

અહીં કોણ ભલા ને પૂછે છે ?  
અહીં કોણ બૂરા ને પૂછે છે ?  
મતલબ થી બધા ને નિસ્બત છે ,  
અહીં કોણ ખરા ને પૂછે છે ?  
અત્તર થી નીચોવી કોણ અહીં  
ફૂલો ની દશા ને પૂછે છે ?

આતો સંજોગ ઝુકાવે છે નહીતર  
અહી કોણ ખુદા ને પૂછે છે ???

કરવતને કહો વૃક્ષમાં સોપો ન પડી જાય,  
જો જો તમે આ ડાળથી ટહુકો ન પડી જાય.  
એવું નથી કે કોઈથી આવે ન જુદાઈ,  
પણ માનવી ખુદથી અહીં અળગો ન પડી જાય.  
મારામાં તને રાખવાનો ગર્વ મને છે,  
તું એમ મને મળ કે આ મોભો ન પડી જાય.  
મોટી છબી ટાંગતાં રાખું છું અહીં ધ્યાન,  
શૈશવની દિવાલેથી આ ફોટો ન પડી જાય.  
હું રોજ અહીં મનને સતત એમ કહું છું,  
બે-ચાર સુખોનો તને ચસ્કો ન પડી જાય.  
હું પાત્રનો અભિનય હવે સાચો કરું છું, દોસ્ત,  
અધવચ હવે આ મંચનો પડદો ન પડી જાય.  
ગૌરાંગ ઠાકર

અમે ધારી નહોતી એવી અણધારી કરી લીધી,  
અજાણી આંખડીને .... ગોઝારી કરી લીધી.  
મને કંઈ વાત તો કરવી હતી અલગારી મન મારા,  
વળી કોના થકી તેં પ્રીત પરબારી કરી લીધી?  
ઘડીઓ આ જુદાઈની અને તે પણ જવાનીમાં,  
અમે આ પણ સહન તલવાર બેધારી કરી લીધી,  
કસુંબલ આંખડીના આ કસબની વાત શી કરવી?  
કલેજું કોતરી નાજુક .... તારી કરી લીધી.  
હવે મિત્રો ભલે ગુસ્સો ગઝલ પર ઠાલવે 'ઘાયલ'  
અમારે વાત બે કરવી હતી જારી કરી લીધી.  
અમૃત ઘાયલ



શબ્દથી મન મોકળું થઈ જાય ત્યારે આવજે,  
મૌન જ્યારે તારાથી સહેવાય ત્યારે આવજે.  
છે તું હમણાં વ્યસ્ત તારી જાતના શ્રંગારમાં,  
આઈનો જોઈ તને તરડાય ત્યારે આવજે.  
તારી માફક સ્વસ્થ રહેવા હું કરીશ કોશીશ જરૂર,  
પણ એ કોશીશમાં નયન છલકાય ત્યારે આવજે.  
ફક્ત હમણાં કે અહીં પૂરતો નથી સંબંધ આ,  
કાળ સ્થળ તારાથી ઓળંગાય ત્યારે આવજે.  
તું નહીં આવી શકે તારા અહમ ને છોડીને,  
મારો ખાલીપો તને વરતાય ત્યારે આવજે - શોભિત દેસાઈ

કોઈને ખબર નથી આ રસ્તો ક્યાં જાય છે?  
થાકેલા છે બધા છતાં, લોકો ચાલતા જ જાય છે.  
કોઈક ને સામે રૂપિયા તો કોઈક ને ડોલર દેખાય છે.  
તમે જ કહો મિત્રો શું આને જ જીંદગી કહેવાય છે?

અશ્રુ વિરહની રાતના ખાળી શક્યો નહીં,  
પાછા નયનના નૂરને વાળી શક્યો નહીં.  
હું જેને કાજ અંધ થયો રોઈ રોઈ ને,  
એ આવ્યાં ત્યારે એને નિહાળી શક્યો નહીં.  
નયનને બંધ રાખીને મેં જ્યારે તમને જોયા છે,  
તમે છો તેના કરતાં પણ વધારે તમને જોયાં છે.  
ઋતુ એક જ હતી પણ રંગ નો'તો આપણો એકજ,  
મને સહેરાએ જોયો છે બહારે તમને જોયાં છે.  
પરંતુ અર્થ એનો એ નથી કે રાત વીતી ગઈ,  
નહીં તો મેં ઘણી વેળા સવારે તમને જોયાં છે.  
હકીકતમાં જુઓ તો એ એક સપનું હતું મારું,  
ખુલી આંખે મેં મારા ઘરના દ્વારે તમને જોયાં છે.

નહીંતર આવી રીતે તો તરે નહીં લાશ દરિયામાં,  
મને લાગે છે કે એણે કિનારે તમને જોયાં છે.  
બરકત વિરાણી 'બેક્ષમ'

આમ છો લાગે સભર તારું નગર વ્હાલમ, ન મળશે વાંસળી...  
આંગળી જો સળવળે તો બેઘડક તું મારી પાસે આવજે.

**ભૂમિ**

મારો સાહ્યબો અષાઢીલો મેઘ છે સખી, એને વરસંતા લાગે છે વાર,  
પણ, વરસે ત્યારે અનરાધાર !

**તુષાર શુક્લ**

અઢી અક્ષરનું ચોમાસું, ને બે અક્ષરના અમે;  
ખોટ પડી અડધા અક્ષરની, સજન, પૂરજો તમે!  
ત્રણ અક્ષરના આકાશે આ બે અક્ષરની વીજ,  
બે અક્ષરનો મોર છેડતો સાત અક્ષરની ચીજ.  
ચાર અક્ષરની ઝરમર ઝીલતાં રૂંવાડાં સમસમે,  
ખોટ પડી અડધા અક્ષરની, સજન, પૂરજો તમે!  
ચાર અક્ષરના મેઘમાં છલબલ આપણાં ફળિયાં;  
આંખમાં આવ્યાં પાંચ અક્ષરનાં ગળાબૂડ ઝળઝળિયાં!  
ત્રણ અક્ષરનું કાળજું કહો ને, ઘાવ કેટલા ખમે ?  
ખોટ પડી અડધા અક્ષરની, સજન, પૂરજો તમે!  
પાંચ અક્ષરનો મેઘાડબર, બે અક્ષરનો મેહ,  
અઢી અક્ષરના ભાગ્યમાં લખિયો અઢી અક્ષરનો વ્રેહ!  
ત્રણ અક્ષરનું માવઠું મુજ સંગ અટકળ અટકળ રમે!  
ખોટ પડી અડધા અક્ષરની, સજન, પૂરજો તમે!

**- ભગવતીકુમાર શર્મા**

**દૂર દેશ વસ્યું ધબકતું એક ગામ યાદ આવે છે**

વાળુ ટાણે જાણે માનો મીઠો સાદ આવે છે  
'ચોરતા હતા બચપણમાં કાચી કેરીઓ હવે ક્યાં ખોવાયા છો?'  
ક્યારેક સ્વપનમાં ખેતર લઈને આ ફરિયાદ આવે છે.  
પરદેશમાં મળે તો છે ભોજન ભાતભાતનાં ન ખૂટે એવાં  
આંબા તળે માણેલા ક્યાં મરચું રોટલાનાં સ્વાદ આવે છે ?  
શીખ્યા અમે ભાષા પરદેશી, ને ભાષાઓ અનેક યંત્રોની પણ  
ક્યાં બસંતીની બકબક, કે એમાં ગબ્બર-ઠાકુરના સંવાદ આવે છે ?  
અલ્લાહનો પૈગામ આપતી, નથી વિસરાતી એ મીઠી અઝાન  
ઢંઢોળતો જે મહાદેવનું ધ્યાન, યાદ હજુ એ શંખનાદ આવે છે.  
કોરો વરસાદ, કોરી હવા, ને કોરા સમયનો છે સાથ અહીં  
બે ટીપાં ભીંજાઈ લઈએ, જો વતન વાવડનાં વરસાદ આવે છે

મત્ત છે વાતાવરણ વરસાદમાં,  
યુગ, સદી, દિવસો ને ક્ષણ વરસાદમાં.  
મનને શું કરવું કઠણ વરસાદમાં ?  
તું ત્યજી દે આવરણ વરસાદમાં.  
કંઈ પુરાણા બંધ તૂટતા જાય છે,  
કંઈ નવા ફૂટે ઝરણ વરસાદમાં.  
ઉચ્ચતા ખુદની ત્યજીને આખરે,  
નભ ધરાનું લ્યે શરણ વરસાદમાં.  
મન કરે તો મન મૂકી ભીંજાઈ જા,  
આમ ટીપાંઓ ન ગણ વરસાદમાં !  
હું ઉકેલું છું આ વાદળની લિપિ,  
ના ! નથી રહેવું અભણ વરસાદમાં.  
લ્યો, ફરીથી આ વખત પણ જઈ મળ્યાં-  
અશ્રુબિંદુ બે કે ત્રણ વરસાદમાં.  
મેઘ મૂશળધાર અંદર ને બહાર,  
યાદ આવે એક જણ વરસાદમાં.

-રઈશ મનીઆર

ઈશ્વર છે તું - ક્યાં છે?

(અંદર ક્યાંક તો... ઈશ્વર, છે જ તું )

માત્ર ત્રણ અક્ષર છે તું, ઈશ્વર છે તું,  
લાગણીથી પર છે તું, ઈશ્વર છે તું.

ધર મને, ભીંતો મને, સગપણ મને;  
મુક્ત છે, બેઘર છે તું, ઈશ્વર છે તું.

પ્રશ્ન છું, ફૂટપ્રશ્ન છું, માણસ છું હું;

ક્યાં કોઈ ઉત્તર છે તું ? ઈશ્વર છે તું.

હું જ નર્તન છું અનાદિ ને અનંત,

માત્ર એક ઝાંઝર છે તું, ઈશ્વર છે તું.

પગ મૂકી તો જો ધરા પર એકવાર !

ક્યાં હજી પગભર છે તું ? ઈશ્વર છે તું.

સ્વસ્થ હું હોઉં તો તું હોતો નથી,

ને ક્વચિત્ કળતર છે તું, ઈશ્વર છે તું - રઈશ મનીઆર

ગઝલની જરૂરત મહેફિલમાં હોય છે,

પ્રેમ ની જરૂરત દિલ માં હોય છે.

મિત્રોની વગર અધુરી છે જિંદગી...

કેમકે મિત્રોની જરૂરત દરેક પળ માં હોય છે.

ભલે અલ્પ તોયે વધારે લખ્યું છે,

લખ્યું તે બધું રક્તધારે લખ્યું છે;

લખાણે લખાણે પ્રહારો થયા છે,

અમે પણ પ્રહારે પ્રહારે લખ્યું છે.

આખું જીવન અમે ધીરે ધીરે લખ્યું,

રેત પર જેમ પાગલ સમીરે લખ્યું.

કોરા કાગળ ઉપર બસ સખી રે ! લખ્યું,  
એથી આગળ નથી મેં લગીરે લખ્યું.  
મજનૂ ફરહાદ મહિવાલ હીરે લખ્યું,  
લીરે લીરે ને આખા શરીરે લખ્યું.  
રોજ માણસ ઘવાતો રહ્યો ચૂપચાપ,  
જે લખ્યું તે નીતરતા ઝમીરે લખ્યું.  
આપણે ક્યાં કદી કંઈ લખ્યું છે 'રઈશ' !  
એક મીરાએ લખ્યું એક કબીરે લખ્યું.  
-ડૉ. રઈશ મનીઆર

“હે રામ”...ગાંધી ફરી હણાયો  
મારા આશ્રમમાં દંગો કરી શકે છે  
ગુજરાતી આટલા નિર્વસ્ત્ર થઈ શકે છે.  
બ્રિટીશ શાસનમાં મારી લંગોટી તો સલામત હતી  
અહીં તો નપુંસક પણ બાળાત્કાર કરી શકે છે.  
મને તો ડબ્બામાંથી ફેંક્યો માત્ર હતો...ને  
બ્રિટીશ રૂબસદીનો પાયો નંખાયો હતો  
અહીં તો ડબ્બામાં રાખ માત્ર બચી હતી  
માનવતા કકળતી રહી,અમન હણાઈ ગયું,  
ને ભાઈચારાની લાશો ખડકાઈ ગઈ.  
બીજું જલિયાનવાલા થયું મારું જલી જલીને ગુજરાત  
ના અહીંના જનરલ(ડાયર)પર ચાલ્યો ખટલો,  
ના લાગ્યો બટ્ટો,ના મળી સજા.  
વેંત છાતી ફુલાવી જલસા કરે અહીંના ડાયર  
આગમાં શેકાયેલ ઘરોની માતાઓના રૂદનથી  
ચીમળાઈ ગયા છે જેમના સ્તનો,  
એમના લોહીના ખાબોચિયામાં છબછબિયાં કરવાના  
અભરખાંથી રતુંબડા લઈ ગાલ ફરે છે.

અહિંસક(?)...હિંદુ...ભારતમાતા...ના નામે માતાઓની  
મમતા કચડી,ઝૂમી , મખમલી આનંદ અનુભવતા  
મઈ મૂછાળા મૂછે તાવ દઈ રહ્યા છે.

“અનુકંપા”? એ વળી કઈ નારીનું નામ છે?પૂછી રહ્યા છે  
”લાવો, આજે તો એનુંય વસ્ત્રહરણ કરીએ...”  
ગેલમાં અદૃહાસ્ય કરી રહ્યા છે.  
નગ્નતાનું તાંડવ ક્યા જઈ અટકશે?  
ક્યાંય છે બીજો ગાંધી?

મારું બાવલું બાળી દો,મારો દેશ...નિકાલ કરી દો,  
હું નથી લાયક ગુજરાતને  
મારે તો ફરી ઉપડવું છે સાઉથ આફ્રિકાની સફરે...પણ..

હવે,મારો સમાન ફેંકાશે તો  
હું નત મસ્તકે ઉભો રહી,  
આભાર માનીશ, કરગરીશ,  
મને બાળશો નહિ...મને બાળશો નહિ - ગૌરાંગી પટેલ

ગુજરી હુઈ જિંદગી કો કભી યાદ ન કર, તકદીર મેં જો લિખા હૈ ઉસકી ફરિયાદ ન કર.  
જો હોગા વહ હોકર હી રહેગા, તૂ ફિકર મેં અપની હંસી બરબાદ ન કર.!!!!  
કૌન કિસે દિલ મેં જગહ દેતા હૈ, પેડ ભી સુખે પત્તે ગીરા દેતા હૈ  
વાકિફ હૈ હમ દુનીયાકે રીવાજોસે, મતલબ નિકલ જાયે તો હર કોઈ કુકરા દેતા હૈ  
વક્ત ફિસલતા હૈ રેત કી તરહ, હમ બસ ઉસે સંભાલના ભૂલ જાતે હૈ  
કુછ લોગ બહુત ખાસ હોતે હૈ જિંદગીમે, હમ બસ ઉસે બતાના ભૂલ જાતે હૈ  
સંગીત સુનકર જ્ઞાન નહિ મિલતા, મંદિર જાકર ભગવાન નહિ મિલતા  
પથ્થર કો લોગ ઈસલિયે પૂજતે હૈ, ક્યોંકિ વિશ્વાસ કે લાયક ઇન્શાન નહિ મિલતા

ક્યારેક રહેતાં ગાજીથી માંડીને શરીરની ખામોશી જેવી બધી વાતો પણ આવી જાય છે. ડોસીનાં ધૂંટણ દુઃખે તો ડોસો ધીમે ચાલે, એ પણ પ્રેમની જ એક અભિવ્યક્તિ છે ને ! સમય સાથે અભિવ્યક્તિ ભલે બદલાય પણ પ્રેમ તો એ જ રહે છે...

વિવેક ટેલર

### ડોસા ડોસીની વાત

ડોસી શોધે છે ચોકઠું ને ડોસાના કાને છે ધાક,  
ડોસી બોલે ક્યાંક અને ડોસો સાંભળતો ક્યાંક !  
સમજાય જ્યારે સાવ સાચી વાત બેઉ હસતાં દઈ દઈ તાલ.  
ડોસો વાંચે રામાયણ અને ભાગવત, ગીતા મધરાત.  
ડોસી સાંભળતાં સાંભળતાં કરતી રહે ઝોકમઝાક .  
ઝોકાંમઝાકમાં જોઈ લીધાં એણે છેાંચોકરાં અને સંસાર.  
ડોસાને છે દરદ ખાંસીનું ડોસીને કાયમનો ઉચાટ,  
ડોસીનાં નસ્કોરાંની ડોસો કરતો રોજ રોજ પંચાત.  
લડતાં-ઝગડતાં પોઢી જતાં બેઉ, એઈ વહેલું પડજો પરભાત.  
ડોસીના પગ માંઘ છે ટેકા, ટેભા છે ડોસાના હાડ  
લાકડીના ટેકા, ભીંતના ટેકા, ટેકાથી દોડવું દિનરાત,  
ટેકાટેકીની રમત રમતાં રમતાં પહોંચી જશું રામજીને દરબાર.  
-સુરેશ દલાલ

### સાવ અમસ્તાં !

વરસાદ નચે આવે, ચાલને, સાથે વરસીએ, સાવ અમસ્તાં.. !  
મોસમ ભલે બદલે, પણ ન આપણે બદલીએ, સાવ અમસ્તાં.. !  
ન સજવું, સજાવવું, મહેકવું, મહેકાવવું, ઘર, મંદીર યા બાગમાં,

આપણે તો બસ, ખીલીને, કરમાઈએ સાથે, સાવ અમસ્તાં..!  
ક્યાં કોલ માગવા છે કે ક્યાં વચનો તોડવાં છે, આપણે અહીં ?  
બસ, મુકીને હાથ હાથમાં, ચાલતાં રહીએ, સાવ અમસ્તાં..!  
આ ઝરણું, કીરણ, ઘટા, તારા, ફુલ, પહાડો અને આ દરીયો,  
અહીં આમ જ બસ, નીરર્થક ફરતાં રહીએ, સાવ અમસ્તાં..!  
'ભગ્ન' શ્વાસ બંધ થવા સુધી હસતાં રહીએ, સાવ અમસ્તાં..!  
બસ, અમસ્તાં હસતાં હસતાં, જીવતાં રહીએ, સાવ અમસ્તાં..!  
-જયશ્રી વીનુ મર્યન્ટ 'ભગ્ન'-

ઓસરીએ..

ચાલ, વર્ષો પછી બેસીએ આજે સાથે ઓસરીએ !  
વીતેલાં અબોલાનો ઉત્સવ ઉજવીએ, ઓસરીએ.  
માછલી બની દરીયામાં ક્યાં તરતાં-રમતાં રહેવું છે ?  
તારી સાથે જળ વીના તરફડવું છે, બેસી ઓસરીએ.  
વાવેલાં હરીત વૃક્ષો સહુ મુળીયાંભેર જ ઉખડી ગયાં !  
ખરેલાં પાનનો ખડકલો રહી ગયો હવે ઓસરીએ.  
પડું પડું થતી ઘરની ભીંત કે છતનો શો છે ભરોસો ?  
ઘરનો આભાસ તો બાકી રહેશે, સદાએ ઓસરીએ.  
વન-ઉપવનને શહેરોના અજગર ભલેને ગળી ગયા !  
બાકી તોયે રહ્યો છે હજુયે તુલસી ક્યારો ઓસરીએ.  
'ભગ્ન' સંબંધોની સીલક છે વર્ષો જુના થોડા પત્રો !  
વાંચ્યા કરો બેસી હવે, એને, એકાંતની ઓસરીએ.  
-જયશ્રી વીનુ મર્યન્ટ 'ભગ્ન'

'ચાલ, કાગળ વાંચીએ..'

ચાલ, સાથે બેસી કાગળ વાંચીએ,



વીત્યાં વર્ષોની પળેપળ વાંચીએ.  
છે બરડ કાગળ ને ઝાંખા અક્ષરો,  
કાળજીથી ખોલીને સળ વાંચીએ.  
પત્ર સૌ પીળા પડ્યા તો શું થયું?  
તાજે તાજું છાંટી ઝાકળ વાંચીએ.  
કેમ તું રહી રહીને અટકી જાય છે ?  
મન કરી કઠણ ને આગળ વાંચીએ.  
પત્રના શબ્દો ચહેરાઈ ઝાંખા થયા,  
આંખથી લુછી લઈ જળ, વાંચીએ.  
લ્યો, ટકી રહી છે હજી થોડી સુવાસ,  
શ્વાસમાં ઘૂંટીને પીમળ વાંચીએ.  
માત્ર આ પત્રો સીલકમાં રહી ગયા,  
કંઈ નથી આગળ તો પાછળ વાંચીએ.  
-ભગવતીકુમાર શર્મા, સુરત

### હાથના હળવાશ ભરેલાં હલેસાં

"હાથે તે સાથે" એ સૌ લોકો જાણે છે.  
પારકી આશે કેટલાય જીવન માણે છે.  
હેઠે પડેલો હાથ, સાહસે બેઠો થાય છે.  
હાથ કરામતથી, સમજો કમાણી થાય છે  
હાથ બતાવવાની દાનત દળદર વધારે છે  
હાથ મેળવવાની આદત જીવતર સુધારે છે  
હાથ ભાંગવાનું કામ તો, સૌ માટે સહેલું છે  
હાથ ઉપર રાખવાનું કેટલાકને મન પહેલું છે  
હાથ આપવાનું કામ, ભલા કોણ સમજે છે?  
હાથ લીધેલ કામ પૂરું કરવા કોણ તરસે છે?

હાથના કર્યા હૈયે વાગ્યાં આખરે સમજાય છે! .  
હાથના હલેસાથી નવલા સર્જનો રચાય છે!  
હાથનો મેલ પૈસો છે, તોય સૌ એને ઝંખે છે!  
હાથ તાળી દઈ દેવાનું, કોઈ ને ક્યાં ડંખે છે?  
હાથ ધોઈ નાખવામાં ધરાર- ઉલાળ ક્યાં છે!  
હાથ ખંખેરવામાં પાવરધાનો તોટો ક્યાં છે?  
હાથનો હથોડો, કરાટેવાળાને જ ગમે છે,  
હાથનું હથિયાર, હીર રૂપે જીવન ધડે છે.  
દબાયેલા હાથને સેરવતા શીખવું જરૂરી છે,  
હાથ વિનાના આ સંસારમાં તરવું જરૂરી છે.  
હાથ - કરામતની કાળી કળા સૌ ને સદા ડુબાડે છે!  
હાથ-સફાઈના વહીવટમાં ઘણા ગરિમા ગુમાવે છે!  
હાથ હોય જો હાજર, એ સો હથિયાર ગણાય છે!  
ઝાઝા હાથ રળિયામણા, સૌના સાથી મનાય છે!  
"આંગળી આપી, પોંચો પકડે" એ કાબેલિયત હાથ છે  
વ્હાલ વરસાવે, કોળીયો ખવડાવે, એ માતના હાથ છે - **By-SATISH PARIKH**

જે ગમ્યું એ બધું મૃગજળ થઈ ગયું  
બાકી જે હતું એ વાદળ થઈ ગયું  
આંખો થી લખતો રહ્યો રાતભર જે  
સૂરજ ઉગતા એ બધું ઝાકળ થઈ ગયું.

નઝરકો બદલો તો નઝરે બદલ જાયેંગે  
સોયકો બદલો તો સિતારે બદલ જાયેંગે

કશ્તીયા બદલનેકી જરૂર હી નહિ હૈ  
દીશાકો બદલો તો કિનારે બદલ જાયેંગે

જીવનમાં કાશ એવી એક રાત આવી જાય  
સમય પણ અમને બંનેને સાથે જોઈને ત્યાં જ થોલી જાય  
હુ ચૂપ રહુ તૂ પણ ચૂપ રહે  
કુદરત પણ આપણા પ્રેમ આગળ નમી જાય. -ફેસબૂકમાંથી

સુકાયેલી નદીના ક્યાંકથી પગરણ મળી આવે  
વિખૂટ્ટે થઈ ગયેલું એ રીતે એક જણ મળી આવે  
ઘણા વરસો પછી, વાંચ્યા વગરની કોઈ ચિઠ્ઠીમાં  
'તને ચાહું છું હું' બસ આટલી ટાંચણ મળી આવે. - ફેસબૂકમાંથી

અપને અપનોસે ક્યા ગીલા, ક્યા શિકવા  
લાખ કરે કોશીશ ગમ જાહીર હોતે હૈ...  
પતા ચલતા અલતાફ આખીર યે બાતકા,  
હમદમહી દુઃખ દેનેમેં માહીર હોતે હૈ.

મારો જિગરી દોસ્ત આજે મારા માટે અજનબી છે;  
દોસ્તો મારા આ જાલિમ દુનિયા બડી મતલબી છે.  
દિલમાં મારા કોઈ ઓર વસે છે મને કહ્યા વિના;  
ઘરની દીવાલે મારી સાથે કોઈ બીજાની છબી છે.  
વહાવી છે જિંદગી મારી એની આંખોનાં પ્રવાહીમાં;  
એના એ આંસુઓની નદીમાં જિંદગી મારી ડૂબી છે.  
નથી કરવી યાદ કદી એને, તો ય યાદ આવ્યા કરે;  
કેમ થાય આવું? જરૂર એનામાં કોઈ ભારે ખુબી છે.

દિલને મેળવે, જોડે, તડપાવે ને બેરહમીથી તોડે;  
મારો બેટો ઉપર બેઠો એ ભગવાન બડો કસબી છે.  
લોકોના દિલની બધી વાત જાણે, સમજે ને સમજાવે;  
માનો યા ન માનો દોસ્તો, આ નટવર બડો નબી છે - નટવર મહેતા

**SMS નું મધુર મનોરંજન - લેખકો અજ્ઞાત - મારા એમને સલામ અને ક્ષમાં યાચના - વિપુલ દેસાઈ**

દોસ્તી ન કમી ઇમ્તિહાન લેતી હૈ, ન કમી ઇમ્તિહાન દેતી હૈ  
દોસ્તી વો હૈ જો બારિશ મેં ભીગતે ચેહરે પે ભી આંસુઓ કો પહચાન લેતી હૈ

પ્રેમની એ મધુર યાદો પણ બહુ છે  
એ ના મળ્યા તો એમની કલ્પના પણ બહુ છે  
પ્રેમ પામ્યા કે અધુરો રહ્યો એ વાત નથી  
પ્રેમ કરવાનો અવસર મળ્યો એ પણ બહુ છે

કોણ આપે છે જીવગીભરનો સહારો અથ મારા દોસ્ત  
લોકો તો જનાનામાં પણ ખભા બદલતા રહે છે

મનને પણ વહેમ થયો છે  
હું જાણું છું કે એ કેમ થયો છે!  
કહું છું તમને પણ કોઈને કહેશો નહિ  
મને પહેલી નજરે પ્રેમ થયો છે

કેવું થાય જ્યારે ગમતું સ્વપ્ન તુટી જાય,  
ફરિયાદ પણ કેમ થાય જ્યારે કોઈ અંગત રૂઠિ જાય,

શું દોષ આપુ હું મારાં ઇશ્વરને, જુનો રિવાજ છે,  
કોઈ મળે છે તો કોઈ છુટી જાય છે.

-ફેસબુકમાંથી...

અમનેય શ્રદ્ધા હતી તમારી આંખો પર,  
હવે તેમાય ઉતારા થઈ નથી શકતા,  
દિલ ની લેતી દેતી એક વખત થાય છે,  
ધારીએ તોય લુટારા થઈ નથી શકતા  
-ફેસબુકમાંથી...

કિંમત પાણીની નહિ તરસની થઈ છે  
કિંમત મૃત્યુની નહિ શ્વાસની થઈ છે  
સબંધો તો ઘણા છે પણ.....  
કિંમત સબંધોની નહિ પણ  
એના ઉપર મુકેલા વિશ્વાસની થઈ છે

કોઈ હસીને દર્દ છુપાવે છે  
કોઈ રડીને દિલ બહેલાવે છે  
અહી તો સંજોગોને આધીન છે બધું  
તરતો માણસ ડૂબે છે અને  
લાશ તરતી કિનારે આવે છે!  
જે નિરાશાને કદી જોતા નથી  
તે આશા દિલની ખોતા નથી  
જે પ્રયત્નો પર જીવી જાણે સદા  
તે કદી કિસ્મત ઉપર રોતા નથી

ટી.વી.સેટ,સોફા સેટ,ડાઈનીંગ સેટ,ડાયમંડ સેટ  
ઘણા સેટ વચ્ચે આજનો માણસ અપ સેટ છે  
પણ ગ્રુપડીમાં રહેતો ગરીબ  
આવા એક પણ સેટ વગર વેલ સેટ છે!

હોઠ પર રમતુ હતુ તે નામ છોડી જાઉ છુ,  
તે સંબંધો થી ભરેલુ ગામ છોડી જાઉ છુ;  
જે હતુ તે ગટગટાવી ને પી ગયો છુ દોસ્તો,  
ને હવે બસ ખાલી પડેલો જામ છોડી જાઉ છુ - ફેસબૂકમાંથી...

તું હસે છે જ્યારે જ્યારે  
ત્યારે ત્યારે તારા ગાલમાં ખાડા પડે છે  
હું વિચારું છું બેઠો બેઠો કે  
મારા સિવાય આ ખાડામાં કેટલા પડે છે!

જીવનમાં જશ નથી, પ્રેમમાં રસ નથી  
ધંધામાં કસ નથી, જવું છે સ્વર્ગમાં પણ  
એની સીધી કોઈ બસ નથી!

મારો સમય હતો ત્યારે મારી પાસે સમય ન હતો  
અત્યારે મારી પાસે સમય છે પણ અત્યારે મારો સમય નથી!

જીવનમાં એક વ્યક્તિનો સાથ હોય તો  
આખી જીંદગી જીવી શકાય છે  
પણ ક્યારે ક્યારે એવી વ્યક્તિ ની શોધમાં  
આખી જિંદગી વીતી જાય છે!

પળમાં ભુલાય એ પ્રીતના કહેવાય  
આપણી યાદના આવે એ મિત ના કહેવાય  
અમે પ્રેમથી તમને સંદેશો મોકલ્યો અને  
તમે સામેથી જવાબ ન મોકલ્યો ।  
એ તમારી રીત ના કહેવાય!

પ્રેમ કરવાની કોઈ રીત નથી હોતી  
લાગણીઓ રાખી શકે એવી કોઈ ભીત નથી હોતી  
સબંધો જો જાળવે સાચા મનથી તો  
જીવનની કોઈપણ બાજુમાં હાર-જીત નથી હોતી!

કોઈને હું પ્રેમ લાગુ છું, તો કોઈને હું વહેમ લાગુ છું  
કોઈને હું જેમ-તેમ લાંગુ છું, પણ બધા ગયા તેલ લેવા  
તું જ કહે કે તને હું કેમ લાંગુ છું?

શ્વાસ અને વિશ્વાસ એક જ વખત તૂટે છે  
શ્વાસ તૂટે તો જીવનું મૃત્યુ થાય છે  
ને વિશ્વાસ તૂટે તો જીવનનું મૃત્યુ થાય છે  
માટે બંને સાચવ જો!

જીવનમાં દરેક વ્યક્તિ કે વસ્તુની સાચી કિંમત  
ફક્ત બે સંજોગોમાં જ સમજાય છે  
તેને પામ્યા પહેલા  
તેણે ગુમાવ્યા પછી!

પીછા વિના મોર ના શોભે, મોતી વિના હાર ના શોભે  
તલવાર વિના વીર ના શોભે, માટે તો કવિ લખે છે કે

મોજ કે મસ્તી વિના સુરતી ના શોભે!

રાત સવારની રાહ નથી જોતી  
ખુશ્બુ ઋતુની રાહ નથી જોતી  
જેવો પણ સમય મળે એને સ્નેહથી જીવી લેજો  
કારણ કે જિંદગી સમયની રાહ નથી જોતી  
સમયને ઓળખાતા, પ્રસંગને સાચવતા  
માણસને સમજતા અને તકને ઝડપાતા  
જો આવડી ગયું તો સમજી લો કે  
તમે જીવન જીવી ગયા અને જિંદગી જીતી ગયા

આસન છે એનાથી પ્રેમનું નાટક કરવું, જેનાથી પ્રેમ ના કરતા હોય પણ  
મુશ્કેલ છે એનાથી નફરતનું નાટક કરવું, જેનાથી સાચો પ્રેમ કરતા હોય

જિંદગીમાં બે લોકો તમને વધુમાં વધુ પ્રેમ કરશે  
એક કે જે તમારાથી નારાજ હોય તે અને  
બીજું કે જે તમારા ઉપર ગુસ્સો કરે તે

આ દુનિયાના લોકો અને એમની રીતો, સાચા માણસો ને ફાવતી નથી  
જીવતા હો ત્યારે તમને દફનાવવાની વાતો કરે  
અને મરો ત્યારે દફનાવવા પણ આવે નહિ

આંખો વરસી જાય છે વેદના વગર  
હૈયું ભરાઈ જાય છે પીડા વગર  
જીવવાના તો છે લાખ કારણ પણ  
શ્વાસ અટકી જાય છે તમારી યાદ વગર



પ્રેમ તો અમારે પણ કરવો હતો  
પણ વાત ખાસ નહિ થઈ  
તાજમહાલ તો અમારે પણ બંધાવવો હતો  
પણ, અફસોસ કે લોન પાસ નહિ થઈ!

લખી લે જો હથેળીમાં નામ માટું  
સ્નેહના સાગરમાં છે ધામ માટું  
કોક દિવસ તો તરસ લાગશે તમને  
હથેળીથી પાણી પિતા, યાદ આવશે નામ માટું

ઉનકી ગલી સે ગુઝરે,અજીબ ઇત્તેફાક થા,  
ઉનકી ગલી સે ગુઝરે,અજીબ ઇત્તેફાક થા,  
ઉન્હોને ફૂલ ફેંકા,ઘમેલા ભી સાથ થા!!

તુમકો દેખા તો એક ખયાલ આયા  
તુમકો દેખા તો એક ખયાલ આયા  
તુમ્હારી સહેલી કો દેખા તો દુસરા ખયાલ આયા!!

ના વો ઇનકાર કરતી હે,  
ના વો ઈંકાર કરી હે,  
કમબખ્ત મેરે સપનોમે આકર,  
મેરે દોસ્ત સે ખ્યાર કરતી હે!!

જબ જબ ગીરે બાદલ,તેરી યાદ આઈ,  
ઝૂમ કે બરસા સાવન,તેરી યાદ આઈ

ભીગા મેં, લેકિન ફિર ભી તેરી યાદ આઈ,  
કયો ન આચે તેરી યાદ?  
તુને જો છત્રી અબતક નાં લૌટાઈ!!

ઉનકી ગલી કે ચક્કર કાટ કાટકર,  
કુત્તે ભી હમારે યાર હો ગયે,  
વો તો હમારે હો ન સકે,  
હમ તો કુત્તો કે સરદાર હો ગયે!!

હસીન તુમ હો તો બુરે હમ ભી નહિ,  
મહેલોમે તુમ હો તો, સડકપર હમભી નહિ,  
પ્યાર કર કે કહેતે હો, શાદીશુદા હો,  
કાન ખોલકર સુન લો, કુંવારે હમ ભી નહિ!!

મચ્છરને કાટા, દિલ મેં મેરે ઝુનુન થા!  
ખુજલી હુઈ ઇતની, દિલ બેકસુર થા!  
ઉસે પકડા ઓર છોડદિયા યે સોચકરકી,  
સાલેકી રગોમે, અપના હી તો ખૂન થા!!

આજ દીદાર,કલ યાર,પરસો પ્યાર,  
ફિર એકરાર, ફિર ઇન્તેઝાર,ફિર તકરાર,  
ફિર દરાર,સારી મહેનત બેકાર,  
ઓર આખિર મેં એક ઓર દેવદાસ ઇન બીચરબાર!!

તેરે દરપે સનમ હઝાર બાર આયેંગે,  
તેરે દરપે સનમ હઝાર બાર આયેંગે,  
ઘંટી બજાયેંગે, ઔર ભાગ જાયેંગે!!

દુનિયામે બેવફાઓકી કમી નહિ હે  
અબ સુરજ કો હી દેખ લો  
આતા હે ઉષા કે સાથ,  
રહેતા હે કિરણ કે સાથ,  
ઔર જાતાહે સંધ્યા કે સાથ.

મન મુકી તારા પર વરસવાનું મન થાય..  
ભીંજવી તને ખુદ ભીંજવાનું મન થાય..  
હાથમાં રાખી હાથ નજીક બેસવાનું મન થાય..  
ને તારા જ સ્પર્શ થકી મહેવાનું મન થાય..  
તારા જ રંગે રંગાવાનું મન થાય..  
ને પછી,તારામાં જ ભળી જવાનું મન થાય..  
ફક્ત તને એક ને જ પામવાનું મન થાય..  
ને માઠુ તારે કારણે જ મને જીવવાનું મન થાય..  
-ફેસબૂકમાંથી

આજે પાછા એ યાદ આવી રહ્યા છે,  
રહી રહી ને મને સતાવી રહ્યા છે,  
કહેતા હતા એ મને હસતા રહેજો તમે,  
પણ પોતે જ એમની યાદ થી રડાવી રહ્યા છે.  
-ફેસબૂકમાંથી

એવું નથી કે એ છુપાવવા ની ક્ષમતા નથી,  
પણ દિલ માં જ રહે એ દર્દ ગમતા નથી....  
એવું કરીશું તો કદાચ ખુદા બની જઈશું,  
પણ સમય ને માન આપી અમે હસતા નથી....

બની શકે કે મારી ગઝલો પણ નિષ્ફળ રહે,  
જે વીતી ગયું છે એ બધું અમે લખતા નથી....  
મૌન ને જ અંતિમ પડાવ માની લીધો છે,  
એ કંઈ કહેતા નથી, કે અમે કંઈ પૂછતા નથી.....!!!! -ફેસબૂકમાંથી...

ના કોઈ કોઈક ના થી દૂર હોય છે,  
ના કોઈ કોઈક ની નજીક હોય છે,  
ઝીંદગી પોતે જ નજીક લાવી દે છે,  
જ્યારે કોઈ કોઈક ના નસીબ માં હોય છે - ફેસબૂકમાંથી  
સરવાળા ની અપેક્ષા એ પ્રેમ નાં થાય,  
ગુણાકાર ની લાલચે પણ પ્રેમ નાં થાય,  
બાદબાકી ની તૈયારી હોય તો અને  
ભાગાકાર નો સહેજ પણ ડર નાં હોય તો જ પ્રેમ થાય - ફેસબૂકમાંથી

ગુસ્સે થયા જો લોક તો પથ્થર સુધી ગયા,  
પણ દોસ્તો ના હાથ તો ખંજર સુધી ગયા.  
દોસ્ત અમારે તો નિભાવવીતી દોસ્તી,  
ને એટલે તો દુશ્મનો ના ઘર સુધી ગયા.  
-ફેસબૂકમાંથી

હિંમત કરીને હા પડી છે હવે નિભાવજો,  
દુનિયાના મોઢા નીચા કરીને દેખાડજો,  
સર્વસ્વ તમને સોંપી દીધું હવે નિરાંત છે,  
યોગ્ય લાગે તો મને છાતી સરસી ચાંપજો.

-પ્રેમપત્રોની શાયરીમાંથી

આશાઓ પર પાણી ફરી જતાં વાર નથી લાગતી  
કિનારે આવી ડૂબી જતાં વાર નથી લાગતી  
જીતનો જલસો માનવાની ઉતાવળ ન કર  
જીતેલી બાજી હારી જવામાં વાર નથી લાગતી  
તારી ઊંચાઇનું નાહક અભિમાન ન કર  
કે મિનારોને તૂટી જવામાં વાર નથી લાગતી  
બાંધ્યો છે માળો તો જરા દિલથી જતન કર  
કે માળાને પીંખાઇ જતાં વાર નથી લાગતી  
માણી લે હર એક પળ તું આજે  
આંખોને મિંચાઇ જતાં વાર નથી લાગતી  
વસ્ત્રો થઇ ગયાં ટૂંકા, લાજ ક્યાંથી હોય?  
અનાજ થઇ ગયાં હાઇબ્રીડ, સ્વાદ ક્યાંથી હોય?  
નેતા થયાં ખુરશીના, દેશદાઝ ક્યાંથી હોય?  
કુલો થયાં પ્લાસ્ટીકના, સુગંધ ક્યાંથી હોય?  
ચહેરા થયાં મેક-અપના, રૂપ ક્યાંથી હોય?  
શિક્ષકો થયાં ટ્યુશનીયા, વિદ્યા ક્યાંથી હોય?  
ભોજન થયાં ડાલ્ડાના, તાકાત ક્યાંથી હોય?  
માણસ થઇ ગયો પૈસાનો, દયા ક્યાંથી હોય?  
ભક્તો થયા સ્વાર્થના, ભગવાન ક્યાંથી હોય?  
શરીર થયું સ્વાર્થી, આત્મા ક્યાંથી હોય?

जब जिन्दगीको समझा तो जिन्दगीसे दुर थे हम  
मरना चाहा पर जीनेको बेवजह मजबुर थे हम  
हर सजा बीना आवाज कबुलकी हमने सरझुकाकर  
कसुर सिर्फ इतनाथाकी बस बकसुरथे हम!

જિંદગી હસતા મૂકી દે છે,  
જિંદગી રડતા મૂકી દે છે,  
નથી પૂર્ણવિરામ દુઃખમાં,  
નથી પૂર્ણવિરામ સુખમાં,  
બસ જ્યાં મજા આવે ત્યાં,  
જિંદગી  
'અલ્પવિરામ મૂકી દે છે..'  
- અજ્ઞાત

જયારે કંઈ બૂરું કરવું હોય ત્યારે જ તાકાતની જરૂર હોય છે  
નહીં તો, દુનીયામાં બધું જ પામવા માટે પ્રેમ કાફી છે.

"ये तेरी बेरूखी की हम से आदत खास टूटेगी ,  
कोई दरिया न ये समझे कि मेरी प्यास टूटेगी ,  
तेरे वादे का तू जाने मेरा वो ही इरादा है ,  
कि जिस दिन साँस टूटेगी उसी दिन आस टूटेगी.....!"

ફેસમાં તમે સારા લાગો છો,  
પંજાબીમાં તમે પ્યારા લાગો છો,  
સાડીમાં કોઈ દી તમને જોયા નથી

માટે તમે કુંવારા લાગો છો!

જીવનમાં જશ નથી, પ્રેમમાં રસ નથી,  
ધંધામાં કસ નથી, જાવું છે સ્વર્ગમાં  
પણ એની કોઈ બસ નથી!

દિલના દર્દોને પીનારા શું જાણે?  
પ્રેમના રિવાજોને જમાનો શું જાણે?  
છે કેટલી તકલીફ કબરમાં,  
તે ઉપરથી ફૂલ મુકનારો શું જાણે?

જિંદગીને જીવવાની ફિલસુફી સમજી લીધી,  
જે ખુશી આવી જીવનમાં, આખરી સમજી લીધી!

શું કહું ફરિયાદ તારી,  
ફરિયાદમાં યાદ છે ફરી ફરી તારી  
એજ મારી ફરિયાદ છે!

રૂબતા જીવનના તમે શ્વાસ છો!  
કહું કેમ કે તમે કંઈક ખાસ છો!

લોકો કહે છે કે હસ્યા તેના ઘર વસ્યા,  
પરંતુ એ કોણ જાણે છે કે,  
ઘર વસ્યા પછી કેટલા હસ્યા?